श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 253, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 09 अक्टूबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।
क्रियायोग
हं क्ष
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

कभी आईटी था प्राइम सेक्टर अब नर्सिंग व पैरामेडिकल का समय : मुख्यमंत्री योगी

'नर्सिंग व पैरामेडिकल सेक्टर का होगा कायाकल्प'

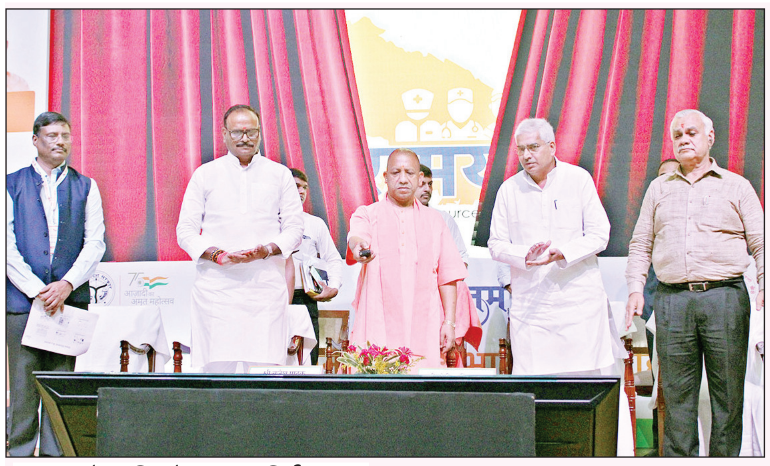

उप्र में मिलेगा नर्सिंग व पैरामेडिकल का सबसे अच्छा प्रशिक्षण

प्रदेश के 12 बेहतरीन संस्थान मेंटॉर के रूप में चयनित, औरों को देंगे मार्गदर्शन

स्कूलों में मिलेगी पैरामेडिकल की जानकारी, चिकित्सा शिक्षा-माध्यमिक शिक्षा के बीच हुआ करार

लखनऊः स्वास्थ्य और चिकित्सा तंत्र के साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अब नर्सिंग और पैरामेडिकल सेक्टर में व्यापक सुधार के लिए मिशन निरामयाः की शुरूआत की है। शनिवार को एसजीपीजीआई लखनऊ के परिसर में नए अभियान का औपचारिक शुभारंभ करते हुए मुख्यमंत्री योगी ने नर्सिंग और पैरामेडिकल को चिकित्सा व्यवस्था की रीढ़ करार दिया और कहा कि 90 के दशक में कॅरियर के लिहाज से अगर आईटी सेक्टर सबसे प्राइम माना जाता था तो आज के दौर में नर्सिंग और पैरामेडिकल क्षेत्र शानदार अवसरों से भरा है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि नर्सिंग और पैरामेडिकल एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी आवश्यकता जन्म से लेकर मृत्यु तक हमेशा होती है। यही नहीं महिलाओं के लिए तो यह सेक्टर सुरक्षा, सम्मान और स्वावलम्बन का शानदार उदाहरण है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी भी सभ्य समाज की तरक्की के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा तंत्र का मजबूत होना सबसे अहम है। लेकिन दशकों इन क्षेत्रों को उपेक्षित रखा गया। नर्सिंग जैसा क्षेत्र, जिसके बिना बेहतर चिकित्सा संभव ही नहीं, उसमें समय के साथ सुधार की कोशिशें नहीं हुईं। लेकिन अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रदेश सरकार इस सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में बहुआयामी सुधार के लिए शिमशन निरामयाःश की शुरूआत कर रही है। उन्होंने कहा कि यह मिशन एक ओर जहां प्रदेश में संस्थानों और सीटों की वृद्धि में सहायक होगा, वहीं संस्थाओं के गुणवत्ता सुधार और प्रशिक्षण के बाद युवाओं के सेवायोजन के लिए जरूरी प्रयास किए जाएंगे। मिशन निरामयाः के लिए चिकित्सा शिक्षा विभाग को शुभकामनाएं देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मिशन के पहले चरण में हमारा लक्ष्य नर्सिंग व पैरामेडिकल स्टाफ की संख्या राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप करने की होगी, जबकि अगले चरण में इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों के अनुरूप बनाया जाएगा।

विशेष मौके पर प्रशिक्षण के बाद युवाओं के सेवायोजन के लिए 05 प्रशिक्षण संस्थानों और 05 प्रतिष्ठित अस्पतालों के बीच एमओयू भी हुआ।

'गुणवत्ता सुधार के लिए मेंटॉर नियुक्त'

संस्थानों के गुणवत्ता सुधार की जरूरत पर बल देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण के होने का ही परिणाम रहा कि नर्सिंग स्टाफ के लिए राज्य सरकार ने 4700 पदों पर भर्ती आयोजित की, तो आवेदन आये एक लाख दो हजार लेकिन पास हुए केवल तीन फीसदी अभ्यर्थी। सुधार के लिए समय के अनुरूप बदलने की कोशिश नहीं हुई, नतीजतन, कभी विश्वगुरु रहा देश दूसरे देशों की नकल को मजबूर हो गया। लेकिन प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में

2017 के बाद प्रदेश में स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा तंत्र को मजबूत बनाने का कार्यक्रम शुरू हुआ, यह मिशन निरामयाः उसी कड़ी का एक हिस्सा है।

'12 संस्थानों का चयन कर उन्हें मेंटॉर बनाया जा रहा'

सीएम ने कहा कि हमारे बहुत से संस्थान अच्छा काम कर रहे हैं, ऐसे 12 संस्थानों का चयन कर उन्हें मेंटॉर बनाया जा रहा है। यह संस्थान अन्य नर्सिंग कॉलेजों को बेहतर होने के लिए मार्गदर्शन कराएंगे। यही नहीं, संस्थानों की रेटिंग के लिए क्वालिटी कंट्रोल ऑफ इंडिया से करार हुआ है। हर संस्थान की गुणवत्ता का प्रमाणन कराया जाएगा। उत्तर प्रदेश में सबसे अच्छी पैरामेडिकल व नर्सिंग की ट्रेनिंग मिलेगी। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने परीक्षा नियंत्रण कक्ष का लोकार्पण भी किया और कहा कि नए संस्थानों की मान्यता की प्रक्रिया सरल की गई है और मानक पूरा करने वाले हर संस्थान को आसान प्रक्रिया से मान्यता दी जाएगी।

कांग्रेस ने असम को आतंकवाद की भूमि बनाया था: शाह

गुवाहाटीः केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह तीन दिन के असम दौरे पर हैं। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा भी उनके साथ हैं। आज शनिवार को दूसरे दिन उन्होंने गुवाहाटी में बीजेपी के नए कार्यालय का उद्घाटन किया। इसके बाद शाह ने जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि असम की भूमि को कांग्रेस ने कई साल तक आतंकवाद, विघटन, आंदोलन और हड़ताल की भूमि बना दिया था। शाह ने कहा कि यहां पर ना विकास हो रहा था, ना शिक्षा हो रही थी, ना शांति थी। आज मुझे खुशी है कि 2014 से पूरा नॉर्थ ईस्ट विकास के रास्ते पर चल पड़ा है। शाह ने कहा- मैं गृहमंत्री नहीं भाजपा के एक कार्यकर्ता के तौर पर असम आया हूं। मैं यहां विद्यार्थी परिषद के कार्यक्रम में आया था, तब हमें हितेश्वर सैकिया (असम के पूर्व सीएम) ने बहुत मारा था। हम नारे लगाते थे असम की गलियां सूनी है इंदिरा गांधी खूनी है। उस वक्त कल्पना नहीं थी कि भाजपा 2 बार जीतकर यहां सरकार बनाएगी।

नड्डा बोले- आज असम शांतिप्रिय और विकासशील प्रदेश हैः भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा ने कहा कि एक समय में यह राज्य बंद से जाना जाता था। आज यह शांतिप्रिय और विकासशील प्रदेश है। यह नेतृत्व के अंतर के कारण हुआ है। एक समय ये राज्य जो 4 देशों से घिरा हुआ था, मुसीबत में पड़ा था। देश का नेतृत्व कमजोर था। लेकिन आज यही नॉर्थ-ईस्ट, यही असम मुख्य धारा में शामिल है और विकास की प्रक्रिया में मुख्य रूप से आगे बढ़ कर आ रहा है।

बस में आग लगने से 12 जिंदा जले, 38 जख्मी

नासिकः महाराष्ट्र के नासिक में शनिवार सुबह एक भीषण हादसा हो गया। बस और आयशर ट्रक के बीच टक्कर से बस के अगले हिस्से में आग लग गई। देखते ही देखते 20 मिनट में बस धू-धूकर जल गई। हादसे में बस में सवार 12 लोग जिंदा जल गए। इनके अलावा, 38 यात्री जख्मी हुए हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि मरने वालों का आंकड़ा बढ़ सकता है। ज्यादातर लोगों ने बस से कूदकर जान बचाई। हादसा नासिक-औरंगाबाद रूट पर नंदूरनाका के पास हुआ। बस यवतमाल से मुंबई जा रही थी।

हिंदू धर्म को पागलपन मानता हूं...

गुजरात में पोस्टर पर लिखा, केजरीवाल को मुस्लिम टोपी पहनाई

अहमदाबादः गुजरात के अहमदाबाद, सूरत और राजकोट की सड़कों पर शनिवार को हिंदू विरोधी नारों के साथ पोस्टर दिखाई दिए। इन पोस्टर्स में अरविंद केजरीवाल को मुस्लिम टोपी पहने दिखाया गया है। एक पोस्टर में लिखा है- मैं हिंदू धर्म को पागलपन मानता हूं। वहीं दूसरे पोस्टर में लिखा है- मैं ब्रह्मा, विष्णु, महेश और कृष्ण को ईश्वर नहीं मानता। इन पोस्टर्स को दिल्ली की आप सरकार के मंत्री राजेंद्र पाल गौतम के धर्म परिवर्तन पर दिए गए बयान का विरोध बताया जा रहा है। राजेंद्र पाल गौतम पर आरोप है कि उन्होंने दिल्ली में बौद्ध धर्म के दीक्षा कार्यक्रम में हिंदू देवी-देवताओं को नहीं मानने की शपथ दिलाई थी। दीक्षा कार्यक्रम बुधवार को जय भीम मिशन ने आयोजित किया था, जिसमें 10 हजार से ज्यादा लोग आए थे। शुक्रवार को नॉर्थ-ईस्ट दिल्ली से भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने मंत्री राजेंद्र पाल का वीडियो शेयर किया था, इसके बाद से मामला विवादित हो गया। गुजरात के बड़े शहरों में ऐसे पोस्टर्स किसने लगाए, इसका पता नहीं चल पाया है। हालांकि, बाद में राजकोट से पोस्टर हटा दिए गए। अब तक आप गुजरात में जोरदार तरीके से चुनावी अभियान चला रही थी। इस दौरान इन पोस्टर को लेकर सियासी जंग शुरू हो गई है। राजकोट में पोस्टर्स में लिखा 'मैं हिंदू धर्म को पागलपन मानता हूं'। हालांकि यहां पर बाद में आप कार्यकर्ताओं ने पोस्टर्स हटा दिए।

चुनाव चिह्न पर दावे को लेकर उद्धव गुट ने दाखिल किया

नई दिल्लीः शिवसेना के उद्धव ठाकरे गुट ने शनिवार को दिल्ली में चुनाव आयोग कार्यालय में धनुष और तीर चुनाव चिह्न पर दावा पेश करने के साथ अपना जवाब दाखिल किया। वकील सन्नी जैन ने उद्धव गुट की ओर से जवाब दाखिल किया। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि कल हमने अपना प्रारंभिक जवाब दाखिल किया था। आज भी हमने जवाब दाखिल किया है। हमने अपने राष्ट्रीय कार्यकारियों के हलफनामे जमा कर दिए हैं और 2.5 लाख से अधिक हलफनामे नियत समय में जमा किए जाएंगे। 10-15 लाख प्राथमिक सदस्यता फॉर्म भी जमा किए जाएंगे। हलफनामा और अन्य चीजें जमा करने के लिए चार सप्ताह का समय मांगा गया है। चुनाव आयोग ने एकनाथ शिंदे गुट की ओर से शिवसेना के धनुष और तीर चुनाव चिह्न पर अपना दावा पेश करने के बाद शिवसेना के उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाले गुट को शनिवार दोपहर तक जवाब दाखिल करने को कहा था।

उल्लेखनीय है कि अंधेरी पूर्व निर्वाचन क्षेत्र में आगामी उपचुनाव के मद्देनजर शिंदे खेमे ने चुनाव चिह्न आवंटन की मांग की थी।

अडानी के साथ गहलोत के मंच साझा करने पर राहुल ने दी सफाई

'कारोबारी के खिलाफ नहीं, मोनोपॉली का विरोध'

नई दिल्लीः कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी की ओर से लगातार उद्योगपतियों खासकर गौतम अडानी को निशाना बनाया जा रहा है। कल राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और गौतम अडानी ने एकसाथ मंच साझा किया था। इसको लेकर अब पार्टी नेता राहुल गांधी और जयराम रमेश दोनों की ओर से स्पष्टीकरण आया है। उनका कहना है कि वे एक खास उद्योगपति को लाभ पहुंचाने के लिए लाई जा रही नीतियों के खिलाफ है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आज कर्नाटक में भारत

जोड़ो यात्रा के दौरान एक सवाल के जवाब में कहा कि राजस्थान सरकार ने अडानी को कोई विशेष तरजीह नहीं दी है। उन्होंने कहा कि वे किसी उद्योगपति के खिलाफ नहीं हैं। वे एकाधिकार के विरोधी हैं। अगर राजस्थान सरकार अडानी को गलत तरीके से बिजनेस देती है तो वे उसका भी विरोध करेंगे। वहीं कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि अडानी के साथ अशोक गहलोत की मुलाकात को लेकर काफी मीडिया हाइप बनाया जा रहा है। अडानी राजस्थान में करीब 60 हजार करोड़ रुपये का निवेश करना चाहते हैं। कोई मुख्यमंत्री नहीं कहेगा कि निवेश मत करो। राजस्थान सरकार द्वारा अदानी के लिए कोई विशेष नियम या नीतियां नहीं हैं। गहलोत मोदी किस्म के क्रोनिज्म के बहुत खिलाफ हैं।

21 साल से पहले हो रही आधी से ज्यादा लड़कियों की शादी; गृह मंत्रालय ने जारी किए आंकड़े

बाल विवाह के लिए बदनाम हुए झारखंड-बंगाल

नई दिल्लीः पश्चिम बंगाल और झारखंड देश के दो ऐसे राज्य हैं जहां आधी से ज्यादा लड़कियों की शादी 21 साल की उम्र से पहले कर दी जाती है। इसका खुलासा केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से जारी लेटेस्ट डेमोग्राफिक सैंपल सर्वे की रिपोर्ट में हुआ है। सर्वे के अनुसार, राष्ट्रीय स्तर पर 29.5% लड़कियों की शादी 21 साल की उम्र से पहले हो जाती है। पश्चिम बंगाल में जहां इसकी परसेंटेज 54.9 है, वहीं, वहीं झारखंड में यह आंकड़ा 54.6% है। सर्वे 2020 में किया गया था और रिपोर्ट पिछले महीने के अंत में प्रकाशित हुई थी।

18 साल से पहले शादी करने के मामले में झारखंड अव्वलः गृह मंत्रालय के रजिस्ट्रार जनरल और सेंसस कमिश्नरेट की ओर से किए गए हालिया सर्वे में बताया गया है कि राष्ट्रीय स्तर पर 18 साल से पहले प्रभावी ढंग से शादी करने वाली लड़कियों की परसेंटेज 1.9 है। केरल में सबसे कम 0% और झारखंड में सबसे ज्यादा 5.8% है। झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह का परसेंटेज 7.3 और शहरी क्षेत्रों में 3% है।

झारखंड में जादू टोने के आरोप में मारे गए लोगः इस बीच, झारखंड को लेकर राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की भी रिपोर्ट सामने आई है। इसके अनुसार, 2015 में झारखंड में जादू टोना करने के आरोप में 32 लोग मारे गए थे। 2016 में 27, 2017 में 19, 2018 में 18 और 2019 और 2020 में 15-15 लोग मारे गए थे।

झारखंड में लड़कियों से बर्बरता के दो मामलेः झारखंड हाल ही में उस समय सुर्खियों में आया था जब एक नाबालिग लड़की को एक व्यक्ति के प्रपोजल को ठुकराने के बाद आग लगा दी गई थी।

9 की जान ले चुका बगहा का बाघ मारा गया

बगहा (वाल्मीकिनगर): बिहार के बगहा में 9 महीनों में 9 लोगों की जान लेने वाले बाघ को शूटर्स ने ढेर कर दिया गया। उसकी 26 दिन से तलाश हो रही थी। शनिवार को उसे गोवर्धन थाना इलाके के बलुआ गांव के खेत में घेरा गया। इसके बाद शूटर्स ने उसे 4 गोलियां मारीं। उधर से बाघ के दहाड़ सुनाई दी। इसके बाद टीम 3 ओर से खेत में दाखिल हुई। वाल्मीकि टाइगर रिजर्व के इस बाघ ने शनिवार को भी मां-बेटे की जान ली। बीते 3 दिनों में इस बाघ के हमले में 4 लोगों की मौत हो गई।

पैरों के निशान से टीम ने बाघ को खेत में घेराः बाघ के पैरों के निशान के बाद एक्सपर्ट की टीम को यह यकीन हो गया कि वो गन्ने के खेत में छिपा है। इसके बाद उस खेत की चारों ओर से जाल के माध्यम से घेराबंदी की गई। इसके बाद राइफल से लैस टीम हाथी पर सवार होकर गन्ने के खेत के अंदर गई। वहां पहुंचते ही बाघ पर टीम की नजर गई और उस पर फायरिंग की गई। टीम ने बाघ को 4 गोली मारी।

खबर संक्षेप

श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण पान कर भाव विभोर हुए ग्रामीण

बारा। बारा तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत भेलाव में चल रहे श्रीमद् भागवत कथा के आज दूसरे दिन कथावाचक ज्योतिष मार्तंड भागवत भूषण ब्रह्मर्षि उपेंद्र जी महाराज उपेंद्र जी महाराज के द्वारा आज नारद के द्वारा तीर्थ भ्रमण व उनकी महिमा एवं नारद भक्ति संवाद का व्याख्यान सुनाया गया जिसको सुनकर ग्रामीण भाव विभोर हो गए कथा की मुख्य यजमान श्रीमती जय पत्ती देवी पांडे पत्नी स्वर्गीय भगवान प्रसाद पांडे ने समस्त श्रोताओं को धन्यवाद दिया और कथा ने आने की विनती की।

खूबसूरत यादों के साथ विदा हुआ ऐतिहासिक दशहरा मेला

तीन दिवसीय मेले के आखिरी दिन देर रात तक निकली आकर्षक चौकियों ने सभी का मोहा मन

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। रीवां और चित्रकूट जनपद की सीमा पर लगने वाला तीन दिवसीय शंकरगढ़ का ऐतिहासिक मेला शनिवार की सुबह समाप्त हो गया। मेले के तीसरे दिन रात में विभिन्न प्रकार की आकर्षक, रंग-बिरंगी विद्युत झालरों से सजी चौकियां निकाली गईं। कोरोना काल के दो वर्ष के अंतराल पर हुए इस आयोजन के तीसरे दिन मेले में तिल रखने की भी जगह नहीं रही। रातभर लोग एक पांव पर खड़े रहे। दुल्हन की तरह सजे शंकरगढ़ में निकलने वाली चौकियों को देखने के लिए स्थानीय निवासी भी अपने मकान के छज्जों पर जमा रहे और जयश्रीराम का उद्घोष किया। चौकियों पर पुष्पवर्षा की।

पहले दिन बरसात की वजह से हुई अव्यवस्थाओं को छोड़ दें तो दूसरे और तीसरे दिन मेला पूरी रंगत में नजर आया। क्षेत्रीय लोगों के अलावा मेले का लुत्फ उठाने के लिए कस्बे के लोग भी घरों से बाहर निकले और रातभर मेला क्षेत्र में भ्रमण कर मेले के अलग-अलग रंगों को अपनी यादों में कैद किया। बच्चों ने झूले का आनंद लिया तो रोजमर्रा की जरूरतों वाली दुकानों पर महिलाओं और पुरुषों की अच्छी-खासी भीड़ देखी गई। मेले में समीपवर्ती जनपद चित्रकूट के अलावा मध्य प्रदेश के रीवां जनपद के समीपवर्ती दर्जनों गांवों के लोगों ने भी इस मेला का लुत्फ उठाया। मेले के आखिरी दिन देर रात निकली आकर्षक चौकियों और झांकियों को देखने के लिए हजारों लोगों की भीड़ सदर बाजार में जमा रही। कान्हा आर्ट ग्रुप, बाल नवयुवक भगवा कमेटी पुरानी बाजार, महाकाल ग्रुप लाइनपार और मेला आयोजन कमेटी की तरफ से एक दर्जन से अधिक झांकियां निकाली गईं। पवन पुत्र हनुमान, राधा कृष्ण, माँ काली समेत विभिन्न देवताओं और ऋषियों के जीवन पर आधारित झांकियां जब सदर बाजार मोहल्ले के मार्गों से गुजरीं तो घरों में मौजूद लोग भी छज्जे पर आ गए और न सिर्फ झांकियों पर पुष्पवर्षा की, बल्कि जयश्रीराम का उद्घोष भी किया।कई सालों के बाद बाजार में सजी बेहतरीन लाइटिंग और सांस्कृतिक कार्यक्रम को कराने में पूरे बाजार का भरपूर समर्थन मिला। बड़े, बूढ़े, बच्चों सहित व्यापार मंडल, रायल युवा संगठन सभी के सहयोग से शंकरगढ़ का ऐतिहासिक दशहरा मेला सकुशल संपन्न हुआ।

स्थलीय निरीक्षण करने के बाद ही करें निस्तारण : योगेंद्र सिंह

थाना समाधान दिवस कोरांव में एडीएम ने सुनीं शिकायतें

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। शनिवार को थाना कोरांव में एसडीएम योगेंद्र सिंह की अध्यक्षता में थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जहाँ थाना प्रभारी धीरेंद्र सिंह की नामौजूदगी में वरिष्ठ उपनिरीक्षक अवधेश यादव व बृजेश कुमार तिवारी उपस्थिति में थाना समाधान दिवस में आए हुए फरियादियों की शिकायतें एसडीएम योगेंद्र सिंह ने सुनते हुए स्थलीय जांच के बाद ही जमीनी विवाद से जुड़े मामलों का निस्तारण करने का निर्देश दिया है। थाना समाधान दिवस पर शनिवार को लगभग आधा दर्जन लोगों ने एसडीएम योगेंद्र सिंह व कोरांव पुलिस के समक्ष अपनी समस्याओं को रखा। एसडीएम व पुलिस द्वारा आए हुए सभी फरियादियों की समस्या को गंभीरता से लेते हुए सुना गया और मामलों को लेकर पूरी सजगता बरती गई। इस दौरान उप जिलाधिकारी योगेंद्र सिंह ने पुलिस को निर्देशित करते हुए कहा कि राजस्व से जुड़ी सभी शिकायतों में टीम गठित कर स्थलीय जांच करते हुए पारदर्शिता पूर्वक शिकायतों का निस्तारण किया जाए। कहा कि शिकायतों की निष्पक्ष जांच के सापेक्ष कार्यवाहियों से अपराधों का ग्राफ घटता है और लोगों को अपेक्षित न्याय मिलता है। इतना ही नहीं उन्होंने कहा कि शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की उदासीनता क्षम्य नहीं होगी। फिलहाल थाना समाधान दिवस में अपनी शिकायत दर्ज कराने पहुंचे इलाकाई लोगों में पुलिस प्रशासन के प्रति भरोसा देखा गया जो न्याय की आस के साथ शिकायत दर्ज कराकर अपने घर वापस लौटे। इस अवसर पर उक्त के अलावा तमाम पुलिस कर्मी राजस्व विभाग के कर्मचारी समेत इलाकाई फरियादी मौजूद रहे।

लंबित मामले को समय से ना निपटाने पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने एसओ व हेडमोर्रिर को लगाई फटकार

लालापुर। लालापुर थाने में आयोजित समाधान दिवस पर शनिवार के अचानक एसएसपी प्रयागराज शैलेश कुमार पांडेय पहुंच गए। एसएसपी के पहुंचते ही पुलिस कर्मियों में हड़कम्प मच गया। इस बीच एसएसपी ने कार्य में लापरवाही बरतने पर एसओ समेत हेड मोहर्रिर को फटकार लगाई। लालापुर थाने में शनिवार के दिन समाधान दिवस चल रहा था कि अचानक दोपहर के एसएसपी प्रयागराज शैलेश कुमार पांडेय समाधान दिवस कार्यक्रम में पहुंच गए। एसएसपी के पहुंचते ही पुलिस कर्मियों में हड़कम्प मच गया। इस बीच एसएसपी ने पहुंचे फरियादियों से बातचीत शुरू की तो अचानक एक राजस्व का पुराना मामला लंबित मिल गया। राजस्व का मामला काफी दिनों से लंबित देख एसएसपी ने एसओ शेर सिंह यादव से पूंछ तांछ शुरू किया तो इसी बीच एसओ का बचाव करते हेडमोर्रिर मामले में दखल देना शुरू किया तो एसएसपी ने जमकर फटकार लगाई। इस बीच एसएसपी ने थाने का निरीक्षण करते हुए थाने के अन्य अभिलेखों की भी जांच पड़ताल की। एसओ व हेडमोर्रिर की प्रारंभिक जांच कराने की भी बात कही।

पूर्व आईजी राजेश पांडेय घर पहुंच एसएसपी ने किया हवन

लालापुर। एसएसपी प्रयागराज लालापुर थाने का निरीक्षण करने के बाद लालापुर निवासी पूर्व आईजी राजेश कुमार पांडेय के घर आयोजित रामचरित मानस पाठ के आयोजन में पहुंच कार्यक्रम समापन के समय चल रहे यज्ञ में हवन भी किया।

मोहन लाल विश्वकर्मा

गैंगेस्टर के मामले में वांछित चढ़ा पुलिस के हत्थे

झूंसी। स्थानीय पुलिस ने शनिवार को एक वांछित को धर दबोचा और जेल भेज दिया। झूंसी इंस्पेक्टर वैभव सिंह ने मुखबिर की सूचना पर गैंगेस्टर के मामले में वांछित चल रहे भदोही सुरियावां थाना विसौली कृपालपुर सागरपुर निवासी मोहन लाल विश्वकर्मा पुत्र मेवा लाल को अंदावा से गिरफ्तार कर लिया जिसे पुलिस ने जेल भेज दिया।

शिव धनुष खंडन होते परशुराम हुये क्रोधित

नैनी। श्रीराम रामलीला के चौथे दिन शनिवार को सीता विवाह, परशुराम व लक्ष्मण संवाद का आयोजन किया गया। श्री राम रामलीला मे शिव जी का धनुष श्री राम जी द्वारा तोड़ने पर परशुराम क्रोधित हुये और तपस्या छोड़कर सीधा राजा जनक के महल मे ग्रहस्ते हुये आये। उनको क्रोधित देखकर लक्ष्मण भी क्रोध मे आ गये और उनसे वातार्लाप मे बहस करते हुये और क्रोधित कर दिया। तब परशुराम ने क्रोध मे आकर पूछा ऐ बालक आप है कौन। तब श्री राम चन्द्र जी ने लक्ष्मण को रोकते हुये अपना परिचय दिया। यह दृश्य देखकर रामलीला देखकर रहे दर्शक ने तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। श्री राम रामलीला मे बब्लू तिवारी, धर्मेंद यादव, श्री निवासी, गंगाधर, सुबोध शर्मा, राघू तिवारी, आजाद, सीट्टू मिश्रा आदि लोग मौजूद रहे।

लक्ष्मण को लगी शक्ति, शोक में डूबी वानर सेना

जारी। क्षेत्र के जारी कस्बे में हो रहे आदर्श रामलीला कमेटी द्वारा मंचन में लक्ष्मण शक्ति मेघनाथ वध की लीला का मंचन हुआ। जिसे देखकर उपस्थित श्रद्धालु झूम उठे। मेघनाद-कुंभकर्ण वध के बाद रामलीला मैदान श्रीराम के जयकारों से गूंज उठा। मंचन में रावण अपने पुत्र मेघनाद को युद्ध के लिए भेजता है। मेघनाद लक्ष्मण के बीच भीषण युद्ध में मेघनाद द्वारा लक्ष्मण पर ब्रह्मशक्ति बाण के प्रहार से लक्ष्मण मुर्छित होकर गिर पड़े। विभीषण के कहने पर हनुमान लंका से वैध को लेकर आते हैं और वैध के कहने पर संजीवनी बूटी लाने के लिए निकल जाते हैं। संजीवनी बूटी लाने के बाद वैधराज ने जब बूटी पिलाई तो लक्ष्मण की मूर्छा समाप्त हो जाती हैं। इसके बाद लक्ष्मण युद्ध में मेघनाद का वध कर देते हैं। मेघनाद के पश्चात कुंभकर्ण युद्ध करने आता हैं। प्रभू श्री राम उसका वध कर देते हैं। कलाकारों ने मनोहारी ढंग से मंचन किया। इस अवसर पर राम सजीवन भूतपूर्व प्रधान, रंजीत मोदनवाल प्रधान पति , छोटे लाल मोदनवाल , शिव बाबू अग्रहरी ,संतोष जायसवाल, दिलीप केसरवानी, प्रांशु केसरवानी, मुरारी केसरवानी, राजाराम कौशल, रामदास अग्रहरी, मोतीलाल कुरील प्रधान पति, सहित नगरवासियों ने लीला का आनंद उठाया।

लोहगरा बाजार में मनाया गया दशहरा, उमड़ी भीड़

बारा। बारा तहसील क्षेत्र के लोहगरा बाजार में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दशहरे के अवसर पर शनिवार के दिन विशाल मेले का आयोजन किया गया पूरे बाजार में मिठाई खिलौने जलेबियां आदि की दुकानें सजी रही मेले में आसपास के गांवों के लोग घूमने के लिए आए मेले के बाद मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की झांकी निकाली जाएगी सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर बारा थाने की फोर्स के अलावा अन्य थानों की भी पुलिस मौजूद रही।

सजा दो घर को गुलशन सा, अवध में राम आए हैं

जंघई। आदर्श रामलीला समिति अनुवां रामलीला महोत्सव के अंतिम दिन रामलीला पंडाल में भगवान श्रीराम के अयोध्या वापसी के साथ भरत मिलाप की लीला का मंचन किया गया और राज्याभिषेक हुआ। भगवान श्रीराम संग माता सीता राजगद्दी पर विराजमान हुई लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान जी सहित पूरी अयोध्या में खुशी मनाई गई इसके बाद लवकुश लीला का मंचन किया गया। दूसरे प्रसंग में श्रीराम लक्ष्मण से मां सीता को वन भेजने को कहते हैं भगवान राम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण सीता जी को बाल्मीकि आश्रम छोड़ आते हैं। वहीं अश्वमेघ यज्ञ में सफेद घोड़े को छोड़ने के बाद लवकुश घोड़े को आश्रम में बांध देते हैं। जहां राम के साथ लवकुश के बीच युद्ध के लिए जैसे ही राम धनुष उठाते हैं धनुष वाण छूट जाता है और उसी समय सीता जी धरती में समां जाती हैं। रामलीला समापन के बाद मेले का आयोजन हुआ लेकिन बारिश के कारण मेले का आनंद किरकिरा हो गया। इस अवसर पर अंबिका प्रसाद पांडेय, लालचंद्र पांडेय, अशोक उपाध्याय, गंगाशरण, विनोद पांडेय, अशोक पांडेय, जितेंद्र कुमार पांडेय, प्रमोद कुमार उपाध्याय, गिरीश तिवारी, लवकुश तिवारी, शैलेश तिवारी, आनंद तिवारी, चंचल उपाध्याय, मुकेश मिश्रा, आशुतोष पांडेय, डॉ रजनीश उपाध्याय, संजय पांडेय, सुयश तिवारी, अंकुर पांडेय, मनोज मिश्रा, अंकित पांडेय सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

लक्ष्मण-परशुराम संवाद, सीता स्वयंवर देख मंत्रमुग्ध हुए नेदुला निवासी

जंघई। आदर्श रामलीला कमेटी नेदुला रामलीला मंचन में लक्ष्मण-परशुराम के गरजते संवादों से पंडाल गूंज उठा। रामलीला में धनुष भंग के बाद सुकुमारी सीता ने रामजी के गले में वरमाला डाली। धनुष भंग के बाद यहां लक्ष्मण-परशुराम ने संवादों के दौरान अपनी त्यौरियां चढ़ाईं। सीता स्वयंवर में ऋषि विश्वामित्र भगवान श्रीराम को शिव का धनुष उठाने के लिए प्रेरणा देते हैं धनुष टूटने पर परशुराम के आक्रोशित आने पर लक्ष्मण उन्हें कहते हैं कि बार-बार फरसा दिखाकर मुझे क्यों डराते हो। रामलीला देखने आए लोगों की भीड़ भी ज्यादा रही।इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष कुशलेश दुबे एडवोकेट, डायरेक्टर श्याम जी श्रीवास्तव, सह डायरेक्टर साहबलाल श्रीवास्तव, मनोज दुबे, ब्रह्मराज दुबे, आशीष मिश्रा, अंकित मिश्रा, मुन्ना लाल शर्मा, संतोष शर्मा, अवनीश श्रीवास्तव, बृजमोहन यादव, सोहनलाल यादव, परदेशी यादव, घनश्याम दुबे सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

ग्राम सभा कनिगड़ा की खुली बैठक में 2 सदस्यों की रही उपस्थिति, 9 सदस्यों ने बैठक का किया विरोध

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। विकास खंड उरुवा अंतर्गत ग्राम सभा कनिगड़ा में ग्राम प्रधान और ग्राम सचिव के नेतृत्व में शनिवार को खुली बैठक का आयोजन किया गया। उक्त बैठक के संबंध में ग्राम प्रधान केशव दास ने बताया कि यह बैठक विकास कार्य को लेकर किया गया है। जिसमें बैठक का समय सुबह 11:00 बजे पंचायत भवन पर ग्राम पंचायत सदस्यों के साथ बैठक थी। वहीं 12:00 बजे से खुली बैठक में जिसकी जो भी समस्या आवास, नाली, खडंजा, मनरेगा या राशन कार्ड की हो खुली बैठक मे रखा जायेगा। जिसमें उक्त मौके पर ग्राम सभा के लोग भी उपस्थित रहेंगे। लेकिन बैठक के आयोजन के निर्धारित समय पर कुछ सदस्य व ग्राम सभा के लोग तो जुट गये लेकिन प्रधान व सचिव के द्वारा निर्धारित किए गए सदस्यों के साथ खुली बैठक में समय से न पहुंचने पर दो सदस्यों को छोड़ बाकी ग्राम सभा के 11 सदस्यों में 9 सदस्यों ने बैठक का बहिष्कार करते हुए चले गए। बैठक का समय बीत जाने के करीब आधे घंटे बाद निर्धारित स्थल पर प्रधान व सचिव के पहुंचने पर 2 सदस्यों व ग्राम सभा के कुछ लोगों की मौजूदगी में प्रधान और सचिव द्वारा निर्णय लिया गया कि राशन संबंधी जितने भी पात्र हैं उनका राशन कार्ड यथावत बना रहेगा शेष पात्रों का सूची से नाम काट दिया जाएगा। वही फसलों की सिंचाई वह बारिश के पानी की जल निकासी हेतु ग्राम सभा की नालियों की साफ-सफाई व पानी की समुचित व्यवस्था पर भी विचार विमर्श किया गया। देर से पहुंचने के कारण प्रधान व सचिव द्वारा आए हुए कुछ मौजूद लोगों की समस्याएं सुनी गई जिसमें विधवा पेंशन, वृद्धा पेंशन सहित कई शिकायतें ग्रामीणों द्वारा की गई। जिसमें प्रधान व सचिव द्वारा निस्तारण कराए जाने का आश्वासन दिया गया। जानकारी के लिए बता दें कि पूर्व में भी खुली बैठक का आयोजन किया गया था जहां बैठक न कर पंचायत भवन का ताला ही नहीं खोला गया था। वही ग्राम सभा के नो पंचायत सदस्यों द्वारा मंडलायुक्त, जिलाधिकारी व खंड विकास अधिकारी को लिखित पत्र के माध्यम से अवगत कराया गया है कि यदि ग्राम प्रधान व सचिव द्वारा किसी भी बैठक या ग्राम सभा के संबंधित कागजातों पर हम लोगों का हस्ताक्षर किया जाता है तो वह निराधार व फर्जी समझा जाए। वहीं आज की इस खुली बैठक में भी इन नौ सदस्यों व अधिकतर ग्रामीणों द्वारा प्रधान की कार्यप्रणाली से नाखुश होकर बैठक का पुरजोर विरोध किया। ग्राम पंचायत के सदस्य ललकारी हरिजन, राजबहादुर, बृजबाला, घनश्याम, मुन्नी साहू से बैठक में उपस्थित ना होने के संबंध में पूछा गया तो उनके द्वारा बताया गया कि ग्राम प्रधान द्वारा मनमानी ढंग से कार्य किया जाता है ग्राम सभा के विकास कार्यों हेतु धनराशि का दुरुपयोग किया जाता है इस संबंध में जब हम सब लोगों द्वारा ग्राम प्रधान से बात की जाती है तो मारपीट करने व एससी एसटी एक्ट के तहत कार्यवाही करने की बात कही जाती है। इस बाबत जब ग्राम प्रधान द्वारा बात की गई तो उनके द्वारा बताया गया कि खुली बैठक में ग्राम सभा के सदस्यों की उपस्थिति ना होने पर उनकी सदस्यता समाप्त कर दी जाएगी।

सूर्पनखा का दुस्साहस देख क्रोधित लक्ष्मण ने काटे नाक कान

सहसों। क्षेत्र के भोपतपुर मीरापुर में चल रही रामलीला का कुशल पात्रों द्वारा सुंदर अभिनय के साथ मंचन किया जा रहा है। आदर्श रामलीला कमेटी द्वारा अनुभवी कलाकारों ने शुक्रवार को लक्ष्मण द्वारा सूर्पनखा का नाक कान काटना, खर दूषण वध, मामा मारीच का हिरण के रूप में भगवान राम के हाथों धार एवं रावण द्वारा माता सीता का हरण सुंदर मंचन किया गया। रामलीला मंचन के दौरान लालजी प्रजापति के निर्देशन में पंचवटी में भगवा राम अपनी भार्या माता सीता और लक्ष्मण के साथ कुटिया में विराजमान को देख आकाश मार्ग से बिहार कर रही राक्षसी सूर्पनखा उनके सुंदरता पर मोहित होकर विवाह का प्रस्ताव किया परंतु बहुत अनुनय विनय के बाद भी नहीं माने तो सूर्पनखा ने डरावनी रूप बनाकर माता सीता पर झपटने दौड़ी ऐसा देख लक्ष्मण ने तुरंत तलवार से सूर्पनखा का नाक कान काट दिया। इस सुंदर अभिनय को देख उपस्थित दर्शकों द्वारा प्रशंसा करते हुए पूरा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। इस अवसर पर कलाकार आकाश शर्मा, लकी सोनी एवं अमन शर्मा सहित आदर्श रामलीला कमेटी के अध्यक्ष महेंद्र सिंह, प्रबंधक महेंद्र श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष सूर्या यादव, संयोजक पुट्टी लाल सोनी, कोषा अध्यक्ष कृष्ण राज सिंह, संचालक राकेश शर्मा व रमेश शर्मा, संरक्षक अनिल सोनी सहित सैकड़ों की संख्या में दर्शक मौजूद रहे।

सिंगरामऊ गांव के दशहरा मेले में निकला सुसज्जित रामादल

सहसों। आदर्श रामलीला कमेटी सिंगरामऊ द्वारा 11 दिन तक बहुत ही मनमोहक रामलीला का मंचन करते हुए कुशल पात्रों द्वारा सुंदर अभिनय प्रस्तुत किया गया। रामलीला मंचन के आखरी दिन राम रावण युद्ध के दौरान रावण का वध कर मयार्दा पुरुषोत्तम राम लंका पर विजय प्राप्त किया इसके पश्चात 12वें दिन धूमधाम से रामादल निकालकर दशहरे के मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मेले में आकर्षक झांकियों द्वारा मेले में आए हुए नर नारियों का मनमोहा तथा मेले में तमाम प्रकार के दुकानदार अपनी-अपनी दुकानों के साथ मेले का रौनक बढ़ाया। इस अवसर पर रामादल के साथ आदर्श रामलीला कमेटी सिंगरामऊ के अध्यक्ष संतोष कुमार शुक्ला, प्रबंधक सूरज मिश्रा, कोषाध्यक्ष आशु श्रीवास्तव, संचालक लालजी द्विवेदी, व्यास कमलेश मिश्र एवं अरुण द्विवेदी, मेला व्यवस्थापक राजू पांडे एवं एवं आदर्श पांडे, विपिन मिश्रा, राजेश कुमार द्विवेदी, प्रभाकर पांडे, मनोज मिश्रा, राजुल मिश्रा, डॉक्टर कमल मिश्रा, दीपक दिवेदी सहित आदि उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा...

सराहनीय कार्यों के लिए किया गया सम्मानित, आयोजित की गई सांस्कृतिक संध्या

शंकरगढ़। विजयदशमी के मौके पर प्रत्येक वर्ष की तरह इस साल भी अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े लोगों को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। विजयदशमी के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक संध्या में छाया मेडिकल स्टोर शंकरगढ़ की तरफ से राजा महेंद्र प्रताप सिंह ने अपने हाथों से सम्मानित कर मेले की शोभा में चार चांद लगाया। सांस्कृतिक संध्या और सम्मान समारोह के चीफ गेस्ट शंकरगढ़ (कसौटा) स्टेट के राजा महेंद्र प्रताप सिंह ने आयोजन की सराहना करते हुए इतने बड़े आयोजन के सकुशल संपन्न करवाने में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रयासों को सराहा। इस दौरान उन्होंने मीडिया कर्मियों संग विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ खंड विकास अधिकारी रामविलास राय, एसओ मनोज कुमार सिंह, सब इंस्पेक्टर ऋतुराज सिंह, डाक्टर शैलेंद्र सिंह,डॉ अनूप सिंह,मूलचंद्र गुप्ता, गोपालदास गुप्ता, चतुर्भुजदास गुप्ता, रामखेलावन गुप्ता, सूर्यनिधान पांडेय, प्रधान प्रतिनिधि परमेश्वर सिंह, नरेंद्र गुप्ता,पंडित विकास द्विवेदी, शिक्षक ब्रजेश सिंह, विजय सिंह,जमील खां, दिलीप चतुर्वेदी, रतन केसरवानी,जय केसरवानी, अरविंद केसरवानी, अनुज महेश गुप्ता, विजय गुप्ता, हरिश्चंद्र वर्मा, सुरेश केसरवानी, विनोद, मुखिया केसरवानी, सुजीत केसरवानी,डॉ प्रेमचंद्र, दीपक कुमार आदि को सम्मानित किया ।कार्यक्रम के आयोजक छाया मेडिकल स्टोर के प्रबंधक रोहित केसरवानी और अजय केसरवानी ने सभी का आभार जताया ।इस दौरान क्षेत्र के तमाम लोग मौजूद रहे और सांस्कृतिक संध्या का लुत्फ उठाया।

प्रतापपुर ब्लाक मुख्यालय के समीप सड़क गड्ढे में तब्दील

प्रतापपुर। वारी फूलपुर मार्ग पर स्थित प्रतापपुर ब्लॉक मुख्यालय के समीप सड़क पूर्णतः गड्ढे में तब्दील हो चुकी है आवागमन बाधित हो रहा है लोग गिरकर चुटहिल हो रहे हैं ।24 घंटे इस सड़क पर आवागमन रहता है तमाम विधायक, सांसद, मंत्री और सरकारी अधिकारी इस सड़क से आते जाते हैं लेकिन यह गड्ढा सड़क का नहीं दिख रहा है जिससे आवागमन करने वाले राहगीरों एवं दुकानदारों में आक्रोश व्याप्त है।

प्रयोगशाला सहायक संघ के निर्विरोध अध्यक्ष बने धर्मेंद्र यादव

करछना। उत्तर प्रदेश प्रयोगशाला सहायक संघ जनपद प्रयागराज का द्विवार्षिक चुनाव किया गया संस्थान सरदार पटेल सेवा संस्थान एलोपी बाग प्रयागराज में चुनाव अधिकारी डॉ आर यस मौर्य ऑर्थोपेडिक सर्जन टीवी संपू चिकित्सालय की देखरेख में शनिवार को संपन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुए धर्मेंद्र कुमार यादव अध्यक्ष, शैलेश सिंह वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कौशलेश पांडे उपाध्यक्ष ,अजय सिंह महामंत्री ,अर्पिता मिश्रा कोषाध्यक्ष ,अनुपम जायसवाल मीडिया प्रभारी, संतोष कुमार संयुक्त सचिव एवं अरविंद यादव ऑडिटर निर्विरोध निर्वाचित हुए।

बारावफात को लेकर हुई पीस कमेटी बैठक

झूंसी। इंस्पेक्टर वैभव सिंह अध्यक्षता में थाना झूंसी में बारावफात को लेकर पीस कमेटी की बैठक हुई। बैठक में आगामी बारावफात सकुशल सम्पन कराने पर चर्चा हुई ।इंस्पेक्टर झूंसी वैभव सिंह ने उपस्थित लोगो से बारावफात को लेकर सकुशल संपन्न कराने में सहयोग मांगा। नगर निगम से भी साफ-सफाई को लेकर चर्चा की गई। बैठक में अयाज अंसारी, धुन्नू प्रधान, सलमान एडवोकेट, मुस्ताक, नफीस, इरफान, संतोष निषाद, छोटे प्रधान, अतिउल्लाह, अनवर अहमद सहित मलामा खुर्द, मलावा बुजुर्ग, कन्हिहार, झूंसी कोहना के छेत्र के सम्मानित लोग उपस्थित रहे।

पुलिस प्रशासन व जिला अपराध समिति ने मिलकर मेले में शांति व्यवस्था में सहयोग प्रदान किया

नैनी। दशहरा के दूसरे दिन रोशनी देखने आए आम जनता के सुरक्षा व्यवस्था में भीड़ को डिवाइड करने में डीसीपीसी यूथ टीम से अपनी सेवा देते हुए पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर यातायात को निरन्तर रखने में हमारी यूथ टीम से यूथ टीम प्रभारी मनीष विश्वकर्मा ने बताया कि हमारी टीम मेवा लाल बगिया चौराहा सब्जी मंडी शंकर ढाल कॉटन मिल नैनी स्टेशन पर पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर सेवा दी शनि श्रीवास्तव वंश राज पाल सोनूभारतीय मयंक कुमार यादव शनि निषाद सुजीत गौतम राम कुमार पाल रोहित रावत शशांक मिश्र रवि सोनी सावन प्रजापति बबलू अली राजेश कुमार विकास कुमार सिंह सोहन लाल पांडेय आशीष कुमार पांडेय एवं यूथ टीम प्रभारी के निदेर्शानुसार सभी सदस्य गण इस सेवा में उपस्थित थे और हमारी टीम के लिए सब से ज्यादा योगदान और कैम्प की व्यवस्था कराने में श्री बबलू केसरवानी उर्फ बबलू विधायक जी का सहयोग था साथ हमारे यूथ टीम से कार्यक्रम अधिकारी दीपक तिवारी,पंकज तिवारी और मयंक यादव जी का था वहीं संतोष कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि हमारी टीम पूरे जिले में निभाओ सेवा देती है समाजसेवी सुधीर शर्मा जिला परिषद अध्यक्ष चेयरमैन अरवल बिहार ने कहा की ऐसे सामाजिक काम मनीष विश्वकर्मा की टीम हमेशा करती आई है।

सड़क पर उतरी एसपीओ टीम किया पुलिस प्रशासन का सहयोग

नैनी। पुलिस अधीक्षक जमुना पार श्रीमान सौरभ दिक्षित एवं क्षेत्राधिकारी करछना श्री अजीत सिंह चौहान के निदेर्शानुसार नैनी कोतवाली प्रभारी श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा जी एवं एसएसआई श्री अजय कुमार सिंहके मार्गदर्शन में विशेष पुलिस अधिकारी के प्रभारी श्री अभय राज सिंह जी के अगुवाई में उप प्रभारी परवेज अहमद के नेतृत्व में जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली सीनियर एरिया इंचार्ज रामजी जायसवाल जी दशहरा मेला को सकुशल संपन्न कराया। सकुशल संपन्न कराने वाले मुख्य रूप से एसपीओ टीम प्रभारी अभय राज सिंह उप प्रभारी परवेज अहमद जनसंपर्क अधिकारी शेख लियाकत अली थाना कमेटी कैफी सुल्तान मीडिया प्रभारी वीरेंद्र पटेल मीडिया सेल संदीप विश्वकर्मा संगठन सचिव रविंद्र सिंह सीनियर एरिया इंचार्ज रामजी जायसवाल एरिया इंचार्ज राकेश सोनकर, सुशील शर्मा, संजीव वर्मा,रमेश केसरवानी अमेरिका और सभी एसपीओ टीम के एरिया इंचार्ज अपनी अपनी टीम को लेकर मुस्तैदी से ड्यूटी पर तैनात रहे। रवि मिश्रा अश्वनी शर्मा चंद्र प्रताप राजू साहनी धर्मराज पटेल राजू वर्मा नौशाद अहमद मोहम्मद फिरोज मयंक कुमार सुरेंद्र कुमार गुप्ता अरविंद कुमार आशीष रावत मनीष रावत आदि एसपीओ टीम के जवान अपनी ड्यूटी पर तैनात रहे।

खबर संक्षेप

जमीनी विवाद में मार पीट चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। जमीनी विवाद को लेकर मारा पीटा गया और जान से मारने की धमकी दी गई।पुलिस ने चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम रोझियात निवासी अश्विनी कुमार शुक्ला पुत्र राम नारायण शुक्ला का आरोप है कि उनकी भूमिधरी जमीन पर विपक्षी कब्जा कर रहे थे मना करने पर मारे पीटे और जान से मारने की धमकी दी गई। तथा कहा गया कि तुम लोगों को एससी एस टी एक्ट में फंसा देगें। अश्विनी कुमार शुक्ला ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर उक्त गांव के पुन्नवासी ,गौतम प्रसाद ,गुड्डू देवी ,पंचम के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

चार पहिया वाहन की टक्कर से बाइक पर बैठा वृद्ध घायल

मऊआइमा। मऊआइमा में बाइक के पीछे अपने पिता को बैठा कर गांव जा रहे युवक की बाइक में चार पहिया वाहन ने टक्कर मार दी। जिससे वृद्ध की हालत गंभीर बनी हुई है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम जमखुरी निवासी परवेज आलम पुत्र अब्दुल साकिर अपने वृद्ध पिता को बाइक के पीछे बैठा कर घर जा रहे थे। बताते हैं कि हरिसेनगंज जमखुरी मोड पर बाइक में बस ने टक्कर मार दी जिससे वृद्ध छिटक कर दूर जा गिरे। साकिर को प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

अब जनसेवा केंद्रों पर भी मिलेंगे ई-स्टांप, व्यस्था तत्काल प्रभाव से लागू : मंत्री रवींद्र जायसवाल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। अब जन सेवा केंद्रों (सीएससी) से भी ई-स्टांप लिए जा सकेंगे। स्टांप एवं न्यायालय शुल्क राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रविंद्र जायसवाल ने शनिवार को प्रेसवार्ता में बताया कि शुक्रवार से इसकी शुरूआत हो चुकी है। छोटे मूल्य के स्टांप की अधिक मूल्य लिए जाने की लगातार शिकायतें मिल रहीं थीं। इसके अलावा छोटे मूल्य का स्टांप मिलने में परेशानी की भी शिकायत हुई थी। मंत्री ने बताया कि नई व्यवस्था के तहत सीएससी से किसी भी मूल्य के स्टांप आसानी से लिए जा सकेंगे। इससे इस तरह की शिकायतें दूर होंगी। मंत्री ने बताया कि खून के रिश्तों में जमीन दान करने पर लगने वाले रजिस्ट्री शुल्क को कम किया गया है। पूर्व में दान की गई जमीन एवं मकान की रजिस्ट्री पर सर्किल रेट का एक प्रतिशत पंजीकरण शुल्क तथा सात फीसदी स्टांप शुल्क देना होता था

शनिवार को प्रेसवार्ता में बोलतेस्टांप एवं न्यायालय शुल्क राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रविंद्र जायसवाल

यही नहीं व्यवस्था में एक प्रतिशत पंजीकरण शुल्क तो देना होगा लेकिन स्टांप पांच हजार रुपये का ही लगेगा। जमीन की कीमत चाहे जितनी हो। उन्होंने बताया कि यह व्यवस्था इसी वर्ष 18 जून से लागू की गई है और इस दौरान एक लाख 38 हजार 429 लोगों ने इसका लाभ उठाया है। इससे विभाग को 477.54 करोड़ रुपये राजस्व की प्राप्ति हुई है। उन्होंने बताया कि स्टांप शुल्क अधिक होने की वजह से लोग दान की प्रापर्टी की रजिस्ट्री कराने से बचते थे। इससे परिवार में विवाद के अधिक मामले थे। नई व्यवस्था से इसमें कमी आएगी और परिवार में सौहार्द बना रहेगा। उन्होंने विभाग की अन्य योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी। इससे पहले उन्होंने महानिरीक्षक निबंधन कार्यालय का निरीक्षण किया।

उत्पीड़न-भ्रष्टाचार की शिकायत पर जिला कृषि अधिकारी के खिलाफ बैठी जांच

प्रयागराज। जिला कृषि अधिकारी सुभाष मौर्य के खिलाफ उत्पीड़न एवं भ्रष्टाचार की शिकायत हुई है। इस पर मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत ने संयुक्त विकास आयुक्त तथा उप निदेशक कृषि रक्षा की जांच बैठा दी है।कोरांव स्थित फार्म के अधीक्षक रहे जितेंद्र कुमार मौर्य ने निदेशक को पत्र लिखकर जिला कृषि अधिकारी पर उत्पीड़न का आरोप लगाया है। जितेंद्र का कहना है कि परेशान किए जाने की वजह से उन्होंने कानपुर ट्रांसफर करा लिया, लेकिन सभी कागजात नहीं भेजे गए। इसकी वजह से जून से अब तक का वेतन भी नहीं मिला।जितेंद्र ने भ्रष्टाचार का भी आरोप लगाया है। इसी क्रम में मंडलायुक्त ने जांच कमेटी गठित की है। वहीं जिला कृषि अधिकारी का कहना है कि फार्म अधीक्षक के खिलाफ कई तरह की शिकायतें हैं। इसकी वजह से तबादला कर दिया गया। जिला कृषि अधिकारी का कहना है कि जितेंद्र पर रिकवरी भी बाकी है। इसके अलावा यहां से कार्यमुक्त हुए बगैर कानपुर में कार्यभार ग्रहण कर लिया। जांच कमेटी के सामने सारी बातें रखी जाएंगी।

अतीक अहमद के गुर्गों पर केस लिखाने वाले का बयान दर्ज

प्रयागराज। करेली में अतीक अहमद के चार गुर्गों पर 10 लाख की रंगदारी मांगने के मामले में वादी का बयान दर्ज करा लिया गया है। पुलिस ने कोर्ट में उसका बयान दर्ज कराया। अब उनके खिलाफ एनबीडब्ल्यू जारी कराने की तैयारी है। कसारी मसारी निवासी आजम ने अतीक के गुर्गे असाद, आवेज अहमद उर्फ गोलू, नदीम अहमद, शाद अहमद और दो अज्ञात पर 31 अगस्त को मुकदमा दर्ज कराया था। आरोप है कि वह ऐनुद्दीनपुर स्थित प्लॉट पर था, तभी आरोपियों ने आकर असलहे तान दिए और 10 लाख रंगदारी मांगी। कहा कि जो भी काम कराता है, वह भाई को पैसे पहुंचाता है। पैसे देने से मना करने पर मारने पीटने लगे। वह भागा तो गोलियां भी चलाईं। मामले में अब तक आरोपी पकड़े नहीं जा सके हैं। गौरतलब है कि असाद नौ महीने से फरार चल रहा है। करेली मे ही प्रॉपर्टी डीलर जीशान से पांच करोड़ की रंगदारी मांगने के अलावा पूरामुफ्ती में जीशान पर ही जानलेवा हमले में वांछित चल रहा है। यह दोनों मुकदमे क्रमशः पिछले साल 31 दिसंबर और इसी साल दो अगस्त को दर्ज कराए गए थे। अब तक उसे पकड़ा नहीं जा सका है। करेली के मुकदमे में उसके खिलाफ एनबीडब्ल्यू जारी भी चुका है। उधर करेली इंस्पेक्टर अरविंद कुमार गौतम ने बताया कि 10 लाख की रंगदारी मांगने के मामले में जल्द ही आरोपियों के खिलाफ गैरजमानती वारंट जारी कराने के लिए अर्जी दी जाएगी।

10 लाख रंगदारी मांगने का है मामला

चार महीने बीते, अतीक के गुर्गों पर कार्रवाई नहीं

उधर धूमनगंज थाने में दर्ज दो मुकदमों में नामजद अतीक अहमद के गुर्गों मो. मुस्लिम व खालिद जफर समेत अन्य पर चार महीने बाद भी कार्रवाई नहीं हो सकी। गौरतलब है कि पांच मई को पिपरी निवासी सूरजपाल ने मुस्लिम, खालिद जफर, माज, हसन पर 20 लाख की रंगदारी मांगने के आरोप में केस दर्ज कराया था। एक महीने बाद ही मुस्लिम व उसके दो साथियों पर धूमनगंज थाने में एक और मुकदमा दर्ज हुआ। गयासुद्दीनपुर निवासी सुमन देवी ने आरोप लगाया कि उसकी करोड़ो की जमीन कब्जाकर प्लाटिंग कर दी गई। साथ ही विरोध पर गालीगलौज व जान से मारने को धमकाया गया। सीओ सिविल लाइंस एनएन सिंह का कहना है कि साक्ष्य संकलन किया जा रहा है।

बीएएमएस डॉक्टर ने दी थी सीएम योगी के कार्यक्रम से पहले बम की फर्जी सूचना, आरोपी हिरासत में

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के शहर आगमन से थोड़ी देर पहले इंदिरा भवन में बम की सूचना देकर सनसनी फैलाने वाला बीएएमएस डॉक्टर निकला। प्रसून शर्मा नाम के इस युवक को सिविल लाइंस पुलिस ने शनिवार को हिरासत में ले लिया। देर रात तक उससे पूछताछ जारी थी। प्रसून राजरूपपुर का रहने वाला है। पुलिस मोबाइल नंबर को ट्रेस करते हुए उस तक पहुंची और फिर उसे हिरासत में ले लिया। थाने पहुंचे उसके पिता भीकचंद शर्मा ने बताया कि 2017 में हुए सड़क हादसे में उसके सिर में गंभीर चोट आई थी। इसके बाद से उसकी मानसिक हालत ठीक नहीं है। पुलिस ने उससे पूछताछ की तो उसका कहना था कि उसने ऐसे ही सूचना दे दी। इंस्पेक्टर सिविल लाइंस वीरेंद्र सिंह यादव का कहना है कि उससे पूछताछ की जा रही है। मामला गंभीर है, ऐसे में मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्रवाई की जाएगी ।

बेसमेंट से लेकर पांचवें तल तक हुई थी चेकिंग

गौरतलब है कि एक दिन पहले फोन के जरिये शाम करीब 4.15 बजे सूचना पुलिस को मिली थी कि कुछ लोग इंदिरा भवन को बम से उड़ाने की बात कर रहे हैं। इसके बाद करीब एक घंटे तक इंदिरा भवन का चप्पा-चप्पा खंगाला गया। बेसमेंट से लेकर पांचवें तल तक एंटी सबाटोज टीम और डॉग स्क्वॉड ने तलाशी ली। पूरे परिसर की चेकिंग कराई गई। सघन तलाशी के बाद भी कुछ नहीं मिला तब सभी ने राहत की सांस ली।

श्री रामभद्राचार्य महाराज से मिले पूर्व डिप्टी सीएम, लिया आशीर्वाद

अखंड भारत संदेश

भाजपाइयों ने माल्यार्पण कर गर्मजोशी के साथ किया स्वागत

मेजा रोड। मेजारोड स्थित डीजीएस गेस्ट हाउस मे दिव्यांगोत्थन श्रीराम सेवा ट्रस्ट (न्यास) मेजा पूर्व डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। बाद उनका काफिला मेजा के लखनपुर स्थित सिंचाई विभाग के डाक बंगले मे पधारे तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री रामभद्राचार्य महाराज के पास पहुंचा। वहां पहले से मौजूद भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से नारे लगाते हुए डिप्टी सीएम का स्वागत किया। अधिवक्ता अभिषेक तिवारी टिंकू ने पूर्व डिप्टी सीएम को स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। स्वागत से अभिभूत डिप्टी सीएम ने सभी नेताओं व कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया। उसके बाद वह डाक बंगले में पधारे तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री रामभद्राचार्य महाराज के कमरे मे चले गए। करीब दस मिनट की मुलाकात

के बाद डिप्टी सीएम ने महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कर पुनः प्रयागराज के लिए रवाना हो गए। डिप्टी सीएम के आने की सूचना पर सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित, एसडीएम विनोद कुमार पाण्डेय, सीओ मेजा विमल किशोर मिश्र, थाना प्रभारी मेजा धीरेन्द्र सिंह, चौकी प्रभारी मेजारोड रामभवन वर्मा, चौकी प्रभारी जेवनिया प्रदीप अस्थाना, चौकी राम भवन वर्मा सहित भारी संख्या मे पुलिस टीम मुस्तैद रही। इस मौके प्रयागराज की मेयर अभिलाषा गुप्ता अमरीश तिवारी दिनेश शुक्ला विनय शुक्लानेता व सैकड़ों पदाधिकारी मौजूद रहे।

प्रेम जाल में फंस कर तमिल नाडु से युवती पहुंची कोरांव

रत्योरा। प्यार का परवान जब सिर चढ़कर बोलता है तो प्रेमी युगल माता पिता के मान सम्मान व सामाजिक बंधनों को भी तार-तार कर देते हैं ऐसा ही एक मामला कोरांव में देखने को मिला। जहां प्रेम जाल में फंस कर झारखंड की युवती कोरांव के युवक के साथ तमिलनाडु से फरार होकर कोराव आ गई। जानकारी के मुताबिक खीरी थाना क्षेत्र के सिलौधी गांव का एक युवक तमिलनाडु के बिहरपी धागा कंपनी में काम कर रहा था। जिसका प्रेम संबंध धागा कंपनी में ही काम करने वाली बुरुसांई जनपद पश्चिमी सिंहभूम झारखंड की रहने वाली एक युवती से हो गया दोनों का प्रेम जब परवान चढ़ा तो केक दूजे का होने के लिए तमिलनाडु से भागकर कोराव आ गए इस दौरान कुछ दिनों तक तो दोनों का प्रेम संबंध है ठीक-ठाक चलता रहा बाद में प्रेमी युवक अपनी कथित प्रेमिका पत्नी को मारपीट कर सका रीत करने लगा जिससे आज आकर पांच दिन पूर्व झारखंड की रहने वाली युवती कोरांव थाना क्षेत्र के रामपुर कला गांव से थाने आ पहुंची। जहां अपनी पूरी आपबीती पुलिस को बताई और घर जाने की गुहार लगाने लगी। 5 दिन से युवती कोरांव थाने पर ही मौजूद है। युवती ने बताया कि 9 महीने से कथित प्रेमी युवक के साथ रह रही हूं। इस दौरान अपने पैतृक घर सिलौधी महज 3 दिन रखा बाकी 9 महीने तक मुझे कभी अपने बहन के घर रामपुर झगड़ा तो कभी गूंगी रतेवरा आदि स्थानों पर रखा प्रेमिका ने यह भी बताया कि मुझे यहां आने पर पता चला कि इसकी शादी पहले भी हुई थी, और पत्नी को छोड़ दिया था जिसकी दूसरी पत्नी केस लड़ रही है। कथित प्रेमी पति की प्रताड़ना से पीड़ित युवती थाने पहुंचकर परिजनों से बातचीत कर घर जाने की बात कह रही है। परिजन भी उसे घर बुलाने को तैयार है युवती ने बताया कि मंगलवार को प्रयागराज से तमिलनाडु की सीधी ट्रेन है उसी से घर जाऊंगी। कथित प्रेमी प्रति फरार बताया जा रहा है।

कार्यालय ग्राम पंचायत बुदावां, वि.खं. जसरा, प्रयागराज

अल्पकालीन निविदा

पत्रांक : मेमो/मनरेगा/राज्य वित्त/मुख्यमंत्री पुरस्कार/नि0/2022–23 दिनांक : 08.10.2022

महात्मागांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना/राज्य वित्त/पंद्रहवां वित्त योजनान्तर्गत वर्ष 2022–23 में प्रस्तावत निम्नलिखित कार्यों हेतु सामग्री आपूर्ति पंजीकृत एवं अधिकृत विक्रेता से दिनांक 09.10.2022 से दिनांक 25.10.2022 सायं 4:00 बजे तक निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। दिनांक 25.10.2022 को सायंकाल 4:30 पर निविदा ग्राम पंचायत कार्यालय पर निविदादाताओं एवं पतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगी।

क्र	कार्य का विवरण	योजना/मद	अनुमानित लागत (लाख में)	निविदा मूल्य (रू0 में)	धरोहर राशि	आपूर्ति कार्य अवधि
1	बांदा रोड से रूबी के घर तक इण्टरलाकिंग रोड का निर्माण 70 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	300000	500	6000	1 माह
2	पोतनिहा काली रोड से गुड्डू के घर तक इण्टरलाकिंग रोड मरम्मत का कार्य 100x3	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	300000	500	6000	1 माह
3	गुड्ड के घर से नफीस के घर के आगे तक इण्टरलाकिग मरम्मत कार्य 100 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	300000	500	6000	1 माह
4	फरीद के घर से नवाब के घर तक इण्टरलाकिंग मरम्मत का कार्य 60 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	250000	500	5000	1 माह
5	बांदा रोड से अजय पेन्टर के घर तक WBM रोड का निर्माण एवं मिट्टी कार्य 125 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	200000	500	4000	1 माह
6	शैफी के घर से महमूद के घर तक नाली व इण्टरलाकिग रोड का निर्माण कार्य 80 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
7	सच्चे के घर से बबुल्ले के घर तक इण्टरलाकिंग रोड का निर्माण 80 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	400000	500	8000	1 माह
8	पाड़े के बाग से राधेश्याम के घर तक रोड का WBM निर्माण कार्य 150 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	200000	500	4000	1 माह
9	संगम नर्सिंग होम से कमलाकर के घर तक WBM रोड का कार्य 500 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
10	संदीप के घर से बबुल्ले के घर तक नाली व इण्टरलाकिंग रोड का निर्माण कार्य 100 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
11	रींवा रोड से राकेश के घर तक WBM रोड एवं मिट्टी का कार्य 500 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
12	नैनी राजबहा से अखिलेश के घर तक WBM रोड का निर्माण कार्य 350 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	400000	500	8000	1 माह
13	फूलचन्द्र के घर से तालाब तक नाली का निर्माण कार्य 100 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	300000	500	6000	1 माह
14	जहूर का पूरा मे सेन्ट जान्श स्कूल से सोनकरन के घर तक इण्टरलाकिंग रोड का निर्माण कार्य 100 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
15	CC रोड से CC रोड तक इण्टरलाकिंग रोड का निर्माण कार्य 100 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
16	भीटा माई नहर से अमृतलाल के घर तक WBM रोड का निर्माण 500 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
17	राजेश के घर से राममिलन के घर तक WBM रोड का निर्माण 150 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	150000	500	3000	1 माह
18	रींवा रोड से रंगलाल के घर तक इंटरलाकिंग रोड का निर्माण 125 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
19	हरून के घर से नौशाद के घर तक इण्टरलाकिंग रोड का निर्माण 125 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
20	जय शुक्ला के घर से राधा के घर तक मिट्टी व WBM रोड का निर्माण कार्य 250 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	300000	500	6000	1 माह
21	तिलकधारी के घर से अमर बहादुर के घर तक WBM रोड का निर्माण कार्य 500 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
22	भीटा माई नहर से रामजतन के खेत तक WBM रोड की मरम्मत का कार्य 100 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	150000	500	3000	1 माह
23	गुड्डू के घर से मस्जिद के आगे तक इण्टरलाकिग मरम्मत का कार्य	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह
24	रामजतन के खेत से गुड्डू के घर तक WBM रोड का निर्माण कार्य 100 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	150000	500	3000	1 माह
25	शंकरलाल के घर से राजाराम के घर तक इण्टरलाकिंग रोड का निर्माण 125 मी.	मनरेगा/राज्य /पंद्रहवां वित्त	500000	500	10000	1 माह

सामान्य शर्ते –

1. कार्य की सम्पूर्ण जानकारी किसी भी कार्य दिवस में ग्राम विकास अधिकारी कार्यालय से ली जा सकती है। 2. निविदा दाता/कोटेशन दाता को समस्त रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र जी0एस0टी0 ने0 के साथ रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र निविदा दाता/कोटेशन के साथ संलग्न करना होगा। 3. निविदा धरोहर राशि 2 प्रतिशत जमानत के रूप में एफ0डी0आर0/एन0एस0सी0 जमा करना होगा। 4. निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय में दिनांक 25.10..2022 तक पूर्वाह्न 12 बजे तक प्राप्त कर सकते हैं। 5. किसी निविदा/कोटेशन को निरस्त करने का सर्वाधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। 6. सभी कार्यों के लिये अलग–अलग निविदा/कोटेशन स्वीकार की जायेगी। 7. सशर्त निविदा स्वीकार नहीं होगी। 8. सामग्री की मात्रा/धनराशि घट बढ़ सकती है।

नोट : निविदा प्रपत्र ग्राम पंचायत कार्यालय बुदावां से प्राप्त की जा सकती है एवं ग्राम पंचायत कार्यालय बुदावां में समस्त निविदायें भी खोली जायेगी।

(अनुराधा पटेल)
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बुदावां
विकास खण्ड जसरा, प्रयागराज

(श्याम लाल तिवारी)
ग्राम पंचायत/ विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बुदावां
विकास खण्ड जसरा, प्रयागराज

24 वां जमुनापार महोत्सव 9 नवम्बर से

अखंड भारत संदेश

करछना। आजादी के अमृत महोत्सव को समर्पित 24 वां सात दिवसीय जमुनापार महोत्सव इस वर्ष 9 नवंबर से आयोजित किया जा रहा है। क्षेत्र के रामपुर स्थित बृजमंगल सिंह इंटर कॉलेज परिसर में जमुनापार की माटी परिपाटी, संस्कृति संस्कार,लोक कलाऔर प्रतिभाओं को एक मंच पर संजोने वाले महोत्सव का शुभारंभ जमुना पार के शहीद सेनानियों के घर केआंगन की पावन मिट्टी से पूरित कलश पूजन के साथ शुरू होगा। इस संदर्भ में रामपुर में शनिवार को हुई आयोजन समिति की बैठक के बाद जानकारी देते हुए जमुनापार जागृति मिशन के संयोजक डॉ. भगवत पाण्डेय ने बताया कि 9 नवंबर से आयोजित सात दिवसीय महोत्सव में प्रतिदिन मंच पर रामकथा के मुख्य प्रवाचक स्वामी विनोदानन्द सरस्वती जी महाराज के श्री मुख से रामकथा होगी।

- **शहीद सेनानियों केआंगन की पावन माटी पूरित कलश का होगा पूजन**
- **जमुनापार के विद्यालय स्तरीय विभिन्न प्रतियोगिताओं का होगा आयोजन**
- **करछना साहित्य, संस्कृति, लोककला का होगा अनूठा संगम**
- **मंच पर जुटेंगी विविध क्षेत्रों की नामचीन प्रतिभाएं**
- **अपनी माटी की विभूतियों का होगा सम्मान**

इसकेअलावा जमुनापार की अंतर विद्यालयीय छात्र प्रतिभाओं के हुनर को संजोते मंच पर,वाद विवाद, निबंध, भाषण,लोक गायन, चित्रकला, लोकनृत्य, रंगोली जैसी प्रतियोगिताओं में बच्चे अपना जलवा बिखेरेंगे। महोत्सव में जहां लोककलाकार अपनी प्रस्तुतियों से समा बांधेंगें वहीं आजादी के अमर सपूतों की यादगार में संगोष्ठी व अखिल भारतीय कवि सम्मेलन से महोत्सव गौरवान्वित होगा। अपनी पूर्व परम्परा के अनुसार समापन दिवस पर मंच पर शिक्षा, विधि, समाज सेवा, लोककला, साहित्य, प्रशासन क्षेत्र से मौजूद नामचीन प्रतिभाओं को सम्मानित किया जाएगा। इस दौरान तैयारियों को लेकर समितियों का गठन करने के बाद प्रचार-प्रसार पर जोर दिया गया। इसी क्रम में प्रतिवर्ष की तरह महोत्सव के बाद 18 नवंबर को निशुल्क नेत्र शिविर आयोजन कराने का निर्णय भी लिया गया। इस मौके पर पूर्व प्रमुख रामतौल पटेल,तीरथ राज पांडेय, मनीष तिवारी, रोशन लाल ओझा, डॉ. राजेंद्र शुक्ल, डॉ वीरेंद्र कुसुमाकर, श्यामलाल बेगाना, रामबाबू यादव, मोहिनी श्रीवास्तव, अशोक बेशरम, अतुल तिवारी, रिंकू सिंह, जितेंद्र जलज, विपिन सिंह परिहार, समेत कई लोग मौजूद रहे।

घर में घुसकर नाबालिग को अगवा करने की कोशिश, चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। खुल्दाबाद में घर में घुसकर नाबालिग को अगवा करने का प्रयास किया गया। असलहों से लैस बदमाश नानी के घर रहने वाली बच्ची को जबरन कार में ले जाने लगे। शोरगुल पर पड़ोसी आ गए तब हमलावर भाग निकले। मामले में चार नामजद व तीन अज्ञात पर केस दर्ज किया गया है। रीता प्रकाश पत्नी डॉ. भानु प्रकाश खुल्दाबाद के चकिया में रहती हैं। उन्होंने तहरीर में आरोप लगाया है कि उनकी बेटी मोनिका की हत्या दामाद उपेंद्रनाथ निवासी देवरिया ने कर दी थी। जिसका मुकदमा आगरा में पंजीकृत है और आरोपपत्र दाखिल होने के बाद मुकदमा कोर्ट में विचाराधीन है। 10 सितंबर की शाम चार बजे के करीब रवींद्र पासवान, मदनजी व माधो पासवान तीन अज्ञात लोगों संग असलहे से लैस होकर घर में घुस आए। फिर उनकी नाबालिग नातिन को अगवा करने का प्रयास किया। उन्होंने शोर मचाया तो पड़ोसी जुट गए और विरोध किया तो आरोपी भाग निकले। जाते-जाते मुकदमे में सुलह न करने पर पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी। आरोप है कि दामाद जमानत पर आने के बाद से लगातार सुलह के लिए दबाव बना रहा है। भुक्तभोगी ने मामले की शिकायत आईजी रेंज डॉ. राकेश सिंह से की। उनके आदेश पर खुल्दाबाद थाने में मुकदमा दर्ज किया गया। इसमें दामाद को भी आरोपी बनाया गया है। खुल्दाबाद थाना प्रभारी ने बताया कि जांच पड़ताल की जा रही है।

गैस सिलेंडर के रिसाव से रेस्टोरेंट में लगी आग

अखंड भारत संदेश

करछना। शनिवार दोपहर के वक्त क्षेत्र के रामपुर तिराहे पर एक रेस्टोरेंट में गैस सिलेंडर के रिसाव होने के कारण आग लग गई। जिसे देख वहां पर मौजूद लोगों में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। वहीं पर पहले से उपस्थित पुलिसकर्मी व आस पास के लोग ने बांस बल्लीयों के सहारे जलते हुए सिलेंडर को कड़ी मशक्कत कर बाहर निकाला और आग पर काबू पाया गया। जानकारी के मुताबिक क्षेत्र के खाई गांव के रहने वाला आर्यन केसरवानी रामपुर तिराहे पर रेस्टोरेंट्स की दुकान खोल रखा है। शनिवार दोपहर के वक्त वह कड़ाही में तेल डालकर चाऊमीन बनाने जा रहा था। उसी दरमियान अचानक गैस सिलेंडर में आग लग गई। जहां आग की लपटे की आगोश में आने से काउंटर व अन्य सामान जलकर राख हो गया। भुक्तभोगी के मुताबिक लगभग 15 हजार रुपए तक का नुकसान हुआ है। गली मत रही कि कोई बड़ी हताहत नहीं हुई।

रक्तदान से कम रहता है कैंसर होने का खतरा: डॉ अभिषेक

स्वैच्छिक रक्तदाता पंजीकरण अभियान में किया गया जागरुक

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। रक्तदान सबसे बड़ा दान होता है। बड़े-बुजुर्गों ने इसे महादान की संज्ञा दी है। रक्तदान करने से न सिर्फ शरीर में नये रक्त के बनने की प्रक्रिया तेज होती है, बल्कि यह खुद की सेहत केलिए बेहद फायदेमंद प्रक्रिया है। यह बातें सीएचसी अधीक्षक डा.अभिषेक सिंह ने कही। वह दो दिवसीय स्वैच्छिक रक्तदाता पंजीकरण अभियान के तत्वावधान में आयोजित जागरुकता संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

डा. अभिषेक सिंह ने कहा, रक्तदान करने से पहले ही रक्तदाता की शरीर की जांच की जाती है, इससे यह पता लग जाता है कि कहीं उसे कोई बीमारी तो नहीं है। रक्तदान से वजन नियंत्रित रहता है। स्किन स्वस्थ होती है। इसके अलावा यह दिल को स्वस्थ रखने के साथ-साथ कैंसर के खतरे को टालता

है। बैक्टीरियल और वायरल की समस्या से भी रक्तदान निजात लाया है। एक बार खून देने से पूरा शरीर डिटाक्सिफाई हो जाता है। जो शरीर के लिए बेहद फायदेमंद रहता है। जागरुकता गोष्ठी को वरिष्ठ चिकित्सक डा. संजय सिंह ने भी संबोधित किया। इस आयोजन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ़ की टीम द्वारा सावित्री नर्सिंग होम एवं पैरामेडिकल कॉलेज के स्टाफ एवं छात्र-छात्राओं को रक्तदान का पूरा प्रोसेस समझाया गया। आयोजन में डॉ. अनूप सिंह, बृजेंद्र सिंह लैब टेक्नीशियन, एचआईवी परामर्श दात्री नीलम शुक्ला, इंदु शुक्ला एचआईवी परामर्श दात्री, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जसरा आदि अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

रिमझिम फुहारों के बीच हुआ प्रतापगढ़ का ऐतिहासिक भरत मिलाप

डीएम-एसपी व जनप्रतिनिधियों ने उतारी राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघन की आरती

सतरंगी रोशनी के बीच चौक घंटाघर पर हुआ कार्यक्रम

भगवान राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघन की आरती उतारते डीएम, एसपी।

भगवान राम से गले मिलते भरत।

झाकियों में अपनी कला का प्रदर्शन करते कलाकार।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ का ऐतिहासिक भरत मिलाप रिमझिम फुहारों के बीच शनिवार की प्रातः दुल्हन की सजे चैक घंटाघर पर सम्पन्न हुआ। राम, लक्ष्मण, भरत व शत्रुघन चारों भाई जब मिले तो हजारों दर्षकों की आंखें नम हो गई। इसके पहले जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल, सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य व अन्य ने चारों भाईयों की आरती उतारी। इस मौके पर राम दल, भरत दल, हनुमान दल और लवकुष दल की लगभग 30 आकर्षक चैकियां रात भर निकलती रही जिसका आनंद चैक घंटाघर के चारों तरफ आई हजारों की भीड़ उठाती रही। पुलिस की चाक चैबंद व्यवस्था रही। बिजली ने भी रात भर साथ दिया। एक क्षण के लिये भी बिजली कटौती नहीं हुई। ऐतिहासिक भरत मिलाप सकुषल सम्पन्न होने से रामलीला समिति व जिला प्रषासन ने राहत की सांस ली।

रात नौ बजे राम रथ की झांकी गोपाल मंदिर से निकालकर भरत मिलाप की शुरूआत समिति के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, अध्यक्ष संजय खंडेलवाल, उपाध्यक्ष रवि अग्रवाल, संयोजक दिनेश सिंह दिन्नू, मंत्री विपिन गुप्ता ने किया। सुबह छह बजे रामदल, भरत दल, लव कुश दल, हनुमान दल के चैक भरत मिलाप स्थल पहुंचने पर श्री राम और भरत का मिलन हुआ। यह क्षण देखने के लिए राम भक्त सुबह तक जमे रहे। भरत मिलाप कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलाधिकारी डॉ नितिन बंसल व पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने भगवान की आरती उतारी।

विशिष्ट अतिथि प्रज्ञा सिंह, जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्रा, विधायक सदर राजेंद्र कुमार मौर्य, पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष ओम प्रकाश त्रिपाठी, समिति के संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, श्याम शंकर सिंह, अध्यक्ष संजय खंडेलवाल, संयोजक दिनेश सिंह दिन्नू, मंत्री विपिन गुप्ता, कोषाध्यक्ष मनीष गुप्ता, उपाध्यक्ष रवि अग्रवाल, धर्मेंद्र चैरसिया आदि ने भगवान की आरती उतारी।

आरती के पश्चात पूरा 12 दिनों का कार्यक्रम सकुशल संपन्न होने पर समिति के पदाधिकारियों ने जिला अधिकारी डॉ नितिन बंसल व पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल, जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्रा, विधायक सदर राजेंद्र मौर्य, सांसद प्रतिनिधि विवेक उपाध्याय, ए0एस0पी0 विद्यासागर मिश्रा, एसडीएम, सीओ सिटी सुबोध गौतम, सी0ओ0 रानीगंज, शहर कोतवाल सत्येंद्र सिंह, एल0आयु0 इंस्पेक्टर ओ0 पी0 एन0 सिंह, ईओ नगरपालिका मुदित सिंह, चैकी इंचार्ज मकन्दूगंज पुष्पराज सिंह, एक्सिएन बिजली, जेडी बिजली आदि अधिकारियों को सम्मानित किया गया।

जब करम अली बैण्डमास्टर ने बैण्ड की धुनों से राम की उतारी आरती

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। ऐतिहासिक भरत मिलाप में साम्प्रदायिक सौहार्द का भी अनोखा उदाहरण उस समय देखने को मिला, जब भगवान राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन चैक घंटाघर पर पहुंचे तो शहर के जाने-माने करम अली बैण्ड मास्टर अपनी बैण्ड की धुनों से भगवान राम की आरती की। बैण्ड की धुनों पर आरती सुनकर श्रोतागण व सभी लोग मंत्रमुग्ध हो गये और कहने लगे कि रामवनगमन मार्ग पर होने वाले इस भरत मिलाप में हिन्दू, मुस्लिम सहित सभी धर्मों के लोग सोल्लासपूर्वक भाग लिये।

रक्तदान जरूरतमंदों का आशीर्वाद हैः डा. आर्य देश दीपक

रक्तदान की खुशी अवर्णनीयः लायन पंकज माहेश्वरी

ब्लड डोनेट का प्रमाण पत्र देते प्राचार्य डा0 आर्य देशदीपक।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। लायंस क्लब प्रतापगढ़ हर्ष, गौरव, शक्ति एवं अवध के संयुक्त तत्वावधान में आज स्थानीय जिला अस्पताल, प्रतापगढ़ के ब्लड बैंक यूनिट को लायंस क्लब के माध्यम से ब्लड प्रदान किया गया। लायंस क्लब के पदाधिकारियों और सदस्यों के सहयोग से आयोजित इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सोनेलाल पटेल स्टेट मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आर्य देश दीपक और प्रयागराज से आए डिस्ट्रिक चेयरपरसन लायन पंकज महेश्वरी की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ.आर्य देश दीपक ने कहा कि अगर आप अपने धन से किसी की सेवा करते हैं तो आपका धन पवित्र हो जाता है, अगर आप अपने खून को दान करते हैं तो आपका शरीर भी पवित्र हो जाता है। मन पवित्र करने के लिए भगवान का नाम जपें और जीवन के अंतिम क्षणों में अपनी आंखों का भी दान करें। हमारे शरीर में कई ऐसी चीजें मौजूद हैं जिन्हें किसी अन्य इंसान के लिए दान किया जा सकता है। इन्हीं में से आपका खून भी है। रक्तदान एक ऐसा दान है जो न सिर्फ आपको जरूरतमंद की दुआएं दिलाता है बल्कि आपके शरीर के लिए भी लाभदायक होता है। प्रयागराज से आये डिस्ट्रिक चेयरपर्सन ब्लड डोनेशन लायन पंकज महेश्वरी ने कहा कि जरूरतमंद को खून देने पर जो खुशी मिलती है, उसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता, हमारा खून किसी की जिंदगी बचाने के काम तो आया। जब रक्त की आवश्यकता होती है, तब उसके महत्व का पता चलता है। खून के अभाव में न जाने कितने लोग दम तोड़ देते हैं।

ब्लड बैंक के प्रभारी डॉक्टर आर डी पांडे ने बताया कि रक्तदान की पूरी प्रक्रिया के दौरान 20-25 मिनट का समय लगता है। उस समय कोई तकलीफ व दर्द भी नहीं होता है, न ही किसी प्रकार के संक्रमण की संभावना रहती है, रक्तदान से किसी प्रकार की कमजोरी नहीं आती है। जिला अस्पताल ब्लड बैंक कोऑर्डिनेटर कुसुम लता गुप्ता ने उपस्थित समूह को बताया कि बार-बार रक्तदान करने से खून के अवयव जल्दी बनते हैं। खून देने के बाद कुछ देर आराम कर, रक्तदाता अपने सामान्य कार्यों को कर सकता है। ब्लड डोनेट करने वालों में लायन अश्वनी सिंह, ला. डॉ. क्षितिज कुमार श्रीवास्तव, लायन श्रद्धा केसरवानी सहित संदीप सिंह, अनिल सिंह, शंकर शरण जयसवाल, विवेक सिंह आदि थे। इस अवसर पर लायन संतोष भगवन, प्रतापगढ़ गौरव के अध्यक्ष शिशिर खरे, शक्ति की अध्यक्ष डा. अवन्तिका पाण्डेय, उपाध्यक्ष अनीता पाण्डेय, सचिव प्रमिला शुक्ला, एरिया जीएसटी कोऑर्डिनेटर लायन पुष्पांजलि शुक्ला, ला. अमितेंद्र श्रीवास्तव, कृष्ण प्रताप सिंह, विनय शर्मा, मूरत लाल यादव, अरविंद कुमार, महेंद्र कुमार, प्रेम प्रकाश मिश्रा आदि उपस्थित थे।

पुण्यतिथि पर याद किये गये कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद्र

सृजना साहित्यिक संस्था ने प्रेमचंद के साहित्य, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डाला प्रकाश

मुंशी प्रेमचंद्र की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते संस्था के पदाधिकारी।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की 86वीं पुण्यतिथि पर सृजना कुटीर अजीतनगर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। सर्वप्रथम मुंशी प्रेमचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित की गई। जीवन के आरंभिक सेवाकाल में प्रतापगढ़ के डिस्ट्रिक्ट स्कूल में शिक्षण कार्य करने वाले महान कथाकार के कृतित्व व व्यक्तित्व पर गहन चर्चा भी हुई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद का साहित्य आम जनमानस का साहित्य है।वे आमजन की व्यथा एवं व्यवस्था के यथार्थ लेखक थे। उन्होंने कहानी लेखन के माध्यम से हिन्दी साहित्याकाश में अमर स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कहानीकार प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रेम ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ अजर-अमर हैं ये युग-युगांतर तक समाज का पथ प्रदर्शन करने का कार्य करेंगी। इस अवसर पर राधेश्याम दीवाना, श्रीनाथ मौर्य सरस, गंगा प्रसाद भावुक, राजकुमार, अमरनाथ गुप्ता बेजोड़, अनिल कुमार निलय आदि साहित्यकारों ने मुंशी प्रेमचंद की जीवनयात्रा पर विमर्श करते हुए अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अनिल कुमार निलय ने किया।

समाधान दिवस में आयी छह शिकायतें, दो का हुआ निस्तारण

लालगंज, प्रतापगढ़। थाना समाधान दिवस मे शनिवार को लालगंज कोतवाली मे कुल छह शिकायतें आयी। इनमे से दो शिकायतों का अफसरों ने निस्तारण कराया। तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने सीओ प्रशिक्षु अमरनाथ गुप्ता के साथ कोतवाली में फरियादियों की समस्याओं की सुनवाई किया। अधिकतर शिकायतें जमीनी विवाद से जुडी रही। तहसीलदार ने मातहतों से मौके पर जाकर पारदर्शितापूर्ण समस्याओं के निस्तारण के निर्देश दिये। वहीं सीओ प्रशिक्षु ने पुलिस से जुडी समस्याओं की सुनवाई की। उन्होनें मातहतों से सामान्य कहासुनी के मामलों को मौके पर ही निस्तारित कराए जाने को कहा। थाना समाधान दिवस का संयोजन कोतवाल कमलेश पाल ने किया। इस मौके पर दरोगा अनीस यादव, दरोगा राजेश कुमार, रानीगंज कैथौला चैकी इंचार्ज निकेत भारद्वाज, लेखपाल संघ अध्यक्ष रामचंद्र त्रिपाठी, राकेश मिश्र आदि मौजूद रहे। वहीं लीलापुर थाने पर समाधान दिवस में कुल सात शिकायतें आयीं जिसमें से मौके पर दो समस्या का निस्तारण हो सका। एसओ विनीत उपाध्याय ने समस्याओं पर सुनवाई किया।

दुष्कर्म पीडिता के परिवार से मिले सपा पार्टी के पूर्व मंत्री, न्याय का दिलाया भरोसा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली अन्तर्गत एक गांव की पीड़िता के साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म की वारदात की जानकारी होने पर समाजवादी पार्टी का एक प्रतिनिधिमण्डल शुक्रवार की देर शाम पीडिता के घर पहुंचा। समाजवादी पार्टी की सरकार में मंत्री रहे राम आसरे विश्वकर्मा की अगुवाई में प्रतिनिधि मण्डल पीडिता के परिजनों से मिला और उन्हें न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया।

पूर्व मंत्री ने पीडिता के साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म की इस घटना पर स्थानीय पुलिस पर भी कार्रवाई में लापरवाही का आरोप लगाया है। लालगंज कोतवाली के एक गांव की युवती के अनुसार बीते एक जुलाई को जान पहचान के तीन लोगों ने झांसा देकर उसका अपहरण कर लिया था। आरोपित गोरखपुर ले जाकर वहां पीडिता के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। इसके बाद पचास हजार रुपए लेकर युवती को एक ट्रक ड्राइवर के सुपुर्द कर दिया था। ट्रक ड्राइवर उसे राजस्थान के जयपुर ले गया और वहां उसने भी अपने साथियों के साथ सामूहिक दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। किसी तरह आरोपितो के चंगुल से निकलकर पीडिता अपने घर पहुंची। मामले मे पुलिस द्वारा कार्रवाई न करने पर कोर्ट के आदेश पर आरोपितो के खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ।

इस मामले की जानकारी पूर्व मंत्री राम आसरे को हुई इस पर उन्होनें पीडिता के घर पहुंचकर न्याय दिलाने का भरोसा जताया। लालगंज स्थित निरीक्षण गृह में पूर्व मंत्री ने मीडिया से कहा कि जब तक पीडिता को न्याय नहीं मिल जाता समाजवादी पार्टी सड़क से लेकर सदन तक आंदोलन करेगी। इस मौके पर शिवबहादुर विश्वकर्मा, राजेन्द्र प्रसाद विश्वकर्मा, सुनील सिंह, रत्ना, शशिकांत विश्वकर्मा, जियालाल, संदीप, शिव प्रकाश विश्वकर्मा, रामपाल, नन्हेंलाल, प्रकाशचंद्र उपाध्याय, राजकुमार आदि मौजूद रहे।

उस अतीके मुजाहिद पे लाखों सलाम...

खानापट्टी में उर्से अतीके पर शायरी व तकरीर में मुल्क की अमनों शांति का दिया गया पैगाम

मदरसा में उर्से अतीकी में शामिल मौलाना व शायर।

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। खानापटटी स्थित मदरसा दारूल उलूम बाबुननबी में शुक्रवार की रात छप्पनवें जश्न ए ईद मिलादुन्नबी उर्से अतीकी पर तकरीर तथा शेरो शायरी में मुल्क मे अमन और शांति के पैगाम का आगाज हुआ। उर्से अतीकी पर देर रात तक हुए तकरीर व शायरी मे मौलाना तथा अन्य लोगों ने अतीक साहब की नेक जिंदगी और उनके वसूलों को समाज व मुल्क की बेहतरी के लिए नजीर बताया।

पीलीभीत से आये हजरत अल्लामा मौलाना शायान रजा खां ने हजरत की मजार पर गुलपोशी करते हुए अल्लाह के बताये नेक रास्तों पर बन्दो को मजबूती से आगे बढते रहने का पैगाम दिया। शायरे इस्लाम मो. अली फैजी तथा कौशाम्बी के दिलशाद साहब ने भी अतीक साहब की जिंदगी पर रोशनी डाली। आकिब रजा इलाहाबादी ने बेहतरीन अंदाज में अतीके मिल्लत की शान में शायरी पढ़ी-पार छतरी से दरिया को जिसने किया, उस अतीके मुजाहिद पे लाखों सलाम। वहीं हजरत मौलाना अकबर एहसानी बांदवी ने भी मुल्क के मौजूदा हालात पर रोशनी डालते हुए मोहब्बत व भाई चारे पर जोर दिया। उर्स मे पहुंचे कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी के प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी ने अतीक साहब की जिंदगी को इलाके की भलाई के लिए यादगार करार दिया। विधायक आराधना मिश्रा मोना की ओर से मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने उर्से अतीकी की रौनक पर प्रकाश डाला। जलसे की सदारत साहबे सज्जादा मौलाना हजरत रहमानी मियां ने किया। उन्होने भी अतीक साहब के बताए रास्ते पर बेसहारा तथा यतीम लोगों की मदद व बच्चों की तालीम पर मजबूती से कायम रहने की दुआ मांगी। संचालन बेलाल रहमानी ने किया। वहीं जलसे में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर भी लगाया गया। नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी की देखरेख में उर्स पर विशेष सफाई अभियान में भी लोगों ने उत्साहजनक शिरकत की। इस मौके पर सभासद मोकीम खान, जर्रार अहमद कौशांबी, दानिश खान, सद्दाम खान, फिरोज खान, वकार अहमद, आबिद रजा, हाफिज जाहिद, सलीम, अम्बार, फजल अहमद उस्मानी आदि रहे।

ईद मिलादुन्नबी पर आज निकलेगा जुलूस

प्रतापगढ़। पैगंबर-ए-आजम हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विलादत (जन्मदिवस) का त्योहार ईद मिलादुन्नबी के रूप में रविवार को अकीदत के साथ मनाया जाएगा। नगर के पल्टन बाजार मदरसा दारुल उलूम गुलशने मदीना के प्रधानाचार्य मौलाना मुख्तार अहमद हबीबी ने बताया कि रविवार को पल्टन बाजार स्थित अंजुमन गुलामाने रसूल गुलशने मदीना व अंजुमन कारिए-मिल्लत पल्टन बाजार द्वारा नाजिमे आला मौलाना मेराज अहमद हबीबी की अगुवाई में दोपहर दो बजे जुलूसे मोहम्मदी का जुलूस शानो शौकत से पल्टन बाजार से निकाला जाएगा।

दिसंबर में फिर से ठप होगा ट्रेनों का संचालन

अंतू से लेकर प्रतापगढ़ के बीच में होनी है रिमॉडलिंग, डबल लाइन बिछाने के लिए रोकनी पड़ेगी गाड़ियां

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन यार्ड की रिमॉडलिंग का कार्य सकुशल संपन्न होने के बाद रेलवे ने अपना सारा ध्यान डबल लाइन बिछाने की तैयारी में लगा दिया है। अधिकारियों की मानें तो अंतू से लेकर प्रतापगढ़ तक लाइन बिछाने का कार्य दिसंबर माह में शुरू होगा। ऐसा हुआ तो एक बार फिर से मेगा ब्लाक होगा। जिसमें इसी तरह से ट्रेनों का संचालन ठप होगा। इससे यात्रियों को ट्रेन की दिक्कत आ सकती है। प्रतापगढ़ में डबल लाइन का कार्य कोरोना की वजह से दो साल पीछे हो गया है। अब रेलवे ने तेजी पकड़ी है। जिसका नतीजा रिमॉडलिंग में देखने को मिला है। बारह दिन का मेगा ब्लाक लेकर ट्रैक और स्लीपरों को बदलने का कार्य युद्ध स्तर पर हुआ। जिसमें दो ट्रेनों को छोड़कर बाकी ट्रेनों का संचालन प्रभावित था। डेली और विकली मिलाकर करीब अप और डाउन ट्रेनों की संख्या चालीस के करीब है। अचानक से इतनी सारी ट्रेनें बंद होने से यात्रियों को दिक्कत जरूर आई। लेकिन ऐसा करने से काफी चीजें बदली भी। जो समय की मांग भी थी। सूत्रों की मानें तो इसके बाद दोहरीकरण का कार्य शुरू होने वाला है। जिसमें अंतू, जगेसरगंज और चिलबिला के साथ प्रतापगढ़ के बीच के कुछ हिस्से की रिमॉडलिंग होगी। जिसमें प्रतापगढ़ की तरह ट्रैक और स्लीपर इत्यादि बदले जाएंगे। इस कार्य में कितने दिन लग जायेगा। कहना कुछ मुश्किल है। लेकिन मेगा ब्लाक तय है। क्योंकि इसके बिना तो काम होना नहीं है। ब्लाक के दौरान ट्रेनों का संचालन बंद करना पड़ेगा।

जल्दबाजी का खामियाजा भुगत रहे लोग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रिमॉडलिंग का कार्य पूरा करने में जल्दबाजी की गई इसको एक दिन और बढ़ा देना था। जो नहीं हुआ। इसका खामियाजा भंगवा रेलवे क्रासिंग से जाने वालों को भुगतना पड़ रहा है। यहां का कार्य पूरा नहीं हो सका है। सूत्रों का कहना है कि दो के बजाय अगर तीन अक्तूबर को ब्लाक खोला जाता तो सुर्खी साइडिंग का कार्य बेहतर तरीके से पूरा हो जाता। दो अक्तूबर को खोल देने से फाटक और पटरी का कार्य समय से पूरा नहीं हो पाया। पता चला है कि शाबाशी लेने के लिए जिम्मेदार अधिकारियों ने कागज पर सब ओके दिखा दिया। हकीकत यह हैं कि अभी भी कार्य चल रहा है।

करंट की चपेट में आने से युवक की मौत

प्रतापगढ़। बाघराय थाना क्षेत्र के चकवड़ श्रृंगार का पुरवा गांव निवासी शैलेन्द्र कुमार यादव (45) जानवरों को चराने के लिए खेत की तरफ गया था। इसी दौरान वह खेत में लगी बाड़ पर हाई टेंशन तार के गिरने से पूरे बाड़ की चपेट में आ गया। बाड़ में करंट प्रवाहित होने से उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। मौके पर पहुंची बाघराय थाने की पुलिस द्वारा शव का पंचनामा कराते हुए पोस्ट मार्टम के लिए भेजा गया।

आश्विन पूर्णिमा पर होगा वषार्वास का समापन आज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समन्वय सेवा संस्थान के तत्वावधान में आषाढ़ पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) से चल रहे वषार्वास अधिष्ठान शिविर का समापन 9 अक्टूबर आश्विन पूर्णिमा पर पवरणा दिवस के रूप में मुख्य आयोजन सुगतानन्द बुद्ध विहार पर सुबह 10 बजे से आयोजित किया जाएगा। इसके संबंध में व्यापक तैयारियां के उद्देश्य से बैठक आयोजित की गयी, जिसमें लखनऊ से चलकर उ0 प्र0 सरकार में दर्जा प्राप्त मंत्री अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान के अध्यक्ष भदन्त शांति मित्र ने भी सहभागिता करते हुए वषार्वास में किये गए प्रयासों की सरहाना करते हुए पवरणा दिवस की सफलता के लिये मंगलकामनाएं दी। उक्त आयोजन के सम्बंध में जानकारी देते हुए राकेश कनोजिया ने बताया कि बोधिगया, नागपुर महाराष्ट्र, कुशीनगर से पधारें पूज्य पावन भिक्खु संघ ने आषाढ़ पूर्णिमा पर वषार्वास का अधिष्ठान ले रखा है, जिसका आध्यात्मिक दृष्टि से बौद्ध दर्शन में अत्यधिक महत्व है।

खबर संक्षेप

निरोधात्मक कार्यवाही में 09 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मझनपुर से एक थाना करारी से एक थाना चरवा से दो थाना सैनी से तीन थाना कड़ाधाम से दो कुल नौ अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय कर दिया है।

चेकिंग के दौरान कार्यवाही

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमें यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 115 वाहनों का ई-चालान किया गया तथा एक वाहन का चालान कर 1000 रुपए सम्मन शुल्क वसूला गया व एक वाहन सीज किया गया

शराब के साथ गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त शिवपति पत्नी बबलू कुमार निवासी भीतापर थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर कब्जे से 14 लीटर अवैध शराब मय बरामद के उपकरण बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

अस्पतालों में एंटी कोबरा इंजेक्शन नहीं हो पाता उपलब्ध

कौशांबी विषैले जंतुओं के काटने के बाद मानव जीवन बचाने के लिए सरकारी अस्पतालों में व्यवस्थाएं उपलब्ध नहीं है और उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य विभाग गंभीर भी नहीं है जिससे सर्प के काटने के बाद आए दिन तड़प तड़प कर गम्भीर मरीजो की जहर से मौत हो जाती है सरकारी अस्पताल पहुंचने के बाद एंटी कोबरा इंजेक्शन गंभीर रोगियों को नहीं मिल पाता है ग्रामीण क्षेत्रों के अस्पतालों में डॉक्टर ही मौजूद नहीं रहते हैं जिससे वहां आपातकालीन चिकित्सा सेवा पूरी तरह से बाधित है तो वहां पर इलाज के नाम पर एंटी कोबरा इंजेक्शन देने की बात तो बेमानी है जिला अस्पताल में भी एंटी कोबरा इंजेक्शन गंभीर रोगियों को नहीं मिल पाता है अनुपलब्धता के चलते गंभीर रोगियों की मौत हो जाती है आए दिन विषैले जंतु सर्प के काटने से लोगों की मौत हो रही है लेकिन उसके बाद भी लंबे चौड़े भाषण देने वाले जनप्रतिनिधि और उनके नुमाइंदे आम जनमानस की गंभीर समस्या पर गंभीर नहीं हैं।

विवाहिता की हत्या कर नदी में फेंक दी लाश

6 दिन बाद ससुर खदेरी नदी में मिली पत्थर से बंधी विवाहिता की नग्न लाश, सूचना देने के बाद हाथ मलती रह गई पुलिस हत्यारो ने कर दी विवाहिता की हत्या

अखंड भारत संदेश

महिला की मौत के बाद रोते बिलखते परिजन

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के धनपरा गांव के ससुर खदेरी नदी में पत्थर से बंधी हुई एक विवाहिता की नग्न लाश मिली है विवाहिता की नदी में नग्न लाश की जानकारी मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामले की सूचना करारी पुलिस को दी गई सूचना पाते ही मौके पर स्थानीय पुलिस पहुंची और ग्रामीणों की मदद से ससुर खदेरी नदी से विवाहिता की लाश को बाहर निकालकर पत्थर से लाश को अलग कर-के लाश को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। विवाहिता की शिनाख्त संजू देवी उर्फ सरोज उम्र लगभग 28 वर्ष पत्नी मुकेश कुमार के रूप में हुई है विवाहिता 6 दिन पहले अपने मायके से निकली थी लेकिन वह गायब हो गयी जिसका सुराग नहीं लग सका था शनिवार को तालाब में विवाहिता की नग्न लाश मिली है शरीर मे केवल ब्लाउज मौजूद था विवाहिता के गायब होने की सूचना देने के बाद भी पुलिस हाथ मलती रह गयी और हत्यारों ने विवाहिता की हत्या कर लाश को नदी में फेंक दिया। इस मामले में एक बार फिर स्थानीय पुलिस की भूमिका सवालों के घेरे में है। जानकारी के मुताबिक करारी थाना क्षेत्र के पवैया गांव निवासी शिव मोहन ने अपनी बेटी संजू देवी उर्फ सरोज की शादी लालता निवासी अराईं के साथ किया था दोनों का दांपत्य जीवन सुखमय चल रहा था आंचल व मनीष काजल 3 बच्चों के जन्म के बाद दांपत्य जीवन में मुकेश कुमार नामक व्यक्ति के आ जाने से दम्पति के जीवन मे खटास आ गया और उसके बाद लालता से विवाहिता का संबंध विच्छेद हो गया विवाहिता ने दूसरे पति के रूप में मुकेश कुमार से शादी कर ली विवाहिता मुकेश के साथ रहने लगी यह बात लालता को खराब लगी और आए दिन दोनों के बीच नोकझोंक होने लगी नवरात्रि के अष्टमी के दिन विवाहिता अपने मायके से कहीं जाने के लिए निकली थी लेकिन वह वापस मायके नहीं पहुंच सकी और रहस्यमय तरीके से विवाहिता गायब हो गई विवाहिता के गायब होने के बाद मामले की सूचना स्थानीय चौकी पुलिस और थाना पुलिस को दी गई लेकिन पुलिस विवाहिता का सुराग नहीं लगा सकी मायके और ससुराल के लोग भी विवाहिता को खोजा रहे थे। शनिवार के दिन धनपरा गांव में ससुर खदेरी नदी में एक नग्न लाश दिखाई पड़ी नग्न लाश में पत्थर बंधे थे। नदी में नग्न लाश की जानकारी मिलते ही मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई मौके पर स्थानीय पुलिस भी पहुंची और ग्रामीणों की मदद से ससुर खदेरी नदी से विवाहिता की लाश को बाहर निकाला लाश में बंधे पत्थर को खोल कर पुलिस ने अलग कराया और विवाहिता के शव की शिनाख्त कराई सूचना पाकर घटनास्थल पर विवाहिता के परिजन भी पहुंच गए हैं विवाहिता की शिनाख्त संजू देवी उर्फ सरोज 28 वर्ष के रूप में हुई है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है विवाहिता की हत्या कर उसके शव को किसने ठिकाने लगाया है यह पुलिस की जांच का विषय है।

तालाब पर कब्जे की शिकायत करने के बाद गरीब पर राजस्व का बढ़ा आतंक

तहसील अधिकारियों ने योगी सरकार की न्याय प्रणाली पर खड़े कर दिए सवाल, प्रधान पति ने सरकारी जमीन पर कब्जा कर कई लोगों को बेचने के बाद खुद भी बनाया सरकारी जमीन पर मकान

कौशांबी। सूबे की योगी सरकार में न्याय की बात करना भी गुनाह हो गया है सरकारी जमीनों पर कब्जा कराने के बाद करोड़ों की संपत्ति एकत्रित करने वाले राजस्व निरीक्षक अब नहीं चाहते कि उनके गुनाहों की शिकायत अधिकारी और शासन तक आम जनता करें यदि किसी ने राजस्व निरीक्षक की शिकायत शासन प्रशासन से की तो उस पर कहर बनकर राजस्व निरीक्षक टूट पड़ते हैं। आला अधिकारी भी राजस्व निरीक्षकों का पक्ष लेने लगते हैं जिससे गरीब कमजोर मजलूम लोगों के साथ राजस्व निरीक्षकों का आतंक अत्याचार बढ़ जाता है इसी तरह का एक मामला सिराथू तहसील क्षेत्र के सेलरहा पश्चिम गांव का सामने आया है जहां तालाब की सरकारी भूमि संख्या 859 और 777 पर ग्राम प्रधान पति ने कब्जा कर मकान बना लिया है इतना ही नहीं गांव की सरकारी आराजी संख्या 758 की जमीन प्रधान पति ने 3 लोगों को बिक्रय कर दिया है और सरकारी जमीन खरीदने वालों ने पक्के मकान का निर्माण करा लिया है इस मामले की शिकायत गांव की महिला सुखरानिया के पति ने डीएम से लेकर मुख्यमंत्री तक की मामले में जांच शुरू हुई लेखपाल को निलंबित कर सरकारी जमीन खाली कराने के बजाय सुखरनिया की निजी भूमि धरी जमीन आराजी संख्या 748 पर बने मकान को अवैध करार देते हुए उसे 80 हजार रुपए जुमार्ने की नोटिस तहसील प्रशासन ने पकड़ा दी है नोटिस पाने के बाद सुखरनिया का पति बेचैन हो उठा है और वह न्याय के लिए अधिकारियों की चौखट पर दौड़ लगा रहा है लेकिन योगी सरकार में उसे न्याय मिलता नहीं दिख रहा है। सेलरहा पश्चिम के राजस्व निरीक्षक का आतंक अत्याचार यहीं नहीं खत्म हुआ है बल्कि सुखरनिया के घर के सामने मेड़बंदी कराकर लेखपाल ने बरसात के पानी को रोक दिया है जिससे उसके घर के सामने 2 फीट गहरा पानी भर गया है जिससे गरीब महिला को दिक्कतें हो रही है लेकिन राजस्व लेखपाल के अत्याचार पर रोक लगाने लेखपाल को दंडित करने और ग्राम सभा की जमीन को कब्जा कर घर बनाने वाले लोगों पर अभी तक कार्यवाही नहीं हुई है बार-बार शिकायत के बाद तहसील के अधिकारी शिकायतकर्ता पर ही कार्यवाही कर न्याय की आवाज को दबाने का प्रयास कर रहे हैं।

टेक्निकल डिग्री नहीं ऑपरेटर के पद पर हो गयी भर्ती !

सपा बसपा सरकार के कार्यकाल में नगर पंचायत चायल कार्यालय में हुए फजीर्वाड़ा की एक और कहानी

कौशाम्बी। फजीर्वाड़ा के मामले में नगर पंचायत चायल हमेशा सुर्खियों में रहा है नगर पंचायत चायल कार्यालय से तीन कैश रसीद बुक गायब किए जाने के डेढ़ दशक बाद भी कैश रसीद बुक न खोजने के मामले में अपनी छीछालेदर करा चुका नगर पंचायत चायल का एक कारनामा इन दिनों फिर सुर्खियों में है नगर पंचायत चायल में पम्प आपरेटर के पद पर जिस कर्मचारी की नियुक्ति अधिकारियों ने की है उस पंप ऑपरेटर के पास आईटीआई या किसी प्रकार की टेक्निकल डिग्री ना होने के बाद भी पंप ऑपरेटर के पद पर दो दशक पूर्व नियुक्ति दे दी गई है अनुभवहीनता के चलते आए दिन नगर पंचायत का पंप खराब हो रहा है और मरम्मत के नाम पर नगर पंचायत के खजाने से बिल वाउचर लगाकर भुगतान कराया जा रहा है। सूत्रों की माने तो दो दशक के बीच पंप मरम्मत के नाम पर 20 लाख रुपए से अधिक के बिल बाउचर लगाकर भुगतान कराए जा चुके हैं लेकिन इतने बड़े पैमाने पर धांधली बाजी के बाद भी नगर पंचायत के पंप ऑपरेटर के कारनामे को अधिकारियों ने संज्ञान लेकर प्रकरण की जांच करा कर धांधले बाजी को रोकने का प्रयास नहीं किया है। जिससे आपरेटर की मर्जी बेखौफ जारी है। सूत्रों की माने तो पंप मरम्मत के बहाने आए दिन फर्जी बिल वाउचर लगाए जा रहे हैं जिन बिल वाउचर में भुगतान किए गए है तमाम ऐसे दुकानदारों के बिल वाउचर भी लगाए गए हैं जिन दुकानदारों के पास जीएसटी का रजिस्ट्रेशन भी नहीं है । सवाल उठता है कि पंप ऑपरेटर के पद पर कम पढ़े लिखे व्यक्ति की नियुक्ति कैसे की गई है तत्कालीन अधिकारियों ने कानून नियम और शासनादेश की धज्जियां क्यो उड़ाई चचाओं पर जाए तो रिश्तेदार होने के नाते एक अधिकारी ने निजी लाभ के चलते कम पढ़े लिखे रिश्तेदार को ऑपरेटर के पद पर नियुक्ति दे दी जो बड़ी जांच का विषय है लोगों ने सूबे की योगी सरकार का ध्यान आकृष्ट कराते हुए पूर्व की सपा बसपा सरकार में फर्जी तरीके से पंप ऑपरेटर की नियुक्ति की जांच कराए जाने और फजीर्वाड़ा करने वाले दोषियों को दंडित किए जाने की मांग की है।

संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष सर्तकता बरती जाय : डीएम

अखंड भारत संदेश

पुलिस अधीक्षक ने कहा कि शान्ति एवं कानून व्यवस्था को बिगाडने का प्रयास करने वालों के विरूद्ध की जायेंगी सख्त कार्यवाही

डीएम एवं एसपी ने महर्षि वाल्मीकि जयन्ती,ईद-ए-मिलाद व बारावफात पर्व को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए अधिकारियों एवं धर्मगुरूओं व सम्भ्रान्त नागरिकों के साथ की बैठक

बैठक में उपस्थित लोगों को संबोधित करते डीएम एसपी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक हेमराज मीणा द्वारा सम्राट उदयन सभागार में महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, ईद-ए-मिलाद एवं बारावफात पर्व को सकुशल सम्पन्न कराने एवं शान्ति व कानुन व्यवस्था बनाये रखने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों व विभिन्न समुदाय के धर्मगुरूओं व सम्भ्रान्त नागरिकों के साथ बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने अब तक थानावार-पीस कमेटी की बैठक, जुलूस मार्ग का निरीक्षण एवं जुलूस निकालने के लिए आयोजकों द्वारा अनुमति लिए जाने आदि की गयी कार्यवाही की जानकारी प्राप्त की गई।

जिलाधिकारी ने सभी उप जिलाधिकारियों से कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि आयोजको द्वारा जुलूस निकालने की अनुमति अवश्य प्राप्त कर लिया जाय। उन्होंने सभी ई0ओ0 एवं जिला पंचायत राज अधिकारी को जुलूस मार्गों का निरीक्षण कर साफ-सफाई की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें। इसके साथ ही उन्होंने सभी ई0ओ0 को प्रकाश की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित कराने के निर्देश दियें। उन्होंने अधिशासी अभियन्ता विद्युत को आवश्कतानुसार विद्युत तारों को ऊँचा कराने के निर्देश दिये, ताकि कोई घटना न होने पाये तथा जे0ई0 की ड्यूटी थानावार लगाकर सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सभी उप जिलाधिकारियों, क्षेत्राधिकारियों एवं थाना प्रभारियों को त्यौहार रजिस्टर का अवलोकन करने एवं अग्निशमन वाहन समुचित स्थान पर खड़ी कराने के निर्देश दिये। उन्होंने सी0एम0ओ0 को चिकित्सकों की ड्यूटी लगाकर सूची उपलब्ध कराने के निर्देश दियें । उन्होंने सभी सम्बन्धित अधिकारियो से कहा कि शासन द्वारा निर्धारित गाइडलाइन के अनुसार सभी गतिविधियॉ सुनिश्चित किया जाय। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि सम्वेदनशील क्षेत्रों पर विशेष सर्तकता बरती जाय, किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना न होने पाये। पुलिस अधीक्षक ने सभी थाना प्रभारियों को जुलूस मार्गों का निरीक्षण कर सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि आयोजकों द्वारा जुलूस निकालने की अनुमति अवश्य लिया जाय। इसके साथ ही उन्होंने सम्वेदनशील क्षेत्रों पर विशेष निगरानी रखने एवं जुलूस की वीडियोग्राफी कराने के निर्देश दियें। पुलिस अधीक्षक ने उपस्थित धर्मगुरूओं व सम्भ्रान्त नागरिकों से कहा कि त्यौहार मनाने का उद्देश्य जीवन में शान्ति लाना होता है। उन्होंने कहा कि त्यौहार को आपसी सौहार्द के साथ मनाया जाय तथा यह सुनिश्चित किया जाय कि किसी भी प्रकार की असामाजिक गतिविधियॉ/विवाद न होने पायें। उन्होंने कहा कि शान्ति एवं कानून व्यवस्था को बिगाडने का प्रयास करने वालो के विरूद्ध सख्त कार्यवाही की जायेंगी। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तत्काल सम्बन्धित उपजिलाधिकारी व क्षेत्राधिकारी या उन्हें अवगत करायें, तत्काल निस्तारण किया जायेंगा । बैठक में उपस्थित धर्मगुरूओं व सम्भ्रान्त नागरिकों ने कहा कि त्यौहार को आपसी सौहार्द के साथ मनाया जायेंगा तथा जनपद में किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं होने दी जायेंगी इस अवसर अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय, सभी उपजिलाधिकारीगण व क्षेत्राधिकारीगण सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण एवं सभ्रान्त नागरिक उपस्थित थे।

एसडीएम के समझाने पर बीएलओ का कार्य करने को तैयार हुई आंगनवाड़ी

अखंड भारत संदेश

आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के साथ बैठक करते एसडीएम व अधिशासी अधिकारी

भरवारी कौशाम्बी। नगर पालिका चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए अधिषासी अधिकारी भरवारी गिरीश चंद्र ने शुक्रवार को नगर पालिका परिषद भरवारी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के 44 सहायक अध्यापकों व 40 आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को बीएलओ की डियूटी के लिए बैठक में बुलाया था बैठक में सम्मिलित होने के बाद आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने निर्वाचन में बीएलओ की ड्यूटी नहीं करने का एलान करते हुए मीटिंग का बहिष्कार कर हंगामा किया था और मुख्य सचिव के एक पत्र का हवाला देते हुए बीएलओ ड्यूटी न करने की बात आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों ने कही थी नगर पालिका परिषद भरवारी में नगर निकाय चुनाव की प्रक्रिया शासन के आदेश पर शुरू हो गई है आंगनवाड़ी की घोषणा से निर्वाचन के कार्यों में व्यवधान दिखाई पड़ रहा था आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के चुनाव में बीएलओ ड्यूटी से इनकार करने के बाद अधिशासी अधिकारी ने मामले की जानकारी उप जिला अधिकारी को दी जिस पर शनिवार को फिर उप जिला अधिकारी विनय कुमार गुप्ता और अधिशाषी अधिकारी गिरीश चंद्र ने अध्यापकों एवम आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों से वार्ता की एसडीएम विनय गुप्ता ने कहा की उन लोगो की वेतन को लेकर कुछ समस्याएं थी जिन्हे कार्यवाई के लिए आगे भेज दिया गया है,जिसके बाद आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों ने बात मान ली है उन्होंने कहा की आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के साथ नगर पालिका के कर्मचारियों द्वारा भी सहयोग दिलाया जायेगा। इस दौरान नायब तहसीलदार दीक्षा पांडेय आंगनवाड़ी कार्यकत्री संघ की कार्यवाहक प्रदेश अध्यक्ष माया सिंह,संजना दीक्षित सहित तमाम आंगनवाड़ी कार्यकत्री मौजूद रही।

पांच बच्चों की अम्मा प्रेमी के साथ फरार

फरार महिला के पति ने पुलिस में दर्ज कराई शिकायत

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के नगर पंचायत चरवा के मजरा बहादुर के पूरा की एक महिला 7 अक्टूबर की दोपहर को अपने प्रेमी के साथ फरार हो गई है फरार हुई महिला 5 बच्चों की अम्मा बताई जाती है छह महीने के एक बच्चे को महिला साथ लेकर गई है और 4 बच्चों को पति के जिम्मे छोड़ दिया है महिला के फरार होने के बाद घर में मौजूद 4 बच्चे माँ के बिना परेशान हो गए है महिला के फरार होने के बाद संभावित स्थानों पर उसके पति ने खोजबीन किया लेकिन महिला का सुराग नहीं लग सका जिस पर पति ने मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दे कर महिला को खोजने की गुहार लगाई है बताया जाता है कि जिस प्रेमी के साथ महिला फरार हुई है वह भी 3 बच्चे का बाप है।

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता सप्ताह 10 से 16 अक्टूबर तक होंगे कई कार्यक्रम

लोगों में मानसिक विकारों के प्रति जागरूकता लाना उद्देश्य : नोडल अधिकारी

कौशाम्बी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने कहा कि तनाव, चिंता किसी भी समस्या का हल नहीं बल्कि कई अन्य समस्याओं का वह जन्मदाता होता है। इससे सिरदर्द, माइग्रेन, उच्च या निम्न रक्तचाप, हृदय से जुड़ी समस्याएं व मोटापा व्यक्ति के स्वभाव को चिड़चिड़ा कर उसके जीवन की खुशियां व चेहरे की मुस्कान चुरा लेता है। शारीरिक व मानसिक तौर पर यह चुनौतियां तनाव से लड़ने की हमारी क्षमता को कमजोर करती हैं। इससे बचने के लिए तनाव पैदा करने वाले अनावश्यक कारणों को जीवन से दूर रखना चाहिए। पूरी दुनिया में इसलिए विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है ताकि लोग अपने मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ रख जीवन को मस्त रख सकें। इसी क्रम में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का शुभारंभ सोमवार को किया जाएगा। शासन के निर्देश पर मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत 10 से से 16 अक्टूबर तक जनपद में मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता सप्ताह मनाया जाना प्रस्तावित है। इसका उद्देश्य लोगों में मानसिक विकारों के प्रति जागरूकता पैदा करना है। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के लिए इस वर्ष की थीम "सभी के लिए मानसिक स्वास्थ्य व कल्याण को वैश्विक प्राथमिकता बनाइ है

आयोजित होंगे विभिन्न कार्यक्रम : नोडल अधिकारी एन.सी.डी सेल अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. स्वामी नाथ ने बताया कि ह्लविश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के दिन से एक सप्ताह तक मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता सप्ताह मनाया जाएगा। इसके अंतर्गत जनपद में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जनसमुदाय में जागरूकता बढ़ाने के लिए जनपद के सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में जागरूकता के लिए स्वास्थ्य शिविर का आयोजन एवं अन्य गतिविधियां की जाएंगी। इसी क्रम में स्कूली बच्चों, महिलाओं, किशोर व बुजुर्गों के लिए अलग-अलग जागरूकता शिविर लगाए जाएंगे। शिविर के माध्यम से मनोरोगियों की पहचान कर उनकी काउंस्लिंग की जाएगी। तनाव के स्तर व बीमारी के अधिक प्रभाव के रोगी को उपचार के लिए चिकित्सालय में भर्ती कराया जाएगा। इसके साथ ही मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन कर गांवों में चौपाल, मानसिक स्वास्थ्य विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, पॉम्पलेट, बैनर, पोस्टर, सामुदायिक बैठक, रेडियो जिंगल्स, वॉल पेंटिंग के माध्यम से गतिविधियां आयोजित कर उसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे व्हॉट्सएप, ट्विटर व फेसबुक पर साझा कर जागरुक6ता कार्यक्रम का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा। सभी गतिविधियां कोविड -19 की गाइडलाइन के मद्देनजर आयोजित की जाएगी।

न्यूज झरोखा

डीएम एसपी ने थाना समाधान दिवस में सुनी समस्याएं

कौशांबी(थाना समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक सिराथू तहसील क्षेत्र के सैनी और मोहब्बत पुर पइंसा थाना पहुंचे जहां उन्होंने शिकायत कताओं की समस्याओं को सुना और समस्याओं का समाधान करने के लिए अधीनस्थों को निर्देशित करते हुए कहा कि शिकायतों का त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए थाना समाधान दिवस के मौके पर उपस्थित अधिकारियों कर्मचारियों को संबोधित करते हुए डीएम एसपी ने कहा कि आम जनमानस की शिकायतों के निस्तारण में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी इस मौके पर राजस्व निरीक्षक क्षेत्र के गणमान्य लोगों के साथ साथ थाना पुलिस मौजूद रही।

थाना समाधान दिवस में 12 शिकायतों में 1 का मौके पर निस्तारण

कोखराज कौशाम्बी। शासन के निर्देश पर शनिवार को थाना समाधान दिवस का आयोजन कोखराज थाने में किया गया थाना समाधान दिवस में सिराथू तहसीलदार व कोखराज प्रभारी तेजपाल सिंह चन्देल ने उपस्थित आम जनमानस के फरियाद को सुना थाना समाधान दिवस के मौके पर 12 फरियादियों ने अपनी पीड़ा दर्ज कराई जिसमें 1 शिकायत का मौके पर निपटारा कर दिया गया अन्य 11 शिकायतों को राजस्व व क्षेत्र के इंचार्ज को जांच कर शिकायतों का निस्तारण कर फरियादियों को न्याय देने के लिए निर्देश दिए गए इस दौरान तहसीलदार ने कहा कि शिकायती पत्रों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण और समय सीमा के भीतर कर अवगत कराएं थाना समाधान दिवस के अवसर पर पुलिस चौकी इंचार्ज सुमित आनंद, भोला यादव, महेंद्र सिंह कानून गो लेखपाल रियाज अहमद अनिल कुमार अग्रहरि, रितेन्द्र सिंह, अमन सिंह, मानसिंह, ज्ञान प्रकाश, लोकनाथ पांडेय, पवनकुमार राय, ज्ञान सिंह पाल, कमल सिंह, दिलीप कुमार व क्षेत्र के तमाम प्रधान और आम जनता मौजूद रही।

स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों ने गांव-गांव किया फागिंग

कौशाम्बी। मच्छरों से निजात दिलाने के लिए स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा गांव-गांव मच्छर मार दवा का छिड़काव किया जा रहा है चायल तहसील क्षेत्र के बरियावां ग्राम पंचायत के फत्ते के पुरवा में गांव में शनिवार को सफाई कर्मचारी द्वारा मच्छर से निजात दिलाने के लिए फागिंग कराई गई है गांव गली में घूम घूम कर सफाई कर्मियों ने मच्छर मार दवा का छिड़काव किया है।

रीडिंग कॉर्नर के गुण सीख रहे हैं विद्यालय के छात्र

कौशाम्बी। सरसावा बीआरसी अंतर्गत उच्च प्राथमिक विद्यालय पचामा में विद्यालय के सहायक अध्यापक धीरेंद्र सिंह विद्यालय आ रहे छात्र छात्राओं को रीडिंग कॉर्नर लाइब्रेरी के गुण सिखा रहे हैं छात्र छात्राओं को मौखिक इतिहास ज्ञानार्जन सामाजिक ज्ञान और लिखना पढ़ना सहायक अध्यापक सिखा रहे हैं जहां रीडिंग कॉर्नर को सीखने के लिए छात्र छात्राओं में भी उत्साह दिख रहा है वही गांव के सहायक अध्यापक की इस कार्यशैली को बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रकाश सिंह ने भी सराहा है।

गणेश पूजा व मुकुट पूजन के बाद अझुवा की रामलीला शुरू

अझुवा नगर में 14 और 15 अक्टूबर को विशाल मेला दशहरा का होगा आयोजन

अखंड भारत संदेश

आरती कर रामलीला मंचन का शुभारंभ करती भाजपा जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी साथ में मौजूद पूर्व चेयरमैन ओमप्रकाश कुशवाहा व अन्य

अझुवा कौशाम्बी। कौशाम्बी में इन दिनों भक्ति की बयार चल रही है नवरात्रि की धूम के बाद नगर वासियो ने रामलीला और अझुवा में लगने वाले दशहरे की विधिवत तैयारी शुरू कर दी है। नगर पंचायत अझुवा कार्यालय के सामने स्थित गांधी चबूतरा मैदान में (रैन बसेरे)बीती देर शाम भारतीय जनता पार्टी की जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने गणेश पुजा ,रामलीला की मुकुट पूजन के साथ वैदिक मंत्रोच्चार के बीच रामलीला का शुभारंभ करवाया।इसके साथ ही 10 दिनों तक चलने वाले रामलीला कार्यक्रम का शुभारंभ हो गया इस दौरान अनीता त्रिपाठी ने रामलीला पुस्तिका का विमोचन किया है आयोजकों ने जिला अध्यक्ष को अंग वस्त्र भेंटकर स्वागत किया है। रामलीला कमेटी के अध्यक्ष ओमप्रकाश कुशवाहा ने बताया कि नगर में 14 और 15 अक्टूबर को विशाल मेले का आयोजन होगा जिसमें विविध प्रकार की सांस्कृतिक झांकियों लोक लुभावने झूलों का प्रदर्शन होगा।इस वर्ष नगर पंचायत अझुवा में दशहरा और रामलीला धूमधाम पूरे लाव लश्कर के साथ मनाया जा रहा है आयोजकों ने दशहरा और रामलीला की तैयारी की कमर कस ली है जिसकी बानगी गणेश पूजन,मुकुट पूजन के समय दिखाई भी दी है भारी बारिश के बीच आयोजकों ने मुकुट पूजन,गणेश पूजा करवा कर इसकी बानगी पेश की है।रामलीला मैदान के आसपास जय श्री राम के घोष से गूंजता रहा है राम जी कला मंच आवास विकास कालोनी फतेहपुर से आये रामलीला कर्मी अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे मुकुट पूजन के अवसर पर रामलीला कमेटी के अध्यक्ष ओमप्रकाश कुशवाहा, फूलचंद्र केसरवानी मिथलेश केसरवानी अनिल कुमार चेयरमैन सौरभ केसरवानी,प्रशांत केसरवानी विपिन मोदनवाल, आशीष मोदनवाल,राजू केसरवानी,विपिन केसरवानी,चन्द्र पाल सिंह,पंडित बीज वाले,संतोष विश्वकर्मा मुन्ना जहाजी,शनि केसरवानी सहित रामलीला कमेटी के पदाधिकारी गणमान्य लोग मौजूद रहे।

चौकी पुलिस की फिर किरकिरी नाक के नीचे हो गई चोरी

अखंड भारत संदेश

थाना और पुलिस चौकी के वसूली का बढ़ता जा रहा है दिनों दिन कारोबार, पुलिस चौकी बेनीराम कटरा के चौकी इंचार्ज और सिपाही पूरे समय वाहनों से अवैध वसूली में मशगूल

कौशाम्बी। अपराध और अपराधी जिस तरह से बेखौफ थाना और पुलिस चौकी के वसूली का कारोबार दिनों दिन बढ़ता जा रहा हैहोकर घटनाओं को अंजाम दे कर पुलिस वर्दी को शर्मसार कर रहे हैं लेकिन उसके बाद भी वर्दी की लाज बचाने को पुलिस कतई तैयार नहीं है घटनाएं हो जाने के बाद उनके खुलासों में पुलिस हाफ रही है लेकिन उसके बाद भी तमाम घटनाओं का खुलासा पुलिस नहीं कर पाती है थाना और चौकी पुलिस के अवैध वसूली की शिकायतें और खबरें प्रकाशित होने के बाद अधिकारी भी अपने मातहत पुलिसकर्मियों के बचाव में बयानबाजी करने लगते हैं पुलिस कर्मियों की वसूली की खबरें प्रकाशित होने के बाद पत्रकार को ही दोषी ठहराया जाने लगता है लेकिन वसूली में लिप्त पुलिसकर्मियों के कारनामों पर रोक लगाए जाने का प्रयास नहीं किया जा रहा है थाना और पुलिस चौकी के वसूली का कारोबार दिनों दिन बढ़ता जा रहा है ताजा मामला सराय अकिल थाना क्षेत्र के पुलिस चौकी बेनी राम कटरा का है मुख्य मार्ग पर पड़ने वाले इस पुलिस चौकी बेनीराम कटरा के चौकी इंचार्ज और सिपाही पूरे समय केवल वाहनों से अवैध वसूली में मशगूल रहते हैं अपराध अपराधियों पर अंकुश लगाने में उन्होंने पूरी तरह से दूरी बना लिया है जिससे अपराधी बेखौफ हैं हद तो तब हो गई जब पुलिस चौकी के सामने मिठाई की दुकान में बीती रात चोरों ने घटना को अंजाम दे दिया है पुलिस चौकी बेनीराम कटरा के सामने स्थित पन्ना लाल स्वर्णकार निवासी बहुगारी ने मिठाई की दुकान खोल रक्खी है शुक्रवार की रात में मिठाई की दुकान में सेंध काटकर चोर नगदी समेत बर्तन कढ़ाई व अन्य सामग्री उठा ले गए हैं लेकिन घटना की जानकारी पुलिस को नहीं लग सकी है जिससे चौकी पुलिस की लापरवाही का अंदाजा लगाया जा सकता है पुलिस वर्दी को शर्मसार करने वाले चौकी पुलिस के कारनामों को क्या आला अधिकारी संज्ञान लेकर दोषी चौकी इंचार्ज पर कार्यवाही करते हुए घटना को अंजाम देने वाले चोरों का सुराग रस्सी लगाएंगे।

संपादकीय

राजस्थान में गहलोत युग के अंत का समय

राजनीति में संख्या बल के अपने मायने हैं। प्रदेश का सीएम वहीं बनेगा जो विधायक दल का नेता होगा यहीं बात राष्ट्रीय स्तर पर पीएम पद के लिए भी लागू होती हैं। 1999 में जब अटलबिहारी वाजपेयी की सरकार महज एक वोट से गिर गयी थी। तब वास्तविक रूप से राजनीति में संख्या बल की महत्ता समझ आई थी। दूसरी राजस्थान में अब समझ आयी जब राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने काँग्रेस हाईकमान की इच्छा के विपरीत अपने समर्थक विधायकों से विधानसभा अध्यक्ष को इस्तीफा दिलाकर संख्या बल की ताकत से कांग्रेस हाईकमान सहित देश को अवगत कराया। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के समर्थक विधायकों की संख्या और विधानसभा अध्यक्ष को सौपें इस्तीफों से सचिन पायलेट का मुख्यमंत्री बनना फिलहाल सम्भव नहीं दिखता हैं। इन परिस्थियों में तात्कालिक तौर पर जरूर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अपनी मंशा में काँमयाब दिखाई दे रहे हो किन्तु यह काँमयाबी लम्बी दूर तक चलने वाली नहीं दिखाई दे रहीं है। अब ऐसा लगने लगा है कि राजस्थान में गहलोत युग का अंत बेहद निकट हैं। गहलोत युग का अंत दिखाई देने के पीछे उनकी बढ़ती उम्र हैं ही, उनके द्वारा हाईकमान की इच्छा के विरुद्ध कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुनाव में शर्तो के साथ शामिल होने का प्रस्ताव ओर मुख्यमंत्री के पद के प्रति मोह का प्रदर्शन करना भी उनके युग के अंत का संकेत नजर आता हैं। किसी नेता की प्रादेशिक स्तर पर पूछपरख का कारण उसकी पार्टी के प्रति निष्ठा और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पार्टी में मजबूत पकड़ को ही माना जाता हैं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के राजस्थान में ताकत का मूलाधार उनका 10 जनपद के समक्ष मजबूत होना था। विधायको के संख्याबल का कमाल भी वह इसी ताकत के बल पर दिखा पाए हैं। अशोक गहलोत की अपनी पार्टी के प्रति निष्ठा और हाईकमान का आशीर्वाद ही उनकी मुख्य ताकत हैं। राजस्थान में खासकर कांग्रेस में तेजी से घटित राजनैतिक घटनाक्रम में अशोक गहलोत अब तक मुख्यमंत्री की कुर्सी पर जरूर काबिज दिखाई दे रहें हैं किन्तु मुख्यमंत्री होने के बावजूद वें अपने राजनैतिक जीवनकाल के सबसे कमजोर दौर से गुजरते भी दिखाई दे रहे हैं। क्या राजस्थान के जादूगर अशोक गहलोत का जादू अब बेअसर दिखाई देने लगा हैं ? या फिर वें पुनः अपनी सियासी चालो से अपने राजनैतिक वजूद को बचाने में काँमयाब हो सकेंगे ? यह सवाल फिलहाल राजनैतिक हलकों की बहस का मुख्य विषय बन गया हैं। दरअसल राजनीति के इस माहिर खिलाड़ी की कमजोर होती राजनीतिक प्रतिष्ठा से जुड़े कयासों के पीछे मुख्यमंत्री पद पर बने रहने का लालच महत्वपूर्ण कारण हैं। मुख्यमंत्री पद का मोह न दबा पाने में गहलोत अपनी अहमियत को गवा बैठे। राजस्थान का सारा नाटक गहलोत के इशारे पर हुआ हैं यह जानते हुए भी कांग्रेस आलाकमान राजस्थान की सरकार चले जाने के भय से चुप जरूर है।

साहित्य राष्ट्र की वैभवता दिखाने का माध्यम

किशन भावनानी

भारत एक धर्मनिरपेक्ष, सबसे बड़ा लोकतंत्र और आदि अनादि काल से ही साहित्य की सबसे पुरानी या प्रारंभिक कृतियां मौखिक रूप से प्रेषित थी।साथियों हम अगर साहित्य, संस्कृति के इतिहास में जाएं तो हमें पता पता चलेगा कि, भारतीय साहित्य की सबसे पुरानी या प्रारंभिक कृतियाँ मौखिक रूप से प्रेषित थीं।संस्कृत साहित्य की शुरूआत होती है 5500 से 5200ईसा पूर्व के बीच संकलित ऋग्वेद से जो की पवित्र भजनों का एक संकलन है। साथियों मेरा मानना है कि भारतीय साहित्य सबसे पुराना है आज हम वैश्विक स्तर पर देख रहे हैं कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्मनिरपेक्षता, साहित्य को पूर्ण विकसित देश भी देखने पर हैरानी महसूस करते हैं ऊपर से हम 135 करोड़ जनसंख्या का एक विशाल संगठन है। एक विशाल जनसंख्यकीय जनशक्ति हैं। 22 करोड़ जनसंख्या के रूप में हमारा यूपी विश्व में पांचवी जनसंख्यकीय के बड़े क्षेत्र में गिना जाता है। याने यूपी जितनी जनसंख्या शक्ति में गिना जाए तो विश्व का पांचवा नंबर देश लगेगा। साथियों बात अगर हम भारत के साहित्य की करें तो भारत में साहित्य का अणखुट खजाना है। हमारे राष्ट्र में वेद कतेब इतने हैं कि जिनकी व्याख्या हम कागज कलम से नहीं कर सकते, इसलिए ही हमारे भारत को साहित्य सृजनकर्ता की भी हम संज्ञा दे सकते हैं। साहित्य और संस्कृति एक राष्ट्र की महानता और वैभवता दिखाने का एक माध्यम भी है जो कि भारत में साहित्य का अणखुट खजाना भरा है। साथियों बात अगर हम भारत में संस्कृति की करें तो, संस्कृत के महाकाव्य रामायण और महाभारत पहली सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में आये। पहली सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व की पहली कुछ सदियों के दौरान शास्त्रीय संस्कृत खूब फली-फूली, तमिल संगम साहित्य और पाली केनोन ने भी इस समय काफी प्रगति की। साथियों बात अगर हम भारत में संस्कृति की करें तो, भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का महान इतिहास, विलक्षण भूगोल और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग की शुरूआत और उसके अस्तगमन के साथ फली-फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल हैं। इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है। पिछली पाँच सहस्त्राब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति-रिवाज, भाषाएँ, प्रथाएँ और परंपराएँ इसके एक-दूसरे से परस्पर संबंधों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती हैं। भारत कई धार्मिक प्रणालियों, जैसे कि सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म, सिंधी धर्म धर्मों का जनक है।

मुफ्त भोजन का अधिकार

डॉ. अजीत रानाडे

यदि वृद्धि धीमी हो जाती है तथा कर संग्रह उम्मीद के मुताबिक नहीं होता है, यदि सब्सिडी व कल्याणकारी खर्च की प्रतिबद्धताएं बढ़ती हैं, तो चक्र कैसे थमेगा? याद रखें कि ब्याज दरें बढ़ रही हैं इसलिए सरकार के लिए उधार लेने की लागत भी बढ़ जाएगी। कर्ज और जीडीपी अनुपात बढ़कर 95 फीसदी हो सकता है। अकेले ब्याज का बोझ 7 लाख करोड़ या उससे भी अधिक हो सकता है। क्या भोजन का अधिकार वैधानिक अधिकार है, मौलिक अधिकार या मानवाधिकार है? भारत ने 1966 में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं जिससे भोजन का अधिकार प्राप्त होता है। इसलिए संप्रभु सीमाओं से परे इस अधिकार में मानव अधिकार होने की सारी बातें हैं। भारत के अपने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने संविधान के अनुच्छेद 21 (गरिमा के साथ जीवन का अधिकार) के साथ अनुच्छेद 39 (ए) और 47 से जोड़ते हुए इसे एक मौलिक अधिकार माना है। बाद में ये दोनों निदेशक सिद्धांतों के उत्तरार्द्ध में शामिल किए गए जिसके अनुसार (अनुच्छेद 39 (ए) राज्य को आजीविका के पर्याप्त साधनों का अधिकार प्रदान करने और (अनुच्छेद 47) जीवन स्तर बढ़ाने का कर्तव्य होने की बात कही गई है। आयोग ने कहा है कि भुखमरी मौलिक अधिकारों से वंचित करने के समान है। यह भी कहा गया है कि भुखमरी के सबूत का मतलब भुखमरी से मौत नहीं है। भुखमरी के संकट को बहुत पहले पहचानना होगा। एनएचआरसी ने सार्वजनिक नीति में आमूलचूल बदलाव तथा सर्वोपरि उद्देश्य के रूप में सभी नागरिकों के लिए पर्याप्त भोजन और पोषण सुनिश्चित करने का आह्वान किया। भूख और विपत्ति की व्यापकता की व्याख्या क्षति के रूप में की जानी चाहिए और इसके लिए आवश्यक है कि राज्य को ऐसी स्थिति के लिए दंडित किया जाए। संक्षेप में कहा जाए तो भले ही इससे राजकोष पर बहुत अधिक खर्च हो, भूख को हटाना सर्वोच्च नीतिगत प्राथमिकता होनी चाहिए। एनएचआरसी का यह दृष्टिकोण सरकार के हालिया फैसले के मद्देनजर महत्वपूर्ण है जिसमें मुफ्त खाद्यान्न कार्यक्रम को और तीन महीने के लिए बढ़ाने का फैसला किया गया है। इसकी अतिरिक्त लागत 44,000 करोड़ रुपये होगी।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) दुनिया में सबसे लंबे समय तक चलने वाली और सबसे बड़ी मुफ्त खाद्य वितरण योजना होगी जो 33 महीने से चल रही है और यदि इसे दिसंबर के बाद भी बढ़ाया जाता है तो यह उससे भी अधिक समय तक चलने वाली योजना होगी। अंतरराष्ट्रीय अनुबंध पर भारत के हस्ताक्षर करने के कारण भोजन के अधिकार को अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त है पर इसका मतलब यह नहीं है कि भोजन मुफ्त दिया जाना चाहिए। अलबत्ता भुखमरी से होने वाली मौतों के कारण प्रकट गंभीर आपदा की स्थिति का मतलब है कि मुफ्त भोजन उपलब्ध कराना एक अनिवार्यता है। भारत में भोजन का अधिकार अभियान की शुरूआत बीस साल पहले सुप्रीम कोर्ट में दायर एक जनहित याचिका के रूप में शुरू हुई थी। यह जनहित याचिका इस तथ्य पर आधारित थी कि जिस समय देश भर में भुखमरी और कुपोषण के सबूत थे उस समय राज्य के अनाज गोदामों में खाद्यान्न का विशाल भंडार था। लगातार चलाए गए इस राष्ट्रीय अभियान का परिणाम यह था कि वर्ष 2013 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) पारित किया गया। इस अधिनियम पर विशेष रूप से सरकारी विशेषज्ञों को ढेर सारी आपत्तियां थीं जो इस योजना से पड़ने वाले भारी आर्थिक बोझ के बारे में चिंतित थे। कैबिनेट स्तर के मंत्रियों ने भी अपनी आपत्तियां जताई थीं। एनएफएसए प्रत्येक परिवार को हर व्यक्ति प्रति माह 3, 2 या 1 रुपये प्रति किलो की दर से 5 किलो चावल, गेहूं या ज्वार/बाजरा का हकदार बनाता है। एक मंत्री ने टिप्पणी की थी कि एक किलो चावल का उत्पादन करने में 20 रुपये खर्च आता है जबकि इस अधिनियम के तहत इसे अधिकार के रूप में प्राप्त करने के लिए सिर्फ 3 रुपये का खर्च आता है तो कोई भी किसान चावल का उत्पादन करने की तकलीफ क्यों उठाएगा? यह उपहास नहीं था लेकिन इस टिप्पणी के माध्यम से योजना की भारी राजकोषीय लागत की ओर इशारा किया गया था। एनएफएसए के दायरे में देश की तीन चौथाई ग्रामीण और आधी शहरी आबादी यानी लगभग 81 करोड़ लोग आते हैं। अंत्योदय अनाज योजना के तहत गरीबों को प्रति परिवार- प्रति माह 35 किलो अनाज दिया जाता है। भारी सब्सिडी के साथ हमेशा इस बात की संभावना होती है कि लाभार्थी इस अनाज को खुले बाजार में बेच सकते हैं। पीएमजीकेएवाई ने खाद्यान्न को पूरी तरह से मुफ्त में वितरण करने तक विस्तार किया। यदि एनएफएसए के तहत खुले बाजार में अनाज बेचे जाने की संभावना थी तो निश्चित रूप से पीएमजीकेएवाई के तहत भी यह संभावना मौजूद है। आखिर इस रिसाव को कैसे रोका जाए? कोविड के प्रसार के कारण अप्रैल 2020 में पीएमजीकेएवाई को शुरू किया गया था। भारत नहीं चाहता था कि आजीविका का संकट पूर्ण खाद्य संकट के रूप में बदल जाए। इस योजना ने देश की जनता की अच्छी सेवा की है और खाद्य मुद्रास्फीति के समय इसने परिवारों को खाद्य मूल्य वृद्धि से बचाया है। एक निश्चित राशि की प्रत्यक्ष नकद सब्सिडी प्राप्तकर्ता को खाद्य मुद्रास्फीति से नहीं बचाती है। लेकिन पीएमजीकेएवाई को छह बार बढ़ाया जा चुका है। हिमाचल प्रदेश और गुजरात में आगामी विधानसभा चुनावों के मद्देनजर इस योजना का नवीनतम विस्तार दिसंबर 2022 तक किया गया है। अब इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि पीएमजीकेएवाई ने मौजूदा 'सत्तारूढ़ दल' को चुनावी लाभ दिया है।

हिमाचल प्रदेश और गुजरात में आगामी विधानसभा चुनावों के मद्देनजर इस योजना का नवीनतम विस्तार दिसंबर 2022 तक किया गया है। अब इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि पीएमजीकेएवाई ने मौजूदा 'सत्तारूढ़ दल' को चुनावी लाभ दिया है। दिलचस्प बात यह है कि वित्त मंत्रालय ने उच्च राजकोषीय बोझ के कारण मौजूदा विस्तार का विरोध किया था। योजना के सिर्फ तीन महीने के विस्तार पर 44 हजार करोड़ रुपए की लागत आएगी

दिलचस्प बात यह है कि वित्त मंत्रालय ने उच्च राजकोषीय बोझ के कारण मौजूदा विस्तार का विरोध किया था। योजना के सिर्फ तीन महीने के विस्तार पर 44 हजार करोड़ रुपए की लागत आएगी। समग्र रूप से देखें तो पीएमजीकेएवाई ने राजकोष पर 4.5 लाख करोड़ रुपये का बोझ डाला है जो भारत के वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद का 2 प्रतिशत है। तेल की बढ़ती कीमतों के कारण इस साल खाद पर दी जाने वाली सब्सिडी बढ़कर 2 लाख करोड़ रुपये होने की संभावना है हालांकि बजट केवल 1 लाख करोड़ रुपये का रखा गया है। कर संग्रह अच्छा होने कारण वित्त सचिव इस साल राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को हासिल करने को लेकर आश्वस्त थे लेकिन उन्होंने यह बयान पीएमजीकेएवाई की अवधि बढ़ाने के कैबिनेट के फैसले से पहले दिया था। इसके अलावा आयकर के तहत भुगतान किए गए उच्च अग्रिम करों का बड़ी मात्रा में रिफंड हो सकता है जिसके बारे में जानकारी हमें अगले साल ही मिल पाएगी। ऐसे में सवाल यह है कि पीएमजीकेएवाई को समायोजित करने के लिए क्या हम कुछ और बलिदान करेंगे? राजकोषीय दबाव के कारण ही सरकार को गैर-कमीशन कर्मियों के लिए अल्पकालिक सैन्य सेवा योजना 'अग्निपथ' शुरू करनी पड़ी। यहां तक कि कुछ हवाई अड्डों पर सीआईएसएफ जवानों की तैनाती की संख्या में भी कटौती की गई है। मुफ्त भोजन योजना को बढ़ाने का मतलब स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचे, सैन्य या पेंशन लाभों में कटौती करना हो सकता है। सरकार इन कठिन राजकोषीय दुविधाओं से बच नहीं सकती। यदि वृद्धि धीमी हो जाती है तथा कर संग्रह उम्मीद के मुताबिक नहीं होता है, यदि सब्सिडी व कल्याणकारी खर्च की प्रतिबद्धताएं बढ़ती हैं, तो चक्र कैसे थमेगा? याद रखें कि ब्याज दरें बढ़ रही हैं इसलिए सरकार के लिए उधार लेने की लागत भी बढ़ जाएगी। कर्ज और जीडीपी अनुपात बढ़कर 95 फीसदी हो सकता है। अकेले ब्याज का बोझ 7 लाख करोड़ या उससे भी अधिक हो सकता है। इसके साथ ही भोजन, स्कूली बच्चों के लिए मुफ्त मध्याह्न भोजन, गर्भवती माताओं के लिए पोषण कार्यक्रम जैसी योजनाओं पर भरपूर सब्सिडी मानव अधिकार तथा मौलिक अधिकार का अंग है। लाभार्थियों का इन पर 'दावा' है।

अब नहीं आती अपनों की चिट्ठी-पत्री

प्रियंका सौरभ

डीजे के कानफोडू शोर में 'चिट्ठी आई है-आई है चिट्ठी आई, बड़े दिनों के बाद..', 'संदेशे आते हैं, हमें तरसाते हैं..', 'खत लिख दे सांवरियां के नाम बाबु..', 'ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर कि तुम नाराज न होना..', 'फूल तुम्हें भेजा है खत में..', 'डाकिया डाक लाया..', 'लिखे जो खत तुझे..', 'चांद नजरों में मुस्कुराया है, मेरे खत..' आदि गीतों की अब प्रासंगिकता धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। संचार क्रांति के इस युग में अब नहीं आती कहीं से भी अपनों की चिट्ठी-पत्री। बदलते दौर में घर से जाते समय अब कोई नहीं कहता कि पहुंतें ही चिट्ठी लिखना। आज की नयी पीढ़ी पत्र लेखन की कला से कोसो दूर है। वास्तव में नयी पीढ़ी यह भी नयी जानती कि डाकिया भी कोई होता है। चैटिंग के इस जमाने में न ही उसे पोस्टकार्ड, अंतदेर्शीय पत्र व लिफाफ की जानकारी है। अब इंटरनेट, फोन व मोबाईल के इस युग में पत्र लेखन की परंपरा धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही। एक वो मनमोहक दौर था जब अपनों के पास चिट्ठियां लिखी जाती थीं और उसके जवाब के लिए बेसब्री से इंतजार किया जाता था। गेट पर डाकिया को देखकर मन खुश हो जाता था। लेकिन आज इंटरनेट, फोन व मोबाइल ने अब लगभग चिट्ठी लिखने की परंपरा को समाप्त कर दिया है। बरसों पूर्व में घर से बाहर जाते समय कहा जाता था कि पहुंचते ही पत्र लिखना। लेकिन अब न ही कोई कहता है और न ही पत्र लिखने की जरूरत है। भागदौड़ भरी जिंदगी में घर से निकलकर मंजिल तक पहुंचने के क्रम में फोन व मोबाइल के माध्यम से कई बार रास्ते के समाचार से लोग अवगत हो जाते हैं। उस दौर में जब शादी के लिए किसी लड़की को देखने जाया जाता था तो उससे चिट्ठी लिखवायी जाती थी। स्कूल में बच्चों को दोस्त, पिता, भाई आदि के पास पत्र लिखने को आता था। साथ ही परीक्षा में डाकिया पर निबंध भी आता था। लेकिन अब यह सब वक्त के साथ-साथ अब धीरे-धीरे समाप्त होता जा है। आज के बच्चे अब पत्र लेखन की परंपरा को नहीं जानते हैं। न ही वह डाकिया, पोस्टकार्ड, अंतदेर्शीय पत्र के बारे में कुछ भी जानते हैं। नए जमाने के प्रेमी-प्रमिका भी अपने दिल की बात चिट्ठी से नहीं इंस्टा से करते और न ही एक-दूसरे तक प्रेम की पाति को पहुंचाने के लिए कागज-कलम माध्यम की जरूरत उन्हें होती है। एक वो दौर था जब पत्रों की अहमियत होती थी। उस समय लोग गर्व से कहते थे-'ये मेरे दादा की चिट्ठी है। मेरे दादा जी ने मेरे पास ये लिखा था। उनकी ऐसी सुन्दर लिखावट थी। ये फलां की चिट्ठी है...।' लेकिन मोबाइल व फोन के इस युग में अब हमारे पास वैसी कोई भी अनमोल चीज नहीं जिसे भविष्य में किसी को कुछ दिखाया जा सके। सालों पहले परदेश में रह रहे पिया की चिट्ठी का इंतजार हो या जम्मू-कश्मीर में सीमा की चौकसी कर रहे पुत्र का पिता को मनीआर्डर सबको चिट्ठी ही दिलासा देती थी, यह सब संचार क्रांति से बीते दिनों की बात हो गयी। आज इंटरनेट के इस युग में पल-पल की खबर मोबाइल के जरिये सैकड़ों मील दूर अपने नाते-रिश्तेदारों के पास पहुंच रही है। इसी तरह इंटरनेट के ग्रामीण क्षेत्र में विस्तार से पलभर के भीतर रुपया उसके चाहने वाले के खाते में पहुंच रहा है। हमारी हिंदी फिल्मों के गाने जैसे फूल तुम्हें भेजा है खत में या मैंने खत महबूब के नाम लिखा.. जैसे गाने लोगों को चिट्ठी की महत्ता समझाते थे। पुराने दिनों में गांवों में 15 दिन से लेकर तीन माह तक चिट्ठी आना सामान्य बात थी। चिट्ठियों के उस जमाने में तार के माध्यम से घर की अच्छी-बुरी खबर को भी घर आने तक हफ्तों लग जाते थे। फिर भी उन दिनों आसल-कुशल जानने के यही उचित माध्यम थे। वो भी एक दौर था जब लोग चिट्ठियों को वर्षों तक सहेज कर रखते थे। पोस्टमैन गांव में आने पर ग्रामीण बिना चिट्ठी के भी अपने स्वजन की कुशल पोस्टमैन से पूछ लेते थे। लेकिन अब मोबाइल की गांव-गांव पहुंच से बच्चे से लेकर बूढ़े तक यहाँ तक की अनपढ़ महिलाएं मिसकॉल के माध्यम से अपने चाहने वाले से बिना पैसा खर्च किए बात कर ले रहे हैं। अब ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित बैंकों के सीबीएस के माध्यम से इंटरनेट से जुड़ने से मिनटों में भेजने वाले का पैसा उसे लेने वाले खाताधारक के पास पहुंच जा रहा है। करवट लेते समय में 'स्कूल-कालेजों में गुरुजनों द्वारा पत्र लिखने के प्रकार भी अब कोर्स से गायब हो गए हैं। इनकी जगह कक्षा-कक्षों में कम्प्यूटरों ने ले ली है। हालांकि इस तकनीक का पूर्ण ज्ञान पुराने जमाने के अध्यापकों को न होने से प्राथमिक विद्यालय से लेकर डिग्री कालेजों तक सरकार द्वारा दिए गए यह कम्प्यूटर केवल कक्षा-कक्ष की शोभा बढ़ा रहे हैं। बहरहाल इस सबके बावजूद इस तकनीक ने ग्रामीण क्षेत्रों में एक क्रांति ला दी है। बड़े बुजुर्गो तक का मानना है कि मोबाइल एवं इंटरनेट से सूचना के क्षेत्र में भारत ने अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। हमारी डाक सेवाओं ने यह बदलने में मदद की है कि कैसे लोग एक दूसरे के साथ कठोर तरीके से संवाद करते हैं। हालाँकि, इंटरनेट के दिनों से पहले, लोगों को मेल के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय नीतियों के कारण एक दूसरे को पत्र और पैकेज प्राप्त करने में वास्तव में कठिन समय लगता था। विश्व डाक दिवस यहां लोगों को यह याद दिलाने के लिए है कि कैसे डाक सेवाएं सभी के लिए आसान हो गईं जब दुनिया भर के देशों ने आखिरकार एक समझौते पर पहुंच गए, जो मेल को संसाधित करने के तरीके के बारे में सब कुछ बदल देगा। विश्व डाक दिवस का उद्देश्य लोगों को इस बारे में शिक्षित करना है कि कैसे दुनिया भर के डाक कार्यालयों ने वैश्विक संचार को आगे बढ़ाने में मदद की है और सभी को एक-दूसरे से और अधिक जोड़ा है। यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन 1874 में शुरू हुआ जब इसे बर्न की संधि द्वारा डाक नीतियों को स्थापित करने में मदद करने के लिए स्थापित किया गया था। बर्न की संधि एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का परिणाम थी, जिसे स्विस सरकार द्वारा आयोजित किया गया था, ताकि अलग-अलग डाक नियमों को एकीकृत किया जा सके ताकि मेल का स्वतंत्र रूप से आदान-प्रदान किया जा सके। जबकि नीतियों को अद्यतन करने में मदद करने के लिए संधि में कई बार संशोधन किया गया है, यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन ने एक सार्वभौमिक फ्लैट दर स्थापित करने में मदद की है जिस पर मेल दुनिया में कहीं भी भेजा जा सकता है। इसने डाक वाहकों को यात्रा करते समय कई देशों में अधिकार बनाए रखने में मदद की, और प्रत्येक देश को अर्जित धन को बनाए रखने की अनुमति दी। विश्व डाक दिवस इस संधि को मनाता है, क्योंकि इसने अब लोगों को मेल भेजने और प्राप्त करने के तरीके को आकार देने में मदद की है। इस दिन को मनाने के लिए लोग समय निकाल कर किसी प्रियजन, परिवार के किसी सदस्य या किसी करीबी को मेल भेजते हैं।

गुणात्मक शिक्षा के बगैर आजादी का अमृत महोत्सव निरर्थक

डॉ. लखन चौधरी

देश में बुनियादि शिक्षा के हालात बेहद चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं। देशभर के प्रायमरी के स्कूली बच्चों पर सरकार सालाना औसतन 15 से 20 हजार रूपए खर्च कर रही है, इसके बावजूद प्राथमिक शिक्षा की स्थिति बेहद खराब है। दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह है कि सरकार को प्राथमिक शिक्षा की कतई चिंता नहीं है। सरकार की चिंताएं केवल कागजी या कहें फाईलों तक सीमित हैं, अन्यथा आजादी के साढ़े सात दशक बाद इस तरह की स्थितियां नहीं रहतीं। देश में इन दिनों शिक्षा के हालात बेहद खराब एवं गुणवत्ताहीन दिखलाई देते हैं। प्राथमिक या बुनियादि शिक्षा के हालात तो और तो चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं। सरकारें शिक्षा को अनुत्पादक खर्च मानती रहीं हैं, लिहाजा सरकारों की प्राथमिकताओं में शिक्षा कतई नहीं होती है। इसका सबसे बड़ा खामियाजा मध्यमवर्ग को भुगतना पड़ता है। नेताओं एवं नौकरशाहों सहित उच्चवर्ग के बच्चे बाहर चले जाते हैं। यही वजह है कि सरकारें शिक्षा के प्रति फोकस नहीं करती हैं। यदि सरकार चाहती है कि देश में आजादी का अमृत महोत्सव फलीभूत हो तो हर हाल में सरकार को शिक्षा पर ध्यान देनी होगी। तभी इस अभियान की सफलता है। इधर सरकार आजादी का अमृत महोत्सव मना रही है। एक ओर आजादी की 75वीं वर्षगांठ को लेकर जोरशोर से जश्न मनाये जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर 2047 में देश की आजादी के 100वीं वर्षगांठ के लिए नये-नये संकल्प तैयार किये जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि 25 साल बाद भारत की तस्वीर अलग होगी। बिल्कुल अलग होनी चाहिए, एक सक्षम, सशक्त और विकसित भारत की तस्वीर 1947 के भारत से यकीनन अलग होनी चाहिए, लेकिन कैसे अलग होगी? यह एक यक्ष प्रश्न है, जिस पर फोकस करने के बजाय गैर जरूरी मसलों पर सरकार फोकस करती नजर आती है। यदि शिक्षा के स्थान पर फोकस करने के बजाय सरकार अन्य मसलों पर फोकस करेगी तो इन लक्ष्यों की पूर्ति असंभव होगी, क्योंकि देश में विकास मानकों की नई रिपोर्ट के मुताबिक देश में भाजपा शासित राज्यों की तुलना में गैर भाजपा शासित राज्यों का प्रदर्शन बेहतर एवं संतोषजनक है। देश के चौदह प्रमुख राज्यों की रैंकिंग में गैर भाजपा शासित तीन राज्य केरल, दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ अग्रणी एवं बेहतर प्रदर्शन के साथ शीर्ष पर हैं, वहीं भाजपा शासित तीन राज्य मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखण्ड बदतर एवं खराब प्रदर्शन करते हुए सबसे निचले पायदान पर फिसड्डी बने हुए हैं। मध्यप्रदेश की स्थिति तो और भी चौंकाने वाली है, क्योंकि वहां भाजपा को सत्ता संभाले लगभग दो दशक होने जा रहे हैं।

देश में बुनियादि शिक्षा के हालात बेहद चिंताजनक एवं चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं। देशभर के प्रायमरी के स्कूली बच्चों पर सरकार सालाना औसतन 15 से 20 हजार रूपए खर्च कर रही है, इसके बावजूद प्राथमिक शिक्षा की स्थिति बेहद खराब है। दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह है कि सरकार को प्राथमिक शिक्षा की कतई चिंता नहीं है। सरकार की चिंताएं केवल कागजी या कहें फाईलों तक सीमित हैं, अन्यथा आजादी के साढ़े सात दशक बाद इस तरह की स्थितियां नहीं रहतीं। देश के प्राइमरी कक्षाओं में पढ़ रहे 12 करोड़ बच्चों की 'फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी' रिपोर्ट में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। मसलन पांचवीं कक्षा के करीब 50 फीसदी बच्चे दूसरी कक्षा की किताबें नहीं पढ़ सकते हैं। पांचवीं कक्षा के 24.5 फीसदी और सातवीं कक्षा के 24 फीसदी बच्चे ही 'घटाना' जानते हैं। दूसरी कक्षा के महज 3.8 फीसदी बच्चों को ही 'भाग' आता है। रिपोर्ट से साफ है कि देश में सरकारी प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था कितनी बदहाल है। साल 2012 में कक्षा दूसरी के 10 फीसदी बच्चे घटाना जानते थे, जो 2018 में मात्र एक फीसदी बढ़कर 11 फीसदी हुई है। 2012 में कक्षा दूसरी के 03 फीसदी बच्चे भाग देना जानते थे, जो 2018 में मात्र एक फीसदी बढ़कर 04 फीसदी हुई है।

मैंने आपका नमक खाया है सरदार!

पुष्परंजन

भारत से 55 देशों को नमक का निर्यात होता है। नमक उत्पादन में अमेरिका और चीन के बाद भारत तीसरे नंबर पर है। लगभग तीन करोड़ टन। कारोबारी इसे कृषि का दजा देते हुए, न्यूनतम समर्थन मूल्य सरकार से चाहते हैं। मगर, नक्कारखाने में तूती की आवाज कोई सुनता है क्या? नौमाह पहले एक घटनाक्रम की याद दिलाता हूं। 20 फ रवरी 2022। यूपी चुनाव चरम पर था। प्रधानमंत्री मोदी हरदोई की जनसभा में भाव विह्वल थे। उन्होंने भीड़ को संबोधित करते हुए कहा- 'कल सोशल मीडिया पर मैंने एक वीडियो देखा। आज मेरा मन करता है कि वो बात मैं बताऊं कि मैंने क्या देखा। बताऊं ना?...बताऊं ना? मैं चाहता हूं कि आपके सामने खासकर के ये बात मेरे दिल को छू गई है, इसलिए मैं बताना चाहता हूं। उस वीडियो में एक बहुत ही बुजुर्ग गरीब महिला को बोलते हुए सुना। उसने कहा, चुनाव फ लाना तारीख को है। हमने नमक खाया है, हम धोखा नहीं देंगे। एक बुजुर्ग अनपढ़ मां से पत्रकार फिर पूछता है, 'किसका नमक खाया है? किसे धोखा नहीं दोगी? उस मां ने कहा, मोदी का नमक खाया है। उस बुजुर्ग महिला के साथ उनके पति भी बैठे थे, उस मां ने जो कहा, उनके पति ने भी समर्थन दिया। हां में हां मिलाई। फिर उस महिला से पूछा गया कि मोदी ने ऐसा क्या किया है? साथियों, उस बुजुर्ग गरीब मां ने जो उत्तर दिया, उसे मैं भूल नहीं सकता। उस मां ने कहा, ' मोदी, राशन दौ हमें।' फिर दोबारा कहा मां ने, 'मोदी राशन दौ हमें।' फिर मां ने बताया कि कितना राशन उनके परिवार को मुफ्त मिल रहा है।

चित्रकूट - खेल संदेश

फटाफट खबरें

मानिकपुर कस्बे में खुलेआम चल रहा सट्टा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मानिकपुर कस्बे में बडे पैमाने पर सट्टा का कारोबार शिवनगर मोहल्ले के एक कमरे में सवेरे से शाम तक चलता है। यहां नालबन्द जुआ भी होता है। आधा दर्जन लडके घूम-घूमकर कस्बे में सट्टा की बुकिंग लेते हैं।

सट्टे के अवैध कारोबार का खुलासा शनिवार को हुआ। बताया गया कि मानिकपुर कस्बे में पिछले तीन महीने से एक कमरे में नालबन्द जुआ चल रहा है। नालबन्द जुआ की फड चलाने वाले का कहना है कि पुलिस से उसकी सेटिंग है। कस्बे की पुलिस सबकुछ जानते हुए भी अन्जान बनी है। कस्बे के शिवनगर मोहल्ले में सट्टा और जुआ का कारोबार पुलिस अधीक्षक की छवि धूमिल कर रहा है।

आखिर मानिकपुर कस्बे में खुलेआम सट्टा और जुआ किसकी सह पर हो रहा है। स्थानीय लोगों ने बताया कि कुछ सटोरियों को पुलिस जेल भेजकर अपनी पीठ थपथपा लेती है। जबकि सट्टा माफिया को पुलिस आज तक नहीं पकड सकी। देखना है सट्टे का कारोबार शिवनगर मोहल्ले में पुलिस बन्द कराती है या नहीं।

पीएम आवास योजना में हुई लूट, किसने दी छूट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मऊ ब्लाक के गोइयांखुर्द गांव की प्रधान जानकारी देवी के पति भीम पाण्डेय प्रधानमंत्री आवास योजना के नाम पर गरीब ग्रामीणों को लूटने का काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास को आई धनराशि प्रधान जानकी देवी व देवरानी उर्मिला के खाते में जा रही है।

शनिवार को मऊ ब्लाक के पतेरी गांव की गरीब आदिवासी मुन्ना पुत्र रामदास, सुनीता देवी पत्नी सोनू, बबलू पुत्र कमलेश, राजनाथ पुत्र मुन्नालाल, ललता देवी पत्नी बुद्धराज व सुमन देवी पत्नी नन्दलाल ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत लाभ मिला था। पूरी धनराशि प्रधान ने अपने खाते में डलवाकर दूसरी किस्त की धनराशि निकालकर हडप ली है। सामग्री देने की बात कहकर थोडी बहुत सामग्री देकर कहता है पूरा पैसा खत्म हो गया।

प्रधान की जालसाजी व धोखाधडी के शिकार गरीब आदिवासी जिम्मेदार अधिकारियों से शिकायत की है। राजनाथ पुत्र मुन्ना ने शपथ पत्र देकर शिकायत की है। आज तक ग्रामीणों की धनराशि नहीं मिली। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि प्रधान से आवास की धनराशि की बात करते हैं तो गाली-गलौज कर कहता है पैसे नहीं दूंगा और न ही सामग्री दूंगा। गरीब आदिवासियों को प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ कब मिलेगा।

एमए कर रहे दिव्यांग छात्र की ट्रेन की चपेट में आने से मृत्यु

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय से एमए कर रहे दिव्यांग छात्र की टेज्न की चपेट में आने से मृत्यु की सूचना पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। मृतक छात्र की शिनाख्त राघवेन्द्र सिंह (28) पुत्र शिवकरन सिंह निवासी किशनपुर जिला फतेहपुर के बतौर हुई है।

ये हादसा शनिवार को सवेरे हुआ। बताया गया कि राघवेन्द्र सिंह अपने दोस्त कमल कुमार निवासी भरतकूप के साथ रहकर पढाई करता था। दोनों एक साथ विद्यालय आते-जाते थे। मृतक के पिता शिवकरन सिंह ने बताया कि शनिवार को सवेरे कमल कुमार अपने खेतों की ओर गया था। उसी के पास राघवेन्द्र सिंह जा रहा था। इसी बीच रेललाइन पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से उसकी मृत्यु हो गई।

राहगीरों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने उसके मोबाइल फोन से शिनाख्त कर परिजनों को सूचना दी। भरतकूप थानाध्यक्ष दुर्गेश गुप्ता ने बताया कि मृतक राघवेन्द्र सिंह गूंगा व बहरा था। इसलिए टेज्न की आवाज नहीं सुन सका। शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा गया है। मृतक के परिजन आ गये हैं।

सीएम के संभावित भ्रमण पर डीएम ने देखी व्यवस्थायें

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नौ अक्टूबर को महर्षि बाल्मीकि जयंती पर बाल्मीक आश्रम लालापुर आने के संभावित दौरे के मद्देनजर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

शनिवार को जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने महर्षि बाल्मीकि आश्रम लालापुर में हेलीपैड, कार्यक्रम स्थल, असावर माता मन्दिर पहुंचकर व्यवस्थायें देखी। संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि सूबे के मुख्यमंत्री का नौ अक्टूबर को संभावित भ्रमण है। इसके मद्देनजर सभी व्यवस्थायें चैकस कराई जायें, ताकि कार्यक्रम सकुशल सम्पन्न हो सके।

उन्होंने सीडीओ अमृतपाल कौर, एडीएम नमामि गंगे सुनन्दू सुधाकरण, डीएफओ आरके दीक्षित, एसडीएम सदर राजबहादुर, एसडीएम मानिकपुर प्रमेश श्रीवास्तव, डीपीआरओ तुलसीराम, एक्सईएन लोनिवि सत्येन्द्रनाथ, बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी एसके शुक्ला, बीडीओ मानिकपुर धनंजय सिंह आदि को निर्देश दिये कि मुख्यमंत्री के संभावित भ्रमण पर सभी व्यवस्थायें दुरुस्त रहनी चाहिए। इस मौके पर बाल्मीकि आश्रम के महंत भरतदास व प्रधान बगरेही

चित्रकूट : यूपी से एमपी क्षेत्र में आगवागम मार्ग प्रभावित

मानिकपुर (चित्रकूट)। कई दिनों से हो रही बारिश से बरदहा नदी में आई बाढ़ से यूपी क्षेत्र से मध्यप्रदेश के डभौरा को जोड़ने वाली सड़क पर बना रपटा बह गया। सड़क भी कई स्थानों पर टूट गई। इससे दोनों सीमाओं से वाहनों का आवागमन बंद हो गया है।

मानिकपुर से डभौरा जाने के लिए लगभग 20 किमी सड़क बनी है। बीच रास्ते में कई स्थानों पर बरदहा नदी का पानी बहता है। इसके लिए सड़क पर रपटे बने हैं। कई दिनों से हो रही जोरदार बारिश से बरदहा नदी का जलस्तर बढ़ गया है। सड़क के ऊपर पानी बह रहा है। इससे यूपी क्षेत्र के मध्यप्रदेश के डभौरा कस्बा को जोड़ने वाली सड़क पर पन्नाघाट का रपटा बह गया।

गिदुरहा गांव के संजय सिंह, राजू कोल ने बताया कि रपटे और सड़क में घटिया सामग्री लगाई गई थी। इससे यूपी और एमपी क्षेत्र से वाहनों का आवागमन बंद हो गया है। बरदहा नदी में उफान से नदी के किनारे बसे गांव रानीपुर, गिदुरहा, चमरौहा, सकरौहा, कल्याणपुर, रामपुर आदि गांव के निवासियों का संपर्क आपस में कटा है।

ठेकेदार पर मनमानी ढंग से मछलियां लेने का आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मऊ तहसील क्षेत्र के बरियारीकला के ग्रामीणों ने एसडीएम मऊ के कार्यालय में प्रदर्शन कर ठेकेदार पर शोषण का आरोप लगाते हुए ज्ञापन सौंपा।

शनिवार को मऊ तहसील के बरियारीकला के ग्रामीण मंगलदास, केदार, भोंदल, रामसुन्दर, चन्द्रिका, गुलाब, सियाराम, मनसुखलाल, सूरज, शोभालाल, शिवमूरत, इन्द्रेश, नितेश, गंगाधर, विजय, रामलोचन, रज्जन, रामसरोज व शिवा आदि ग्रामीण एसडीएम मऊ नवदीप शुक्ला के कार्यालय पहुंचे। यहां ग्रामीणों ने प्रदर्शन कर उन्हें सौंपे पत्र में कहा कि वे लोग यमुना नदी में मछली मारने का काम करते हैं। ठेकेदार मनमानी कीमत पर मछलियां खरीदता है।

ग्रामीणों ने ठेकेदार के शोषण की शिकायत करते हुए एसडीएम से निदान की गुहार लगाई। एसडीएम ने कहा कि मछली इंस्पेक्टर से बात करके समस्या का निदान कराया जायेगा। नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।

शरदोत्सव में आयेंगे नामचीन कलाकार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नौ से 12 अक्टूबर तक दीनदयाल परिसर व सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय में नानाजी देशमुख के जन्मदिन शरदपूर्णिमा पर तीन दिनों तक देश के कलाकार हिस्सा लेंगे।

शनिवार को शरदोत्सव के आयोजक मंडल ने बताया कि सांस्कृतिक संध्या की शुरूवात नौ अक्टूबर को शरद पूर्णिमा के दिन होगी। देश के हर घर में पहचान बना चुकी मैथिली ठाकुर अपनी प्रस्तुति देंगी। लोकप्रिय कवि डॉ कुमार विश्वास 11 अक्टूबर को शरदोत्सव में जलवा बिखेरेंगे। शरद पूर्णिमा के दिन नाना जी के जन्मदिवस पर खीर प्रसाद बांटी जायेगी। आयोजक मंडल ने बताया कि नौ अक्टूबर को मैथिली ठाकुर की प्रस्तुति के बाद मधुबनी भक्ति संध्या एवं डॉ लता सिंह मुंशी भोपाल श्रीरामकथा भरतनाट्यम समूह की प्रस्तुति होगी। दस अक्टूबर को ऋषि विश्वकर्मा अपने साथी सागर के साथ भक्ति संध्या व शिवशक्ति ओडिसी समूह लोकनृत्य पेश करेगा।

अग्निशमन अधिकारी ने स्कूलों में जांचे उपकरण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा के निर्देश पर सुरक्षा के लिहाज से मुख्य अग्निशमन अधिकारी यतीन्द्रनाथ उमराव की टीम ने विभिन्न स्थानों पर निरीक्षण कर अग्निशमन उपकरणों की जांच की। जहां उपकरण सही नहीं मिले, वहां तत्काल अग्निशमन उपकरणों को दुरुस्त कराने के निर्देश दिये।

शनिवार को मुख्य अग्निशमन अधिकारी यतीन्द्रनाथ उमराव की टीम ने कोतवाली कर्वी के चित्रकूट इंटर कालेज, जेएम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जेएम बालिका इंटर कालेज, गंगाप्रसाद जनसेवा इंटर कालेज, छत्रपति साहूजी महिला डिग्री कालेज का निरीक्षण किया। विद्यालयों में लगे अग्निशमन यंत्रों की जांच की। जिन विद्यालयों में उपकरण नहीं लगे थे, उन्हें जल्द लगवाने के निर्देश दिये।

उन्होंने कहा कि आग बुझाने के समय अग्निशमन उपकरण बहुत लाभदायी है। उन्होंने अग्निशमन उपकरणों के प्रयोग की बाबत भी जानकारी दी। टीम में प्रभारी फायर स्टेशन लालजी मिश्रा, लीडिंग फायर मैन प्रमोद कुमार दुबे, फायर मैन जयंत कुमार व श्याम कुमार मिश्रा मौजूद रहे।

टी 20 रैंकिंग में सूर्यकुमार से टक्कर, रिजवान बोले- मैं इसके बारे में नहीं सोचता

कराची। आईसीसी टी20आई रैंकिंग में सूर्यकुमार यादव मौजूदा समय दूसरे स्थान पर हैं। उन्होंने पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम को अभी भी पछाड़ा हुआ है। हालांकि, मोहम्मद रिजवान काफी समय से पहले स्थान पर काबिज हैं। पिछले महीने, रिजवान ने शीर्ष स्थान लेने के लिए अपनी टीम के कप्तान बाबर आजम को पीछे छोड़ दिया, और ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के खिलाफ सूर्यकुमार यादव के प्रदर्शन ने उन्हें शीर्ष स्थान के करीब पहुंचा दिया। लेकिन भारत के स्टार ने ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के खिलाफ घरेलू सीरीज के दौरान स्थिति और रेटिंग के मामले में अंतर को कम कर दिया, और वह अब पाकिस्तान के सलामी बल्लेबाज को पछाड़ने से कुछ ही इंच दूर है। भारतीय मध्यक्रम के बल्लेबाज सूर्यकुमार ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ घरेलू सीरीज के बीच सिर्फ दो दिनों के लिए रिजवान को पछाड़कर नंबर 1 स्थान हासिल कर लिया था।

पाकिस्तान वर्तमान में मेजबान न्यूजीलैंड के खिलाफ एक त्रिकोणीय सीरीज खेल रहा है। पाकिस्तान ने गुरुवार, 7 अक्टूबर को बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज का पहला मैच खेला, जिसमें रिजवान ने 50 गेंदों में 78 रनों की नाबाद पारी के साथ टीम को जीत की ओर अग्रसर किया। मैच के बाद, रिजवान ने सूर्यकुमार के कौशल की प्रशंसा की, लेकिन उन्होंने नंबर-वन बल्लेबाज होने के सवाल पर साफ कहा कि वो इसके बारे में नहीं सोचते हैं।

रिजवान का कहना है कि वह खुद एक सलामी बल्लेबाज हैं और सूर्यकुमार यादव मध्यक्रम के बल्लेबाज हैं, इसलिए आलोचकों को उन्हें अलग तरह से देखना चाहिए। रिजवान ने कहा, 'सूर्यकुमार यादव एक अच्छे खिलाड़ी हैं। मैं उनके खेलने की शैली का लुत्फ उठाता हूं। लेकिन शीर्ष क्रम और मध्यक्रम दो अलग-अलग चीजें हैं, इसलिए हमारे बारे में बात करते समय चीजों को अलग तरह से देखा जाना चाहिए। जब मैं बल्लेबाजी कर रहा होता हूं, तो मैं कभी भी अपने दिमाग में नंबर 1 स्थान पर विचार नहीं करता। मैं टीम की जरूरतों को पूरा करने में योगदान देता हूं। मैं इस पर ज्यादा विचार नहीं करता, लेकिन मैन ऑफ द मैच और नंबर 1 बल्लेबाज जैसी मान्यताएं कभी-कभी नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।'

बता दें कि सूर्यकुमार साउथ अफ्रीका के खिलाफ आखिरी टी20आई मैच में सिर्फ 8 रन ही बना पाए थे, जिस कारण उन्होंने कुछ अंक गंवा दिए। मौजूदा समय दोनों बल्लेबाजों के बीच 16 अंकों का अंतर बना हुआ है। रिजवान के पास अब टी20 वर्ल्ड कप शुरू होने से पहले मौजूदा ट्राई सीरीज में अपनी स्थिति मजबूत करने का मौका है। वहीं सूर्यकुमार टी20 विश्व कप दौरान ही भरपाई कर सकते हैं।

हरभजन ने चुना भुवनेश्वर से बेहतर गेंदबाज- बोले- वो पावरप्ले में 2-3 विकेट ले रहा है

नई दिल्ली। टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया में टीम टी20 वर्ल्ड कप में हिस्सा लेने के लिए पहुंच चुकी है। टीम को पिछले हफ्ते उस समय बड़ा झटका लगा था, जब उनके प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पीठ की चोट के कारण टी20 विश्व कप टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे। अगले कुछ दिनों के भीतर बुमराह की जगह किसी अन्य गेंदबाज को शामिल करने की घोषणा होने की उम्मीद है। हालांकि, भारतीय टीम के लिए एक और बड़ी चिंता है- भुवनेश्वर कुमार की फॉर्म। सीनियर पेसर ने देर से डेथ ओवरों में काफी संघर्ष किया और विकेट लेने में भी असफल दिख रहे हैं।

भारत के पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह ने भुवनेश्वर की फॉर्म पर खुल कर कहा है कि उनकी जगह दीपक चाहर एक बेहतर विकल्प होंगे। चाहर ने हाल के दिनों में अपना बेहतर रिकॉर्ड और गेंद को अप-फ्रंट और दोनों तरह सेस्विंग करने की क्षमता दिखाई। हरभजन ने कहा, दीपक चाहर एकमात्र ऐसे गेंदबाज हैं जो गेंद को आगे और दोनों तरफ से स्विंग करा सकते हैं

और पावरप्ले में 2-3 विकेट हासिल करते दिख रहे हैं। उनका इनस्विंगर उनकी आउटस्विंग की तरह घातक है और स्थिति जैसी भी हो, वो आगे बढ़ सकते हैं। मुझे लगता है, भुवनेश्वर की तुलना में दीपक वर्तमान में बेहतर कुशल गेंदबाज हैं। ऑफ स्पिनर हरभजन ने यह भी कहा कि कैसे भुवनेश्वर ने एशिया कप और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20आई सीरीज के दौरान डेथ ओवरों में काफी रन लुटाए। हरभजन ने अनुभव पर वर्तमान फॉर्म और कौशल को वापस लेने की जरूरत पर जोर दिया। हरभजन ने कहा, भुवनेश्वर के पास बहुत अनुभव है, लेकिन 19वें ओवर में 8-10 रन नुकसान नहीं पहुंचाते हैं, लेकिन जैसे ही आप 15 या इससे अधिक रन लुटा देते हैं तो फिर मैच हाथ से निकल जाता है। इसलिए दीपक मेरी पसंद होंगे।

पूर्व क्रिकेटर ने अर्शदीप सिंह पर भी टिप्पणी की, जिन्होंने डेथ ओवरों में भारत के लिए अच्छा काम किया है। हरभजन ने कहा कि अर्शदीप अभी भी बहुत कच्चे थे और उनसे योजनाओं के अनुसार लगातार प्रदर्शन करने की उम्मीद करना अनुचित होगा। हरभजन ने कहा, ÷देखो, अर्श एक अच्छी प्रतिभा है और भविष्य के लिए एक सही गेंदबाज साबित होने वाला है।

साथ ही अगर आप बाएं हाथ के तेज गेंदबाज हैं, तो आप ऐसे एंगल बनाएंगे जो बल्लेबाजों को परेशान कर सकते हैं। लेकिन उसे ट्रैक से कुछ सहायता की जरूरत है जहां वह इसे पिच कर सकता है और गेंद ट्रैक से थोड़ी दूर होती है। वह अभी भी बहुत कच्चा है और उसे विभिन्न दबाव स्थितियों में बहुत अधिक गेंदबाजी करने की जरूरत है।

सिर्फ यह उम्मीद करना कि वह दबाव में योजनाओं के अनुसार छह गेंदों में से प्रत्येक को खाली निकालने में सफल होगा, एक युवा खिलाड़ी के लिए ऐसा सोचना अनुचित होगा। लेकिन उनके पास स्वभाव और कौशल है, लेकिन उन्हें अपने आसपास एक अनुभवी गेंदबाज की जरूरत होगी।

मेहनत कर रहा हूं, रन भी बन रहे हैं, लेकिन मौका नहीं मिल रहा : पृथ्वी शॉ

मुंबई। भारतीय टीम साउथ-अफ्रीका के खिलाफ 3 मैचों की वनडे सीरिज खेल रही है। भारत के सभी मुख्य खिलाड़ी टी-20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया रवाना हो गए, जिससे भारत बनाम साउथ-अफ्रीका वनडे सीरिज में कई नए और युवा चेहरों को टीम में जगह दी गई, लेकिन इस श्रृंखला में युवा बल्लेबाज पृथ्वी शॉ को जगह नहीं दी गई। टीम में जगह न मिलने पर पृथ्वी शॉ का दुख झलका है और उन्होंने इस पर चुप्पी तोड़ी है। उनका कहना है कि वह लंबे समय से रन बना रहे हैं और कड़ी मेहनत कर रहे हैं, लेकिन फिर भी उनको साउथ-अफ्रीका के खिलाफ मौका नही दिया गया। शॉ ने कहा,'मैं निराश हो गया था। मैं रन बना रहा हूं, बहुत मेहनत कर रहा हूं, लेकिन मौका नहीं मिल रहा है। लेकिन, यह ठीक है। जब उन्हें (राष्ट्रीय चयनकर्ताओं) लगेगा कि मैं तैयार हूं, तो वे जगह देंगे। मुझे जो भी अवसर मिले, चाहे यह भारत 'ए' या अन्य टीमों के लिए है, मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूं और अपने फिटनेस स्तर को बनाए रखूं। साउथ-अफ्रीका के खिलाफ कप्तान शिखर धवन के साथ, शुभमन गिल, संजू सैमसन, श्रेयस अय्यर, ईशान किशन और रजत पाटीदार को टीम के बल्लेबाजों में शामिल किया गया है।

ये रिश्ता क्या कहलाता है फेम

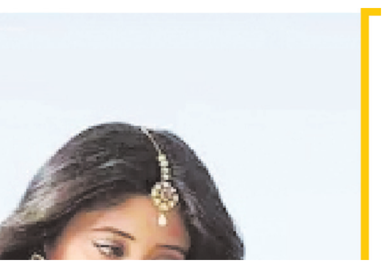

तीन साल बाद पिता नवाज शरीफ से मिलीं मरियम, अदालत से बरी होते ही पहुंचीं लंदन

लंदन। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से उनकी बेटी मरियम नवाज की मुलाकात तीन साल बाद हुई है। बीते दिनों इस्लामाबाद उच्च न्यायालय से भ्रष्टाचार के एक मामले में बरी होते ही मरियम लंदन पहुंचीं, जहां उनके पिता और भाई रह रहे हैं।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ, उनकी बेटी मरियम नवाज और मरियम के पति सफदर पर नवाज के प्रधानमंत्री रहते हुए आर्थिक भ्रष्टाचार के आरोप लगे थे। इन तीनों पर भ्रष्टाचार से अर्जित धन से लंदन के एवेनफील्ड में संपत्ति खरीदने का आरोप लगा था। चार साल पहले छह जुलाई 2018 को एवेनफील्ड भ्रष्टाचार मामले में पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को दस साल कैद की सजा सुनाई गयी थी। इसके अलावा नवाज की बेटी और पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) की उपाध्यक्ष मरियम नवाज को सात साल कैद

की सजा सुनाई गयी थी। नवाज शरीफ के दामाद सफदर को भी एक साल कैद की सजाई सुनाई गई थी। उसके बाद 2019 में उनका पासपोर्ट भी जब्त कर लिया गया था, ताकि वे देश छोड़कर न जा सकें। पिछले दिनों इस्लामाबाद उच्च न्यायालय ने मरियम और उनके पति को इस मामले में दोषमुक्त घोषित कर दिया था, जिस पर उन्हें पासपोर्ट वापस मिल गया।

पासपोर्ट वापस मिलते ही मरियम सबसे पहले लंदन रवाना हुईं। लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर उनके भाई हसन नवाज और उनके पुत्र जुनैद सफदर उन्हें लेने पहुंचे थे। वहां से वे अपने पिता नवाज शरीफ के पास पहुंचीं। उनके पिता नवाज शरीफ नवंबर 2019 में इलाज के लिए लंदन गए थे और तब से वहीं हैं। तीन साल बाद पिता-पुत्री की मुलाकात हुई तो मरियम भी भावुक हो गयीं। पिता से मुलाकात का भावुक चित्र मरियम ने ट्वीट भी किया है। यह चित्र सोशल मीडिया पर वायरल भी हो रहा है। मरियम लंदन में एक माह रुकेंगी और छह नवंबर को पाकिस्तान लौटेंगी।

यह भी चर्चाएं हैं कि मरियम अपने पिता एवं पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को लंदन से वापस पाकिस्तान लेकर आ सकती हैं।

अमेरिका ने भारतीय मूल की शेफाली को नीदरलैंड का राजदूत नियुक्त किया

वॉशिंगटन। भारतीय मूल की अमेरिकी राजनीतिक कार्यकर्ता शेफाली राजदान दुग्गल को नीदरलैंड में अमेरिका का अगला राजदूत नियुक्त किया गया है। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने शेफाली को शपथ दिलाई। शेफाली जम्मू-कश्मीर की रहने वाली हैं।

कमला हैरिस ने ट्वीट किया- मुझे नीदरलैंड्स में अपना अगला राजदूत बनने के लिए शेफाली राजदान दुग्गल को शपथ दिलाने का सौभाग्य मिला। हम इस नई भूमिका में आपके अच्छे होने की कामना करते हैं और आपके नेतृत्व के लिए धन्यवाद करते हैं।

इससे पहले अमेरिकी सीनेट ने नीदरलैंड में अपने अगले राजदूत के पद के लिए ध्वनि मत से 50 साल की दुग्गल के नाम पर मुहर लगाई। दुग्गल के अलावा, वरिष्ठ प्रशासनिक पदों पर दो अन्य लोगों की भी नियुक्ति को मंजूरी दी गई है।

शेफाली मूलरूप से कश्मीर

की रहने वाली हैं। दो साल की उम्र में ही शेफाली और उनका पूरा परिवार पेन्सिलवेनिया के पिट्सबर्ग आकर बस गए थे। इसके बाद जब शेफाली 5 साल की थी तो उनका परिवार ओहायो के सिनसिनाटी में रहने लगा। यहां शेफाली पली-बढ़ीं। शेफाली ने मियामी यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन किया और न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी से मास्टर्स की डिग्री हासिल की।

शेफाली ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन के लिए 2020 में राष्ट्रीय वित्तीय समिति के सदस्य के रूप में कार्य किया। इसके अलावा शेफाली ने बाइडेन के प्रशासन में महिलाओं की राष्ट्रीय सह अध्यक्ष और डेमोक्रेटिक नेशनल कमेटी में उप राष्ट्रीय वित्त अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।

UN में चीन के खिलाफ वोटिंग से गैरहाजिर रहा भारत: उइगर मुस्लिमों के राइट्स पर बहस का प्रस्ताव खारिज

संयुक्त राष्ट्र। यूनाइटेड नेशन ह्यूमन राइट्स काउंसिल ने चीन में उइगर मुस्लिम की स्थिति पर बहस के प्रस्ताव को खारिज कर दिया। प्रस्ताव पर वोटिंग हुई। इसमें काउंसिल के 47 मेंबर्स में से 17 ने प्रस्ताव के पक्ष और 19 ने विपक्ष में वोटिंग की। भारत, ब्राजील, मैक्सिको और यूक्रेन समेत 11 देश वोटिंग में शामिल नहीं हुए।

उइगर री-एजुकेशन कैंप में बंधक

UNHRC यानी संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में उइगर मुस्लिमों की स्थिति पर पर बहस का प्रस्ताव ह्यूमन राइट कोर ग्रुप में शामिल कनाडा, डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे, स्वीडन, ब्रिटेन और अमेरिका लाए थे। तुर्की भी शामिल था। इंटरनेशनल लेवल पर ये कोर ग्रुप लगातार उइगर मुस्लिमों के साथ हो रहे अन्याय और उनकी स्थिति को लेकर लगातार आवाज उठा रहा है। आरोप है कि चीन ने अपने नॉर्थ-वेस्ट इलाके के शिंजियांग प्रांत में रहने वाले 10 लाख से ज्यादा उइगर मुस्लिमों के मानवाधिकारों का हनन कर रहा है। चीन ने इन्हें री-एजुकेशन कैंप में बंधक बना रखा है।

पहली बार वोटिंग

प्रस्ताव खारिज होने के बाद ह्यूमन राइट्स वॉच के डायरेक्टर, सोफी रिचर्डसन ने कहा- ये पहला मौका था, जब ह्र की किसी टॉप बॉडी ने शिंजियांग में ह्यूमन राइट्स पर बात करने के प्रपोजल पर वोटिंग को मंजूरी दी थी। ये कुछ देशों के गैर-जिम्मेदाराना रवैये और उइगरों की स्थिति पर उनकी अनदेखी के चलते पास नहीं हो पाया। हालांकि प्रपोजल के पक्ष में 17 वोट पड़े, जो दर्शाता है कि चीन में उइगरों की स्थिति और उनके अधिकारों को लेकर अब कुछ दूसरे देश भी आवाज उठाने लगे हैं।

अमेरिका में बोले हरदीप पुरी, हमें जहां तेल सस्ता मिलेगा, हम खरीदेंगे

वाशिंगटन। यूक्रेन पर रूस के हमले के बावजूद रूस के साथ व्यापारिक रिश्ते कायम रखने और रूस से तेल खरीदने के मसले पर एक बार फिर भारत ने साफ-साफ जवाब दिया है। अपने अमेरिकी प्रवास के दौरान भारत के पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने पत्रकारों से स्पष्ट कहा कि हमें जहां सस्ता तेल मिलेगा, हम खरीदेंगे। भारतीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने अमेरिका यात्रा के दौरान अमेरिका की ऊर्जा मंत्री जेनिफर ग्रानहोम के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की। इस दौरान भारत और अमेरिका के बीच क्लीन एनर्जी ट्रांजिशन और रेन्यूवेबल एनर्जी को बढ़ावा देने के लिए न्यू एनर्जी टास्क फोर्स बनाने का फैसला हुआ। पुरी और ग्रानहोम ने ऊर्जा क्षेत्र में भारत और अमेरिका के सहयोग में वृद्धि की संभावना जताई। बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में रूस से तेल आयात किये जाने के सवाल पर हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि भारत की जनता को ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करना भारत सरकार का नैतिक कर्तव्य है। ऐसे में भारत को जहां से भी तेल मिलेगा, भारत जरूर खरीदेगा। वैसे भी किसी ने भारत को रूस से तेल खरीदने से मना नहीं किया है। भारत को अपनी उपभोक्ता आबादी की चिंता करनी है, इसलिए भारत कहीं से भी तेल खरीद सकता है। भारत में तेल के दामों में वृद्धि के सवाल पर पुरी ने कहा कि पूरी दुनिया की तुलना में भारत में तेल के दाम अपेक्षाकृत कम बढ़ रहे हैं। जब उत्तरी अमेरिका में तेल की कीमतों में 43 से 46 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है, तो भारत में बमुश्किल दो प्रतिशत मूल्य वृद्धि की अनुमति मिलती है।

बांग्लादेश में हिन्दू मंदिर पर हमला:कट्टरपंथियों ने काली मंदिर में मूर्ति को तोड़ा, आधा किलोमीटर दूर मिले टुकड़े

वाशिंगटन। बांग्लादेश में हिन्दू मंदिरों पर हमला रुक नहीं रहा है। यहां कट्टरपंथियों ने काली मंदिर में घुसकर मूर्तियां तोड़ डालीं। ये मंदिर ब्रिटिश काल का बताया जा रहा है। फिलहाल आरोपियों को पकड़ा नहीं जा सका है। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस जांच में जुट गई है। घटना झेनैदाह जिले के दौतिया गांव में हुई। यहां काली मंदिर में तोड़फोड़ की गई। आरोपियों ने मूर्ति का सिर मंदिर परिसर से लगभग आधा किलोमीटर दूर सड़क पर फेंक दिया और फरार हो गए।

आरोपियों की तलाश में जुटी पुलिस

मंदिर समिति के अध्यक्ष सुकुमार कुंडा ने कहा- इस मंदिर में अंग्रेजों के जमाने से पूजा हो रही है। हमला रात 3 से 4 बजे के बीच हुआ। मंदिर में कोई सुरक्षा व्यवस्था नहीं थी, इसलिए हमलावर बिना किसी डर के मूर्तियों को खंडित कर पाए। मामले की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही है। इस हमले में किसी व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है।

दुर्गा पूजा के समापन के बाद हुई तोड़फोड़

बांग्लादेश पूजा सेलिब्रेशन काउंसल के जेनरल सेकेटरी चंदनाथ पोद्दार ने कहा- यह घटना बांग्लादेश में 10 दिवसीय दुर्गा पूजा खत्म होने के 24 घंटे के अंदर हुई है। ये दुर्भाग्यपूर्ण घटना है, क्योंकि पूरे देश में इन 10 दिन में कोई घटना नहीं हुई। पिछले साल की तुलना में इस साल दुर्गा उत्सव काफी शांति से मनाया गया।

दिल्ली-एनसीआर में सीएनजी की कीमत में 3 रुपये प्रति किलोग्राम की बढ़ोतरी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली और एनसीआर में रहने वाले लोगों को त्योहारी मौसम में इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड (आईजीएल) ने महंगाई का झटका दिया है। आईजीएल ने सीएनजी की कीमत बढ़ा दी है। दिल्ली और एनसीआर में सीएनजी की कीमत में 3 रुपये प्रति किलोग्राम की बढ़ोतरी की गई है। इस बढ़ोतरी के साथ ही दिल्ली में अब सीएनजी की कीमत 78.61 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है। सीएनजी की बढ़ी हुई कीमत शनिवार सुबह 6 बजे से प्रभावी हो गई।

आईजीएल के मुताबिक दिल्ली में सीएनजी की कीमत 75.61 रुपये से बढ़कर 78.61 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है। नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गाजियाबाद में सीएनजी का भाव 78.17 रुपये प्रति किलोग्राम से बढ़कर 81.17 रुपये प्रति किलोग्राम हो गया है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

पाकिस्तान में आतंकवाद के खिलाफ प्रदर्शन: खैबर पख्तूनख्वा के लोग दहशतगर्दों से परेशान; कहा- जरूरत पड़ने पर उठाएंगे हथियार

स्वात। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा राज्य के लोगों ने 7 सितंबर को आतंकवाद के खिलाफ प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने शाहबाज शरीफ सरकार से इलाके में बढ़ती आतंकवादी गतिविधियों को खत्म करने की मांग की। उन्होंने कहा कि अगर कार्रवाई नहीं हुई तो उन्हें हथियार उठाने पर मजबूर होना पड़ेगा। खैबर पख्तूनख्वा राज्य में अगस्त से ही आतंकी गतिविधियां जारी है। यह छठी बार है, जब खैबर पख्तूनख्वा में प्रदर्शन हो रहे हैं। न्यूज वेबसाइट द डॉन के मुताबिक, प्रदर्शन दो लोकल ग्रुप स्वात ओलासी पासून और स्वात कौमी जिरगा ने मिलकर किया। इसमें कई राजनीतिक दलों ने भी हिस्सा लिया, लेकिन इमरान खान की पार्टी PTI इसमें नहीं दिखी।

स्टूडेंट्स को नहीं मिल रही एजुकेशन

प्रदर्शनकारियों ने स्वात शहर के अधिकांश हिस्सों में इंटरनेट बंद होने की जानकारी दी। उनका कहना है कि इससे हजारों स्टूडेंट्स परेशान हो रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, आतंकी गतिविधियों के चलते प्रांत के युवाओं को शिक्षा नहीं मिल रही है।

अगस्त से चल रहे प्रदर्शन

खैबर पख्तूनख्वा में पिछले कुछ महीनों में आतंकी गतिविधियां बढ़ गई हैं। इस कारण अगस्त से वहां के लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। खबर के मुताबिक, खैबर पख्तूनख्वा में सबसे ज्यादा 247 बार सुरक्षाबलों पर हमले हुए हैं। वहीं, एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक, सितंबर में पाकिस्तान में 42 आतंकी हमले हुए हैं।

पाकिस्तान में अलर्ट जारी

तहरीक ए तालिबान के बढ़ते आतंकवादी हमलों के बीच शाहबाज सरकार ने देशभर में अलर्ट जारी किया है। पीएम शाहबाज शरीफ ने अधिकारियों से सतर्क रहने को कहा है। पाकिस्तान संसद की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जनवरी से जून तक देश में 434 आतंकी हमले हो चुके हैं। इसमें 323 सैनिकों ने अपनी जान गवाई है।

अमेरिका ने जारी की एडवाइजरी

इस बीच अमेरिकी सरकार ने पाकिस्तान जाने को लेकर एडवाइजरी जारी की है।

अमेरिका की फॉरेन मिनिस्ट्री ने अपने लोगों से बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा में बढ़ते आतंकवाद और अपहरण के मामलों को देखते हुए इन प्रांतों में नहीं जाने का आग्रह किया है।

मैक्सिको में ढाई लाख करोड़ रु. की सालाना ड्रग्स तस्करी: ड्रग गैंग्स के पास 600 विमान, 75 हजार की प्राइवेट सेना; रोज 120 मर्डर

मैक्सिको। मैक्सिको की राजधानी मैक्सिको सिटी में गैंगवार हुआ। फायरिंग में मेयर मेंडोजा सहित 18 लोगों की मौत से ड्रग कार्टेल का खूनी चेहरा फिर सामने आया है। लगभग 13 करोड़ की आबादी वाला मैक्सिको 40 साल से ड्रग कार्टेल के चंगुल में है। यहां अफीम, हेरोइन और मारिजुआना की तस्करी में लिप्त कार्टेल समानांतर सरकार के रूप में काम करते हैं।

मैक्सिको के लगभग 150 से ज्यादा कार्टेल सालाना लगभग ढाई लाख करोड़ रुपए की ड्रग्स तस्करी अमेरिका को करते हैं। कार्टेल यानी इन संगठित गिरोहों के पास लगभग 75 हजार गुर्गों की प्राइवेट आर्मी है। इन कार्टेल के बीच खूनी संघर्ष होता रहता है।

युवा कार्टेल में शामिल हो रहे

सबसे बड़े सिनालोआ कार्टेल के पास 600 से अधिक विमान और हेलीकॉप्टर हैं। ये संख्या मैक्सिको की सबसे बड़ी एयरलाइंस एयरोमैक्सिको से पांच गुना ज्यादा है। ये सभी विमान कार्टेल ने अमेरिका से खरीदे हैं। मैक्सिको में इजी मनी के फेर में

बड़ी संख्या में युवा इन कार्टेल में शामिल होते हैं।

एके-47, एम-80 जैसी राइफलों का जखीरा, रॉकेट लॉन्चर भी

मैक्सिको गृह मंत्रालय की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार कार्टेल के पास एके-47 और एम-80 जैसे असॉल्ट राइफलों का जखीरा है। हर साल सुरक्षा एजेंसियों के द्वारा ड्रग कार्टेल के कब्जे से 20 हजार से ज्यादा असॉल्ट राइफलों की बरामदगी की जाती है। मैक्सिको सरकार कार्टेल से बरामद किए जाने वाले हथियारों को तबाह करती है। इनका फिर से इस्तेमाल नहीं किया जाता है। कार्टेल इन हथियारों को अमेरिकी माफिया से ड्रग्स की सप्लाई के बदले में करते हैं। 5 साल के दौरान कार्टेल ने रॉकेट लॉन्चर्स भी हासिल कर लिए हैं। इनका इस्तेमाल सरकारी टोही विमानों पर हमले के लिए करते हैं।

खूनी खेल

अब तक मैक्सिको में ड्रग्स कार्टेल के बीच खूनी संघर्ष में 2 लाख मौत हो चुकी हैं। 50 हजार लोग अब तक लापता हैं। 50 हजार मृतकों की पहचान नहीं।

ड्रग कार्टेल मैक्सिको की राजनीतिक पार्टियों को सालाना 25 हजार करोड़ का चंदा देते हैं।

बर्बरता: मर्डर का वीडियो बनाते हैं, शवों को चौराहों पर टांग देते हैं

कार्टेल के हथकंडे खौफनाक होते हैं। तस्करी के साथ-साथ किडनैपिंग कर वसूली का खेल भी चलता है। फिरौती नहीं देने वालों को गोलियों से भून देते हैं। मर्डर का वीडियो बनाकर वायरल करते हैं। जिससे लोगों में दहशत का माहौल बने। कार्टेल विरोधियों के शवों को चौराहों पर टांग देते हैं। हाल ही में राजधानी मैक्सिको सिटी के मुख्य चौराहे पर गैंगवार के बाद 11 शव टंगे पाए गए थे।

बुलेट प्रूफ टॉर्चर रूम : कार्टेल किडनैप किए लोगों और प्रतिद्वंद्वी कार्टेल के गुर्गों को टॉर्चर रूम यानी गेटो में रखते हैं। इन गेटो के खिड़की-दरवाजों को बुलेट प्रूफ लेयरिंग की जाती है।

यूक्रेन के खार्किव में रूस ने दागी मिसाइल

कीव (यूक्रेन)। रूस की फौज ने शनिवार सुबह यूक्रेन के पूर्वी शहर खार्किव को निशाना बनाया। सिलसिलेवार मिसाइल हमले में आसमान में तेज रोशनी के साथ काले धुएं का गुबार छा गया। यह जानकारी खार्किव के मेयर इहोर तेरखोव ने टेलीग्राम पर दी है। खार्किव के मेयर इहोर तेरखोव के मुताबिक रूसी मिसाइलों से किए गए धमाकों से एक चिकित्सा संस्थान और एक गैरआवासीय इमारत में आग लग गई है। इस बीच दक्षिण शहर जापोरिज्जिया में अपार्टमेंट पर पहले हुए मिसाइल हमलों से मरने वालों की संख्या बढ़कर 14 हो गई है।

रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने पिछले सप्ताह ही यूक्रेन के चार क्षेत्रों को रूसी क्षेत्र के रूप में मिलाने का दावा किया है। इसमें यूक्रेन का जापोरिज्जिया क्षेत्र भी शामिल है। यहां यूरोप का सबसे बड़ा परमाणु ऊर्जा संयंत्र है। इसके रिएक्टर पिछले महीने बंद कर दिए गए थे। रूस के कब्जे वाले जापोरिज्जिया परमाणु ऊर्जा संयंत्र के पास लड़ाई ने संयुक्त राष्ट्र के परमाणु ऊर्जा प्रहरी को चिंतित कर दिया है। संयुक्त राष्ट्र ने बताया कि उसने संयंत्र सुरक्षा उपायों की निगरानी करने वाले अपने निरीक्षकों की संख्या को दोगुना करके चार कर दिया है।

अमेरिका ने अपने नागरिकों को भारत यात्रा पर जारी की चेतावनी, आतंकी हमले का जताया डर

वॉशिंगटन। अमेरिका ने भारत यात्रा करने वाले अमेरिकी नागरिकों के लिए चेतावनी जारी करते हुए अधिक सावधानी बरतने को कहा है। अमेरिका ने यह चेतावनी अपने नागरिकों को भारत में अपराध व आतंकवाद के मद्देनजर अधिक सावधानी बरतने को कहा है।

बाइडन प्रशासन ने अमेरिकी नागरिकों से भारत के केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर की यात्रा नहीं करने की सलाह दी है। अमेरिकी विदेश विभाग ने जारी नए यात्रा परामर्श में भारत यात्रा परामर्श स्तर को घटाकर दो कर दिया है। यात्रा परामर्श पैमाने में एक से चार तक स्तर होते हैं। चार सबसे ऊंचा स्तर होता है। अमेरिकी

विदेश विभाग ने एक दिन पहले एक अलग परामर्श जारी कर पाकिस्तान को तीसरे स्तर पर रखा था और अपने नागरिकों से आतंकवाद व सांप्रदायिक हिंसा के कारण इसके अशांत प्रांतों की यात्रा करने के बारे में पुनर्विचार करने के लिए कहा था।

भारत के संबंध में अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा कि वहां अपराध और आतंकवाद को देखते हुए ज्यादा सावधानी बरतें। परामर्श में कहा गया है कि आतंकवाद और नागरिक अशांति के कारण (पूर्वी लद्दाख क्षेत्र और इसकी राजधानी लेह को छोड़कर) केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर की यात्रा न करें। बलात्कार भारत में सबसे तेजी से बढ़ते अपराधों में से एक बताया गया है। पर्यटन स्थलों और अन्य स्थानों पर हिंसक अपराध, जैसे यौन हमले के मामले सामने आए हैं। परामर्श में कहा गया है कि आतंकवादी बिना किसी चेतावनी के हमला कर सकते हैं, पर्यटन स्थलों, परिवहन केंद्रों, बाजारों/शॉपिंग मॉल और सरकारी केंद्रों को निशाना बना सकते हैं।

पाकिस्तानी जेल में बंद आतंकियों की रिहाई के लिए हाई-वे जाम कर मंत्री और विदेशियों का अपहरण

इस्लामाबाद। पूरी दुनिया में आतंकियों की मदद के लिए कुख्यात पाकिस्तान को अब उन्हीं आतंकियों के कारण व्यवस्था संबंधी संकटों का सामना करना पड़ रहा है। पाकिस्तानी जेल में बंद अपने साथियों की रिहाई के लिए आतंकियों ने हाई-वे जाम कर गिलगित-बाल्टिस्तान के वरिष्ठ मंत्री अबैदुल्ला बेग और कुछ विदेशी पर्यटकों का अपहरण कर लिया है। जानकारी के मुताबिक पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत को गिलगित-बाल्टिस्तान से जोड़ने वाले हाई-वे को आतंकियों ने जाम कर दिया है। ये लोग जेल में बंद अपने साथियों की रिहाई की मांग कर रहे हैं। जाम में गिलगित-बाल्टिस्तान के वरिष्ठ मंत्री सेवानिवृत्त कर्नल अबैदुल्ला बेग सहित भारी संख्या में पर्यटक भी फंस गए। पहले इस मसले पर अबैदुल्ला बेग का एक ऑडियो भी वायरल हुआ है। ऑडियो में बेग को यह कहते हुए सुना जा रहा है कि वह इस्लामाबाद से गिलगित जा रहे थे। आतंकवादियों ने अपने सहयोगियों की जेल से रिहाई की मांग को लेकर हाई-वे को जाम कर दिया। बाद में आतंकवादियों द्वारा अबैदुल्ला बेग एवं कुछ विदेशी पर्यटकों का अपहरण किये जाने की बात सामने आई।